# अपरिणीता





लेखक
राजेश्वर झा
बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना–८०००० १

# अपरिणीता




लेखक
राजेश्वर झा
बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना

प्रकाशक
मैथिली साहित्य संस्थान
पटना–८००००१

३ नवम्बर, १९७६

मुद्रक :
कामेश्वर प्रसाद
कालिका प्रेस,
आर्यकुमार रोड, पटना–४

मूल्य : तीन टाका मात्र

प्रकाशक :
मैथिली साहित्य संस्थान,
द्वारा–बिहार रिसर्च सोसाइटी,
पटना–८००००१

# प्राक्कथन

अपरिणीताक मुख्य नायिका अहिल्या ने तँ चक्षु, रसना, घ्राण, त्वचा एवं स्रोत सँ युक्त नारी छल आ ने गौतम स्त्री अहिल्यहि। ओ रभसल बुद्धि और उच्छृंखल मनोवृत्तिक उमतल उपाति छल जे अपन उधिआएल यौवन और उपाम जीवन केँ उलार, उच्छृंखल एवं उटंग बनाए दाम्पत्य केँ खुरेठि अन्त मे जीवन केँ सेहो गमौलक। ओकरा ने तँ ऐतिहासिक तथ्यक आधार छैक आने वास्तविकते सँ कोनहु टा सम्बन्ध। ओकर सृजनक आधार केवल हमर कल्पना थिक जकरा नाम-धाम सँ कोनो टा सरोकार नहि छैक।

परिवर्त्तने तँ सत्य थिक आ सत्ये सँ तँ पृथ्वी थीर तथा सूर्य आ चान प्रतिदिन उगैत आ डूबैत अछि जे संसार मे प्रतिक्षण परिवर्त्तन अनैछ तथा प्रकृति केँ गतिशील बनबैत अछि जकरा प्रगति सँ सम्बन्ध तँ पाओल जाइछ किन्तु समाजक परम्परा सँ अबैत नियम, विधि आ विवेक केँ उल्लंघन कए स्वच्छन्द जीवन-यापनक प्रवृत्ति केँ प्रगतिशीलताक संज्ञा देब समीचीन नहि भए एकर सम्बन्ध विशुद्ध अनाचारिता सँ अछि जकरा दानवी किल्वीष कहल जाइछ।

मनक राग और विराग निजर्मक द्रोही थिक जे क्रमशः चेतना केँ अनिष्ट दिशि प्रवृत्त करैछ तथा अभीष्ट सुखक अभिप्रेत दिशा मे भावनाकेँ प्रसारित हेबा मे प्रेरित करैत अछि। ई दुहु विषम तथा शान्ति, सुख और समताक बाधक थिक। एहि दुहु सँ युक्त आत्मा लोभ, मोह और ममताक वशीभूत भए विधि, नियम और निषेध सँ पृथक भए यम, नियम और संयम केँ त्यागि उच्छृंखलताक दिशि अग्रसर होइछ जकरा किन्नहु प्रगतिक संज्ञा नहि देल जाए सकैछ। प्रचलित परम्पराक बिरोधक प्रवृत्ति यद्यपि प्रगतिशीलताक प्रतीक थिक किन्तु ओ नैतिकता और नीतिपूर्णताक जखन उल्लंघन करैछ तँ ओ प्रगतिशीलता नहि भए अनाचारिता भए जाइछ।

प्राय: देखल जाइछ जे लोक ईश्वर कें तकबा मे बौआइत फिरैत तँ अछि किन्तु ओ अदृश्यक कोनो व्योम पर साकार भेल बैसल ओकरा नहि प्रलक्षित होइछ। ओ तँ एहि प्रकृतिक विभिन्न रूप मे रमल अछि। ओ कतहु पंक मे तँ कतहु पंकज मे, कतहु फूल मे तँ कतहु फल मे, कतहु जल मे तँ कतहु थल मे आ कतहु खड्र मे तँ कतहु खाँम्ह मे श्वेत और श्यामक रूप मे एकहि सत्ताक दुई भेद—स्त्री और पुरुषक रूप मे दृष्टिगोचर होइछ। वस्तुत: स्त्री आ पुरुष ब्रह्मक विराट रूपक साकार प्रतीक थिक जे कर्मक माध्यम सँ जगतक सृजन करैत अछि। ई दुहु जीवन रथक दुई गोट पहिया थिक जकरा पर जीवन निर्भर रहैछ।

सुख-दुखक समिश्रणे तँ जीवन थिक। जतए रस रहैछ, जल रहैछ ओतहि तँ खाधियो रहैत अछि। जतए सुधा रहैछ ओतहि तँ गरलो रहैछ। सुख-दुख तँ क्रमश: कालचक्र सन परिक्रमा लगबैत रहैछ जकर निर्माता स्वत: मनुष्यक कर्म थिक। ओ जाहि वृक्ष कें रोपैत अछि ओकरा ओहि वृक्षक फल प्राप्त होइत छैक। अत: जे सुखक आमंत्रण नहि कए दुखागम पर दृष्टिपात नहि करैछ ओकरहि तँ निष्काम आनन्द प्राप्त होइछ तथा जखन इन्द्रिय और मन अनासक्त भए शान्त स्थिति मे पहुँचैत अछि तखनहि तँ सूर्य-किरण सन निष्कलुष मोदक किरण अन्त:करण मे उतरैत अछि। अतएव कर्मशील पुरुष जे कर्मक फल कें त्यागि बुद्धि और विवेक सँ युक्त भए निष्काम कर्म कें करैत अछि ओएह तँ निरापद मोक्ष कें प्राप्त करैत अछि।

प्रकृतिक कण-कण मे परमेश्वरक सत्ता समाएल रहैछ जे पर्वतक शिखरक मौन मे, झरनाक गर्जन मे, गर्तक तम मे तथा नभोमण्डलक ज्योति मे प्रतिभासित होइछ-तथा ब्रह्माण्डक समस्त जीव, नदी-नाला, फूल, वृक्ष आदि सभ तँ परमेश्वरेक साकार रूप थिक। तदर्थ, प्रकृति और पुरुष परस्पर भिन्न नहि भए एकहि सत्ताक दुइ रूप थिक जे नर और नारीक रूप मे अपन कर्त्तव्य और आचरण सँ प्रभुख सत्ताक उद्‌बोधन करबाक निमित्त धरातल पर अबैत अछि तथा अपन सुकर्म और कुकर्मक द्वारा सुख-दुख कें अपन जीवनहि मे प्राप्त कए पुन: ओहि सत्ता मे लीन भए जाइत अछि।

अपरिणीताक नायिका अहिल्याक जीवन, यौवन और आचरण उपर्युक्त तथ्यहि पर निर्भर छल जे सुखक दिशि तँ दौड़ल किन्तु ओ जहिना दौड़ैत छल सुख तहिना ओकरा पाछाँ छोड़ि पड़ाइत छलैक। ओकरा यौवन, रूप आ स्वच्छन्द विचार छलैक जकरा सोपान बनाए ओ सुखक स्वर्ग पर चढ़ए तँ लागल किन्तु ओहि मे सँ सभ वस्तु तँ क्षणभंगूरे छल जे ओकर क्षणभंगुर जीवनक संगहि अन्त भेल।

रामानन्द ओहि पुरुषक प्रतीक थिक जकर धैर्य, गांभीर्य और व्यक्तित्व तँ पर्वत सन थीर रहैछ किन्तु पुरुषत्व प्रकृतिक सानिध्य केँ पाबि मोम सन पिघलि जाइछ। ओ अहिल्याक तिरस्कार एवं ग्लानि केँ सहि, आचरणक दोष केँ बिसरि नारित्व केँ सर्वोपरि बुझि एवं ओकर महत्व केँ अक्षुण्ण रखबाक निमित्त ओ ओकरा पर विश्वास तँ कयलक किन्तु प्रकृतिक उन्मुक्त सौंदर्यमे सौरभ की सीमित रहलैक अछि ?

मेदिनीक आचरण तँ ओहि भ्रमर सन छल जकरा रूपक लिप्सा रहैछ तथा कली-कलीक रसपानक निमित्त सतत् ओ उन्मत्त रहैछ। ओकरा कली सँ सम्बन्ध नहि रहि ओकर सुवास सँ सम्बन्ध रहैछ। रूप और यौवन सँ हीन अहिल्याक वात्सल्यक कोना ओकर तृषा केँ बुझबैत ? ओकर प्रेम तँ स्वार्थक निमित्त छल जकरा मे वासनाक गंध छलैक।

फेकनीक नारी हृदय मे दया और करुणाक सम्मिश्रण सन्निहित तँ छल किन्तु ओ पतिक प्रेयसी छल तेँ पतिक प्रत्येक काज नीक आ बेजाए सभहक ओकरा पर उत्तरदायित्व छलैक आ ओ अपना केँ पतिक समस्त प्रेमक अधिकारिणी बुझैत छल। ओ मैथिल रमणीक सरलता, शिष्टाचार आ पतिपरायणताक प्रतीक छल।

नरेश एवं ओकर स्त्री मानवक सर्वश्रेष्ठ रत्नक प्रतीक थिक जकरा अंतः-करण मे मैथिलत्वक भावना, उदार विचार आ पावन-प्रेमक गंगा सतत् लहराइत रहैछ। परदुखकातरताक अतिरिक्त ओकरा लोकनिक अन्तःकरण मे बहिनिक प्रेमक अभाव खटकैत अछि जकरा प्रेम मे ओकरा लोकनि केँ सत्यक उपलब्धि होइछ।

आन-आन पात्र सभ सेहो काल्पनिके थिक जकरा नाम-धामक यथार्थता सँ कोनो टा सम्बन्ध नहि छैक। केवल कथाक कायाक निर्माण एवं कल्पना केँ साकार करबाक निमित्त ओहि पात्र एवं पात्राक सृजन भेल अछि।

अन्त मे विज्ञप्ति अछि जे मैथिली मे "अपरिणीता" केँ लिपिबद्ध एवं प्रस्तुत कए अपन मातृभाषाक उन्नयन करबाक लोभ केँ सम्वरण नहि कए सकलहुँ आ तेँ पुस्तकाकार मे प्रस्तुत करैत अपार हर्ष तँ अछिए संगहि विश्वास सेहो अछि जे "अपरिणीताक" रोचकता एवं सरसता मे हमर अल्प ज्ञानक फलस्वरूप भाषाक दोष एवं आन-आन त्रुटि सभ झँपि जाएत तथा विद्वान लोकनि एकर त्रुटि दिशि ध्यान नहि दए केवल एकर रसास्वादन कए हमरा क्षमा करताह।

**विद्यापति-स्मृति-पर्व**
२ नवम्बर, १९७६

**—राजेश्वर झा**

# पहिल

कमलपत्र सन रमणीक नेत्र, चन्द्रमा सन मुँह, कुन्दन सन दाँतक पाँति, अनारक कली सन अधर, लता सन बाँहि तथा चन्द्रिका सन कान्तिक अछैत जँ नारीक अनुरूप गुण एवं अनुरूप यौवन सन पुरुष नहि उपलब्ध होइछ तँ ओकर जीवन निरर्थक भए जाइछ तथा नारी सुलभ परम्परागत उलझनक समाधान मे ओ कौखन तँ स्वप्नक वैभव कें तकैत अछि, कौखन अथाह सागर मे डूबि मोती कें हथोरैत अछि और कौखन आकाश मे सोनाक महल बनबैत अछि। स्नेहातुर भेला सन्ता ओकर आचरण ओहि उचरिङ्ग सन होइत अछि जे कतहु एक ठाम थीर नहि भए सतत् एक डारि सँ दोसर डारि पर उड़ि कए बैसैत तँ अछि किन्तु कतहु ओकरा तृषा नहि उपलब्ध होइछ।

अहिल्याक जीवन सेहो एहने छल। ओकर उभरल यौवन, अनिन्द्य रूपराशि एवं मृदुल मञ्जुल फेन सन स्वच्छ हास अकारथ छलैक। स्नातक परीक्षोत्तीर्ण पत्नी कें प्रवेशिकोत्तीर्ण पति जे बुद्धि, गुण और स्वभाव मे निकृष्ठ छल ओकरा सतत् सालैत छलैक, ओकरा मन कें उसकाबैत छलैक तथा अन्तःकरण कें दोमैत छलैक। ओ कौखन समाजक प्रपञ्चक बन्हन तथा परम्पराक कड़ी कें तोड़बाक हेतु उद्यत तँ होइत छल किन्तु ओकरा मान और मर्यादाक म्यान सँ बाहर भए हृदयहीन कृपाण बनि क्रान्तिक आवश्यकता छलैक जे नारीक सुलभ हृदय कें कठोर बनबैत अछि।

अहिल्याक पति रामानन्द निर्मलीक कोशी योजना मे निम्न श्रेणीक लिपिक छल और अहिल्या ओहि अञ्चल मे लोक कल्याण पदाधिकारिणीक पद पर नियुक्त छल। रूप और गुणक अतिरिक्त अहिल्या कें कार्यक अपूर्व क्षमता, अनुपम शील और सहठूल स्वभाव छलैक जे नारी हृदयक स्वाभाविक उतार होइछ। एक तँ ओ रूपवती छल और दोसर ओकर सीऊँथक सिन्दुर दीप सन प्रतीत होइक। ओकरा

दिशि जे केओ तर्कक ओकरा सभक दशा बड़ विचित्र भए जाइक। केओ तँ दीप कें देखि बेसुध भेल मृगसन, आ केओ चम्पा कें सुँघि बेसुध भेल भ्रमर सन पड़ल रहैत छल आ ककरहु दशा तँ विविमाक ओहि फतिंगा सन भए रहल छलैक जकर शरीर आधा जड़ला सँ काँपैत प्रतीत होइक। अतएव ओकर ओ रूप और गुण ओकरा चिंतित नहि बनाए शिथिल बनौलक। नारीक महत्ता तँ ओकर गंभीरते मे रहैत छैक!

अहिल्याक जेना जेना लोकप्रियता बढ़ैत गेलैक तहिना ओकर स्वभावो मे परिवर्त्तन भेलैक। एक तँ ओकर पति रामानन्द मनोनुकूल नहि छलैक और ताहि पर स्वच्छन्दता ओकर स्वेच्छाचारिता कें आगाँ बढ़ौलकैक जे ओकर दाम्पत्य जीवन मे अभिशाप भेलैक।

प्रारम्भ मे पति और पत्नी अपन-अपन तेज सँ एक दोसरा कें उद्भासित कएलक; अपन अन्तःकरण मे एक दोसरा कें संयोगि कें रखलक तथा जँ कखनहु कोनो कारणवश ओ लोकनि एक दोसरा सँ वियुक्त भेल तँ वियोगक स्मृति ओकरा दुहु कें साललक, ध्यान कें बेसुध कएलक, चुम्बाक कामना सिहारलक और आलिंगनक लालसा सन्तप्त अन्तःकरण कें तृषा देलक। अर्थात् जल-जल मिलि जेना एक रूप होइछ तथा आकाश मे व्याप्त पवन जेना आकाश सँ भिन्न नहि होइछ तहिना रामानन्द और अहिल्याक पारस्परिक जीवन छल।

एवंक्रमें नदीक प्रवाह सन समय बितैत गेल तथा पति-पत्नी मायाक ओसक पियास मे तृषित भए एक दिशि तँ अतृप्त आकांक्षा कें लए अप्रतिभ भए टौआए लागल और दोसर दिशि स्नेह राग मे परिणत भए मानव जीवनक सार्वभौम धर्म बनि अहिल्याक कोखि कें जुड़ौलक। ओकरा कोरमे चान सन सुन्दर नेना खेलाए लागल जे रामानन्द और अहिल्याक जीवन कें आएल छल तँ आलोकित करबाक हेतु किन्तु विषाद बनि ओ ओहि दुहु कें एक दोसरा सँ पृथक कएलक।

कहल जाइछ जे पुत्रोत्पत्तिक उपरान्त नारीक स्नेह पति सँ हटि पुत्र पर केन्द्रीभूत होइत अछि किन्तु सुमनक जन्मक बाद अहिल्या पर कोन टिकटिकिया सवार भेलैक जे ओ समटा स्नेह कें समेटि स्वतः गुमसड़ए तथा उद्वेगक आगि मे अपना कें डाहए लागलि। यौवन भरल मादकक गंगा सन ओकरा अन्तःकरण मे लहराए लागल जे ओकरा शरीर कें बेसम्हार बनौलक। तदर्थ ओ गगन पर अपना नेत्र कें उठबैत तँ छल किन्तु निगाह कें नीचा कए लैत छल। यौवन-भार सँ ओ तेना ने झुकि गेल छल जे ओ सोझ भए कें ठाढ़हो तक ने होइत

छल। ओकर आँखिक आकांक्षा मे रामानन्द छोट और छुछुन प्रतीत भेल। अतएव ओ क्षयकालक दीपशिखा सन ओकरा मलिन बुझि सर्वदाक हेतु मिझेबाक निमित्त उताहुल भेल।

प्रबन्धक डाक्टर मेदनीरामक ओतए अहिल्याक अबरजात प्रारम्भ भेल। मेदनी कें अहिल्या क्षणिक संग चाँदनीक तथा मेघक संग चपलाक भान भेलैक जे शिष्टताक सुकुमार सीमा मे धृष्टता कें उत्पन्न कए सौंदर्य और संयमक अपूर्व संगमक पूल कें सकचूनर कएलक। ओ ओकरा प्रेरणा, प्रीति और करुणाक रूप बुझलक तथा ओकर भुवन मोहिनी रूप, कपोलक लालिमा, कुन्द सन आलाप एवं पुष्पाभरण सँ श्लथ चंपक यष्टि सन देह ओकरा उपभोगक आमंत्रण देलक। अतएव स्वच्छन्दता सँ विचरण केनहार प्रकृतिक सखा अपन विदग्ध मति सँ सृष्टिक अणु मे रमल सुधाक माधुर्य कें आनन्दक संग भरि छाँक पीबए लागल।

मेदिनी जातिक चमार छल। ओकर वर्ण कारी, रूप वामन और आकृति तँ छुछुन छलैक किन्तु अहिल्या कें ओ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ एवं सभ सँ सुन्दर प्रतीत भेल। फलस्वरूप ओ अपन नारीत्व कें ओकरा समर्पण कए देलक तथा ओकर प्रेम मे तेना ने उन्मत्त भेल जे ओ ओकर विरहक सन्ताप सँ सन्तप्त भए, भूख-प्यास ओ नींद कें त्यागि अन्यमनस्क भाव सँ ओ ओकरहि मे निमग्न रहैत छल। जावत ओ ओकरा सँ भेंट नहि करैत छल तावत ओ ने तँ कतहु जाइते छल आ ने कोनो टा काजे करैत छल। अहिल्याक भूख-प्यास, नेम-टेम, दुलार-मलार सभ किछु मेदिनीये छलैक। ओकरा ने तँ रामानन्दे आ ने ओकर निष्कलंक नेना सुमने सोहाइत छलैक।

मेदिनी और अहिल्याक एहि तरहक प्रवृत्ति लोकक नजरि मे खटकए लागल। एहि सम्बन्ध मे कानोकान कनफुसकी प्रारम्भ भेल तथा रामानन्दक कान मे एहि प्रसंगक बात सेहो तँ आएल किन्तु सहलोल बनि अपन आँत कें ममोड़ि ओ सभ किछु देखैत ओ सुनैत रहल। क्षुनताक भार सँ दबल, विषाद सँ कुपित एवं परिस्थिति सँ पराभूत भए ओ ओहि आमेख कें अँगेजैत तथा अहिल्या कें आशा रहित भग्न प्रार्थना सन बुझि लितोह भए गेल।

रामानन्द अहिल्या कें तँ अपन हृदयक हार, ज्ञानक स्रोत तथा विपत्तिक धैर्य छल बुझैत किन्तु ओ कोना एहेन छनकटि, एतेक अपाटकि और एहेन बिन्हकी भए गेल? ओकरा अहिल्याक एहि तरहक आचरणक शंका स्वप्नो मे ने भेल छलैक। ओ एतेक ओछ और घिनिन होयत जे निर्पोख भए कें

एना कुकर्म करत ? किन्तु हाय रे नारीक हृदय ! 'सोधल बहुरिए तँ डोम घर जाएत अछि' ! तारुण्य केँ की कतहु नैतिक संयम तथा प्रणयक बन्हन भेलैक अछि ? ओकरा तँ केवल हृदय और अवसरक आवश्यकता होइत छैक ! किन्तु मायक ममता ! की ओहो एहने फूहराम और दुब्बर होइत छैक जकरा पवनक एक मोट झोंक उड़ाए केँ लए जाएत तथा एके मोट धक्का मे टूटि जाएत ? किन्तु हाय रे नारीक अनुरक्त हृदय ! ओकरा नेत्र कतए ? उत्कट एवं उमतल नारीक स्नेहक उरमा प्रियतमक अन्तःकरण मे ओछराएल रहैछ। ओकरा बुद्धि और विवेक कतए ? प्रेम तँ हृदयक वस्तु थिक ओकरा बुद्धि सँ कोन सम्बन्ध ? ओकरा नीक-बेजाए, धर्म-अधर्म तथा लाभ-हानि आदिक प्रसंग मे सोचबाक पलखति कतए ? ओ तँ प्रियतमक रंजिका मात्र थिक। ओकरा ककरहु जीवन-मरन और सुख-दुख सँ कोन प्रयोजन ? ओकरा अपन आकाँक्षाक पूर्ति तथा स्वार्थ-साधन सँ सम्बन्ध रहैत अछि। अहिल्याक आचरण सेहो एहने भेलैक। ओकरा ककरहु सँ कोनो टा मतलब नहि छलैक। ओ अपन एक वर्षक नेना केँ छोड़ि हप्ताह-हप्ताह डेरा सँ बाहर रहए लागलि और रामानन्द विपण्ण मन सँ अन्तर्धान भेल चानक उदयक प्रत्याशा मे कौखन तँ नभोमण्डल दिशि और कौखन चौबटिआ दिशि एकटकी लगौने ओकरा ऐबाक बाट केँ देखैत रहैत छल। एएह तँ छल रामानन्दक जीवनक अह्लाद और अड़राएल अरमान। ओकरा असहाज लगैत तँ छलैक किन्तु की ओ आत्महत्या करत ? ओहि अबोध नेनाकेँ के देखतैक ? ओकरा एहि जगत मे ओकरा छोड़ि और दोसर छइहे के ? एहि उधेरबुन मे पड़ल रामानन्द निन पड़ले छल कि आहट पाबि निद्रा पुनः भङ्ग भए गेलैक तथा रूपक निधि एवं समस्त गुणक आगरि अपन सौंदर्यक ज्योत्सना सँ समस्त घर केँ उजागर, नूपुरक झंकार सँ समस्त दिशा केँ शंकृत तथा अपन अलक-पाश सँ ओकरा मन केँ विवश करैत अहिल्याक पदार्पण भेल। रामानन्दक अन्तःकरण मोमसन द्रवीभूत भए गेल। ओ अपन पत्नीकेँ अह्लादए लागल। चुल्हा जड़ौलक। भोजनक विन्यास भेल। अहिल्या भोजन कएलाक ऊपरान्त बिहुँसैत बजलीह—"हे ! अहाँ दोसर विवाह कए लीयह।"

अहिल्याक उपर्युक्त कथन केँ सुनि रामानन्द मर्माहत भए बाजल—"की कहलहुँ दोसर विवाह कए लीयह ? एकर अर्थ ?" "अर्थ की प्रच्छन्न छैक ? की अहाँ हमर और रामक प्रेम-प्रसंग केँ नहि जनैत छिऐक ?" सगर्व अहिल्या अपन कुटिल भृकुटी केँ नचबैत बजलीह। "अखड़ल तँ छल किन्तु अँटकर नहि छल जे ई विषक वृक्ष एतेक शीघ्र ओआएत" निःसङ्क भए रामानन्द बाजल। 'किन्तु हाई रे आजुक सीता और सावित्री जे स्वर्ण कलशक ऊपर खापड़िक ढाकन केँ रखबा मे कनेको नहि सकुचाइत अछि'। रामानन्दक दगधल एवं परमादपूर्ण उक्तिक उत्तर दैत

अहिल्या अपन लावण्यक ज्योत्सना एवं यौवनक गर्व मे ऐंठैत बजलीह—"की आजुक सीता और सावित्री कें आजुक राम और सत्यवान पर गुमान छनि ? ई सभ बहसल मनोवृत्तिक परमाद थिक। एक समय छल। पुरुष जेना चाहलक तेना स्त्री कें बनाए कें रखलक। समय आब पलटि गेलैक। ई सहयोग और सामंजस्यक युग थिक। आब पुरुष स्त्री के उलबुलाए कें नहि राखि सकत। पुरुषे सन ओकरहु महत्वाकांक्षा, स्वच्छन्दता और स्वतन्त्रता छैक। सीता और सावित्री भने आन स्त्री रहथु हम तँ गौतमक परित्यक्ता, सौंदर्य सरोवरक एक तरंग, विधाताक एक अत्यन्त मनोहर सृष्टि, सृष्टिक अनुपम अलंकार एवं पुरुष तथा प्रकृतिक मौलिक और प्राकृतिक सम्बन्धक आधार पतिता अहिल्या छी जकरा राम उद्धार कएलनि"। एहि तरहें रामानन्द कें कहि अहिल्या अपन विजयक गर्व मे उत्फुल्ल भए कौखन तँ अपन साज-श्रृङ्गार कें दुरुस्त करैत छल और कौखन रामानन्दक दीनता पर बिहुँसैत ओकर मान और मर्यादा कें अपन कुटिलता सँ धुनैत चञ्चल एवं धृष्ट यौवनक वशीभूत भए निर्लज्ज बनि कुलक मर्यादा कें गमेबा पर उद्यत भेल।

अहिल्याक गर्वोक्ति कें सूनि रामानन्द तमतमाएल बाजल—"अहाँ सृष्टिक अनुपम अलंकार नहि नर-बाघिन छी जे पुरुषक शिकार करैत अछि, ओकर अवयव कें तरासैत अछि तथा समूल नष्ट कएलाक उपरान्त ओ पुनि दोसराक गृह कें उजागर करैत अछि किन्तु हे अधम नारी ! पुरुष एवं प्रकृतिक परिणयक एहि छविमान प्रसूनक कोन गति हेतैक जे अहाँक सोणितक सृजन थिक ?

"पुरुष और प्रकृतिक प्रणयक ई छविमान प्रसून नहि सुकुमार अन्तःकरण एवं सहलोल बुद्धिक मनहूस प्रमाद थिक जे नारीक ललितगर सेहन्ता कें सैंति लज्जाविहीन बनौलक"—बमकैत अहिल्या बाजलि। ई एक गोट मुग्धाक प्रेमक फल थिक जकर परिणति सँ ओ किन्नहु ने अवगत छल। अतएव ओकर उत्तरदायित्व कोना ओकरा पर सौंपल जाएत ? की पुरुषक सेहेन्ता और उत्तरदायित्व केवल एहि टा मे छैक जे ओ 'कूटि, पीसि लिए और नारी कें जेम्हर चाहए तेम्हर गड़काए दीक' ? किन्तु आब बात कें बलधकेल बहटारबाक कोन प्रयोजन ? हम तँ उषाक प्रथम किरण सन अहाँ सँ वियुक्त भए गेल छी। पवनक गति सन हमर ग्रहण आब दुष्कर अछि। अतएव ई अन्तिम भेंट थिक।"

एवंक्रमें अपन दाम्पत्य कें कुटिलताक ऐंड़ी सँ ऐंड़िआए प्रणय एवं मान कें पावर सँ फेकि निगूढ़ अन्हार मे विलीन भए अहिल्या तँ अपन निष्क्रियता एवं कठोरताक परिचय देल और ओम्हर रामानन्द विधिक विवेकक प्रसंग मे सोचए

लागल जे स्त्रीक नयन के॑ नील कमल सँ, मुँह अम्बुज सँ, दाँत कुन्द सँ, अधर नव पल्लव सँ तथा अङ्ग चम्पाक पंखुड़ी सँ रचि ओकरा हृदय के॑ ओ किएक पाथर सन बनौलथिन ? की ओकर भुवनमोहिनी रूप समग्र विश्वक पुरुषक उत्ताप के॑ बढ़ेबाक निमित्त, तिरछी नयन पुरुष मात्र के॑ बेधबाक निमित्त तथा कोमल अङ्ग पुरुषक वासना के॑ उभाड़बाक निमित्त अछि ? जँ नारीक इएह वास्तविक रूप थिक तँ ई अवश्ये प्रपञ्चक भीत पर ठाढ़ क्लेशक गह्वर थिक जकर सम्बन्ध अनाचार सँ अछि। एहि तरहेँ सोचैत ओ निद्राक अंक मे आसीन भए स्वप्नलोक मे विषाद एवं चिन्ता सँ मुक्त भए स्वच्छन्दता सँ विचरण करए लागल ।

# दोसर

अहिल्याक भुवनमोहिनी रूपक आलोक सँ सुमन तथा ताारुण्यक विकास सँ कलि अपमानित भए पल्लव मध्य नुकेबाक उपक्रम करैत छल तथा ओ अपन कटि-किंकणीक रुनझुन तथा नूपुरक झंकार सँ मेदिनीक अन्तःकरण के॔ पूर्णतः झंकृत करैत रहैत छल। ओ ओकर रूपपाश मे तेना ने बन्हि गेल जे कहुखन तँ ओ कोठली सँ बाहर आबि ओकरा ऐबाक बाट के॔ ताकए लागए और कौखन विछाओन पर पड़ि ओकर अवयवक कोमलता, मधुर मुस्कान तथा लज्याशीलता के॔ स्मरण कए ओकर खाँका खिंचैत छल। एहि अभ्यन्तर ललनोचित अनन्त गुणक आगरि बिजुली सन अपन कान्ति के॔ प्रसारित करैत अहिल्याक पदार्पण सँ मेदिनीक नेत्र क्षणमात्रक निमित्त चौंधिआ गेल तथा ओ अपन आँखि के॔ मिढ़ैत ओकरा कहए लागल—"हे प्रिये ! हम अहाँक रूपपयोधि मे तेना ने निमग्न छी जे हमरा अहाँक अतिरिक्त और किछु नहि लक्षित भए रहल अछि।"

मेदिनीक एवंक्रमक स्नेहातुर वचन के॔ सूनि अहिल्या यौवनक मद मे विभोर भए बाजलि—"हे नाथ ! नारी सतत् आनन्दक इच्छा करैत अछि तथा जतए ओकरा आनन्दक उपलब्धि होइछ ओतहि ओकरा प्रेम भेटैछ। हम स्वतः अहाँक प्रेमानिल मे दग्ध भए अहाँक दर्शनक लालसा मे उन्मत्त छी"।

मेदिनी अहिल्याक एहि तरहक भावना के॔ जानि हर्षोत्फुल्ल भए अपन मनोदशा के॔ व्यक्त करैत बाजल—"हे प्रिये ! अहाँक सौंदर्य मे ज्योत्सनाक उज्ज्वलता, शशिक मादक मुस्कान तथा चपलाक चंचलताक अतिरिक्त आन्तरिक महानताक दिग्दर्शन होइत अछि। रूपक आमंत्रण मन मे एक ज्वाला के॔ उत्पन्न करैत अछि और अन्तःकरण मे एक भावनाक उदय होइछ जे दृष्टिक पेय पदार्थ की कतहु रक्तक भोजन भेल अछि? पुनि अहाँक कपोलक लालिमा, कुन्द सन आलाप तथा सुमनसमूह सन कान्तिबान शरीर उपभोगक निमित्त आमंत्रण दैत अछि। हमरा अहाँक श्वास मे सौरभ, वाणी मे संगीत और नेत्र मे मदक उपलब्धि होइछ।

हे अहिल्ये ! हमरा तँ मात्र एके मोट अभिलाषा अछि जे हम अधर मे अधर डालि वक्षस्थल पर पड़ल अहाँक प्राण मे समाएल रही । किन्तु ई दुरुह एवं प्रच्छन्न प्रेमक कोन काज ?"

मेदिनीक अपार स्नेह केँ पाबि अहिल्याक जीवनक मान सरोवर गुम्फित, हरित-भरित एवं अधिक लावण्यमयी प्रतीत भेल तथा ओ उल्लसित भए बजलीह—"हे नाथ ! नर एक रूप मे जल-अनल, मति-महदम्बर तथा क्षर-अक्षर थिक । ओ धर्म, अर्थ एवं कामक प्रबल कारण नारी केँ आत्मानुकूल बेनाबाक हेतु ओकरा मे मैत्री भावना केँ आरोपित करैत अछि । इएह कारण थिक जे अपन पति केँ त्यागि हम अहाँक समक्ष अएलहुँ अछि एहि भावना केँ लए जे जेना कोमलता सँ सरलता और सुगन्ध सँ संमीत परस्पर लेपटाए मचलैत अछि तहिना हमरो लोकनिक तन और मन परस्पर मिलि सतत् मचलैत रहए, सरसैत रहए ।"

अहिल्याक दम्भ रहित एवं निष्कलंक वचन केँ सूनि मेदिनी उत्फुल्ल भए बाजल—"हे प्रिये ! लोक रत्न केँ तकैत अछि । रत्न की कतहु लोक केँ तकलकैक अछि ? किन्तु हमर दशा तँ विपरीते अछि । कर मे नील कमल, कुन्तल मे माधवी कुसुम तथा ओठ मे आलता रंग रज सँ पीताभ ललना अपन गति, भंगिमा, मधुर राग एवं अपार रूपराशि सँ सम्मोहित करैत अछि तथा ओकर अधरक चुम्बन प्राणक पाटल केँ तँ विकसित करैत अछि किन्तु ओकर ज्वाला न्यून नहि भए सतत् विकराले प्रतीत होइछ और हम आतङ्कित भए किंकर्तव्यविमूढ़ भए जाइत छी ।"

मेदिनीक असमंजस एवं हार्दिक दुर्बलता केँ अकाट्य युक्ति एवं तर्क सँ खबड़ी सन उड़बैत अहिल्या बाजलि—"स्नेह मे कतहु असमंजस और आतङ्क रहलैक अछि ? ई सभ तँ चित्तक धर्म थिक ! प्रेमक सुरा पीलाक बाद जीवन और मरन, इहलोक और परलोक तथा नीक और बेजाएक कतहु भान भेलैक अछि ? उन्मत्त केँ होश कतए ? प्रेमक तँ एके मोट लक्ष्य प्रियक परितुष्टि थिक ! हे नरोत्तम ! सुकुमार भाव-तन्तु, कृशोदरी, द्रवित वाणी, प्रणय कुपित एवं मदनातुर की कतहु रूप और रंग तथा चेतन और अचेतन मे भेद-भाव तकैत अछि ? जाबत चित्त मे ईर्ष्या एवं द्वेषक विकार सन्निहित रहैछ ताबतहि तँ असमंजस और आतङ्क रहैत छैक । रंज और गंजक सम्मिलने तँ आनन्द थिक ! लोहाक हथौरी सँ पारस केँ तोड़ला पर की ओकर स्पर्श सँ लोहाक हथौड़ी सोनाक नहि बनैत अछि ? विस्मय, उच्छ्वास, शोक और संतापे मे तँ जीवनक वास्तविक तथ्य सन्निहित रहैछ जकरा पाबि प्रिया और प्रियतम ने तँ नोर केँ पीबैत अछि आ ने हँसिए केँ चोरबैत

अछि। स्वाभाविक चरित्रे तँ लौकिक होइत अछि। अलौकिकता तँ केवल आश्चर्यक वृद्धये टा करैछ! अतएव एहि प्रेम कें प्रणयक बन्हन मे बान्हि लौकिक बनाएबे श्रेयष्कर प्रतीत होइछ"।

एतबमें कहि अहिल्या हर्षातिरेक मे हँसए लागलि। रूप-राशिक ओहि स्मिति रेखा कें देखि कुमुद बिकसित भए गेल तथा प्रकृतिक जे पदार्थ ओकर जाहि अंगक छटा कें देखलक ओ ओकरहि सन भए गेल। जे ओकर नेत्र कें देखलक ओ कमल, जे ओकर निर्मल शरीर कें देखलक ओ निर्मल नीर, जे ओकरा हँसैत देखलक ओ हँस तथा जे ओकर दशन-ज्योति कें देखलक ओ हीराक नग भए गेल।

अहिल्याक तथ्यपूर्ण कथा कें श्रवण कए मेदिनीक पाकल महुआ सन फूलल मनोवृत्ति ओकर पीपरक चंचल पात सन अन्तःकरण कें दृढ़ बनाए स्नेह-राग मे परिणत कएल तथा ओ ओकरा समर्थन मे बाजल—"अहाँ यथार्थ कहि रहल छी। राग, द्वेष तथा मोह रहित विशुद्ध प्रेम सहज एवं स्वाभाविक होइछ जे दुइ गोट अन्तःकरणहि टा कें नहि दुइ गोट मन कें सेहो एकस्व करैत अछि जकरा ज्वाला मात्रे टा नहि रहि अमृतक सिखो रहैत छैक। मात्र एहि निमित्त अहाँक रूप-बिभाक प्रकाश मे हमरा सम्पूर्ण जगत सुरम्य प्रतीत होइछ तथा एहि आभा मे हमरा ओहि पुरुषक सौंदर्य झलकैत नजरि अबैत अछि जे अखिल विश्वक मूल सत्ता थिक। ओकर निस्सीम कान्ति मे अहाँक अशेष सौंदर्यो अल्प सन प्रतीत होइछ। अतएव काम कें जीवनक परम्पराक आधार बुझि नर एवं नारीक समागम, अलौकिक चरित्र एवं प्रतिष्ठा कें समर्पित करैत अछि जे पुरुषक कुल, प्रतिष्ठा, वर्ग और वर्णक विचार कें उपेक्षा कए कमल सन स्वच्छ, मिसरी सन मधुर, कुलीन, मनोहर एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होयतहुँ भमराक प्रेम कें अङ्गीकार करैत अछि। वस्तुतः नर-नारीक संयोग अन्तरात्मा कें उर्ध्वगमनक प्रेरणा दैत तँ अछि किन्तु सभय प्रेम एहि मे बाधक बनैत अछि।"

मेदिनीक शंका कें अपन बुद्धिक खड़रा सँ खड़रैत अहिल्या अति विनम्र भए बाजलि—"हे पुरुषपुंगव! प्रेमक परिभाषा एवं ओकर आचरण सँ की अहाँ अवगत नहि छी? आँखि रगड़ा-झगड़ा करैत अछि और बान्हल जाइत अछि हृदय; लड़ैत अछि मन और बाजी लगबैत अछि प्राणक; सामान्यतः याचक दानीक ऋणी होइत अछि किन्तु एहि मे दानीए याचकक ऋणी होइत छैक। जँ मुक्त पुरुष सत्य संकल्प होइछ तँ जगतक उत्पत्ति, स्थिति तथा प्रलयहु ओकरा संकल्पक अधीन भए जाइछ। हमरा तँ मात्र एतबेक लालसा अछि जे किंचित, शिथिल

उर-पीड़क आलिङ्गन मे अहाँ हमरा आबद्ध कए प्रगाढ़ चुम्बन सँ हमर अधर कें उत्पीड़ित करी।"

एवंक्रमक वार्त्तालाप होइतहिँ छल कि सम्मोहक चन्द्रमाक श्वेत आभा दिग्वधुक आनन पर कर्पुरक चूर्ण सन तथा रजनीक अंग पर चानन सन चमकि मूक प्राणीक स्वाद सन अनिर्वचनीय एवं अगोचर सुखक हेतु प्रेरित कएल तथा युगल प्रेमी आलिङ्गन मे आबद्ध भए एकाकार, एकरस एवं एकस्थ भए निश्चेत रूपें प्रशान्त प्रवाह मे प्रवाहित भए गेल।

किछु कालक उपरान्त नीरवता कें भङ्ग करैत अहिल्या रात्रिक अन्तिम प्रहर जानि नितान्त खिन्न भए बाजलि— "हे नाथ ! सुखक राति कतेक छोट होइत अछि। कतेक उत्तम होइतैक जँ काल निमिष, पल, दिवस, मास एवं संवत्सर मे विभक्त नहि भए अखंड रूप मे बीतैत तथा पल, घड़ी, आदि सभ काल शकल निरुद्ध भए निशा कें उषा तक अवरुद्ध करैत ? किन्तु धूप और छाह तँ प्रियतमेक रंग थिक जे समयानुसार अनुकूल और प्रतिकूल भए युगल प्रेमी कें कौखन फूलाए कें गुब्बारा बनबैत अछि और कौखन सुखाए कें छहोरा बनाए दैछ।"

जावत एवंक्रमक अभिसारक वार्त्तालाप भइए रहल छल तावतहि निशा अवसान कें प्राप्त भेल तथा भगवान भास्कर अपन सोनाक रथ पर आरूढ़ भए नभोमण्डल सँ अपन अरुणिमा कें प्रसारित कए ओहि भवनक भूभाग कें स्वर्णमय बनौलनि। उषाक आगमन जानि अहिल्या व्यथाक मुद्रा मे बाजलि—"हे नाथ ! मन और तन जँ एकत्व नहि रहैछ तँ सम्मिलन एवं समागमक महत्व केहेन ? अतएव आब प्रणय सूत्र मे आबद्ध होयबे समुचित थिक।" एवंक्रमें कहि ओ अपना कें सोनाक कान्ति तथा सुगन्ध सँ निर्मित एवं रूप और भाव्य सँ परिपूर्ण बुझि वसंतक वैभव सन प्रतीत भेल जे गिरगिट सन क्षण-प्रतिक्षण लाल, पीयर और उज्जर रंग मे बदलए लागलि।

अहिल्याक उक्तिक अनुमोदन करैत मेदिनी अपन पुरुषोचित भाव कें व्यक्त करैत स्नेहातुर भए बाजल—" ठीक थिक ! अहाँ देवी नहि मर्त्यलोक मे अवतीर्ण नारी छी। देवी तँ कौतुकक विषय होइछ जे मानवताक पूर्ण व्यंजक कथमपि नहि भए सकैछ। अतएव अहाँक मनोहर मुँह कें निर्निमेष देखैत बज्रपातो कें सहबाक हेतु हम उद्यत छी जे लौकिक जीवनक मर्यादा एवं महिमाक अतिरिक्त आध्यात्मिक जीवनक मूल आधार थिक।"

# तेसर

उषा जहिना रजनीक घोघ कें हटाए मधुकर सन जीवनक रस कें सिंचित करए लागलि कि नेनाक कानब सँ रामानन्दक निन टूटि गेल तथा ओ नेना कें परिबोधए एवं अह्लादए तँ लागल किन्तु ओ और अधिक मचलि कें कानए लागल जेना ओकरा अपन, रामानन्दक और अहिल्याक भविष्यक ज्ञान होइक। ओ ओकरा चुप करबाक लेल अपना भरि यत्न तँ कएलक किन्तु ओ कनितहि रहल प्रायः ई बुझि जे एहि कानबक तँ एखन प्रारम्भे भेलैक अछि तथा सम्पूर्ण जीवन तँ बाँकिए छैक। एवक्रमें ओकर क्रन्दन सँ रामानन्द स्वतः कानए तँ लागल किन्तु ओ करए तँ की ? एहि सोच मे निमग्ने छल कि एहि अनन्तर रामानन्दक बिलाइ ओतए मियाऊँ, मियाऊँ करैत आएल जकरा अहिल्या पोसने छल। नेना कानब छोड़ि ओकरा टक-टुक ताकए लागल तथा ओकरा भरि मुट्ठी कें पकड़ि किलकारी मारए लागल आ ओ बिलाइ मसुआए कें सेहो ओतहि पड़ि रहल। प्राकृतिक सखाक एहि अनुपम स्नेह, सद्भावना और सौहार्द कें देखि रामानन्द कें आश्चर्य भेलैक तथा ओ चेतन प्राणी सँ अचेतन और जड़ कें अधिक विवेकी, विचारवान एवं कर्त्तव्यपरायण बुझलक। कतेक कुत्सित होइत अछि एहि मनुष्यक काज ? केहेन छोट होइत अछि ओकर मनोवृत्ति जे अपनहि सन्तान कें अपनहि हाथे गरा घोटैत अछि तथा ओकर हत्या करैत अछि। एवंक्रमें सोचैत ओ समाजक अनासक्त, सकलंक एवं गंभीर आशंकाक प्रतिमूर्त्तिक कुत्सित कर्म एवं निःश्रेयस पराजित बुद्धिक भ्रम अहिल्याक परायबाक ग्लानिक स्मरण सँ खिन्न भए गेल तथा ओकरा नेत्र सँ नोर टपकए लागल। विषादक व्यथा सँ व्यथित एवं चिंता सँ कातर भए रामानन्द समस्त स्त्री जातिए कें क्लेशक गह्वर तथा मायाक कठपुतरी बुझि दोहमति देमए लागल। एहि अनन्तर पातिव्रतक दीप्ति सँ प्रदीप्त सौभाग्यशालिनी प्रखण्ड विकास पदाधिकारीक कीर्त्तिमयी प्रौढ़ भामिनी सुशीलाक ओतए पदार्पण भेल।

सुशीला कें देखितहिं रामानन्दक धैर्यक बान्ह टूटि गेल तथा ओ फुटि-फुटि कें कानए लागल।

सुशीलाक आँखि मे सेहो नोर डबकि तँ आएल किन्तु ओ ओकरा बड़ यत्न सँ संभारैत बजलीह—"छी ! छी ! अहाँ पुरुष छी। पुरुष की एहेन फुहराम भेल अछि? जकर अन्तःकरण शोक, संताप, क्रोध आदि सँ आक्रान्त नहि होइछ सएह तँ पुरुष छी। तरुण वृक्षक गौरव तँ एहि मे अछि जे ओ विद्युतक आघात कें सहि सकए। अतएव विषाद कें त्यागि विगत वैभव सँ प्रेरणा लए वर्तमान कें सुखद बनाउ। सुमनक चिंता सँ अहाँ मुक्त छी। एकर लालन-पालनक भार आई सँ हमरा पर अछि। अहाँ एकरा सँ स्वतंत्र और स्वच्छन्द छी। एहि तरहें कहि सुशीला नारीक हृदयक विशालताक, अपरिमित स्नेहक गंभीरताक तथा परोपकारिताक दिग्दर्शन करौलनि जकरा मे ओकर महानता सन्निहित छल। नारीक ई रूप केहेन सौम्य, कतेक उदात्त और केहेन स्निग्ध छैक जे ओकरा नारी सँ देवी बनबैत अछि। एवंक्रमें विचारक सागर मे डुब-डुब करैत रामानन्द आध्यात्मिक महासागर मे प्रवेश कएलक तथा ओकर ध्यान समक्षक देबाल पर टाँगल भगवती काली, सरस्वती और लक्ष्मीक दिव्य चित्रक ऊपर पड़ल। हिनका लोकनिक मुखाकृति, लाक्षणिक मुद्रा एवं उपकरण आदिक अवलोकन कए रामानन्दक मन मे विचारक श्रृङ्खलाक उदय भेल तथा ओ हिनका लोकनिक विवेचना करए लागल। रामानन्द कें काली बुढ़िया दादी सन बुझना गेलीह जे वृद्धावस्थाक दोष सँ क्षणहि मे तुष्टा और क्षणहि मे रुष्टा होइत छथि। दादी केहेन सेहन्ता सँ पौत्र-प्रपौत्र आदिक संग बैसि कतेक प्रेम सँ परम्पराक ऐतिहासिक तथ्य कें कथाक माध्यम सँ ओकरा लोकनि कें अवगत करबैत अछि तथा ओकरा अन्तःकरण मे अपन इतिहासक प्रति अनुराग कें जगबैत अछि। दादीक ठोरे तँ अमृत और विषक निवास-स्थल थिक ! जँ दादी ककरहु पर प्रसन्न भेलीह तँ आशीर्वादक वर्षा भेल आ जँ ककरहु पर कोनो कारण अप्रसन्न भेलीह तँ गारि और श्रापक वर्षा तँ होइतहि अछि संगहि ओ ओकरा ऊपर अपन ठेंगा कें सेहो फेकैत अछि और बारहनियों सँ तँ ओकरा झाँटैत अछि किन्तु जँ ओही नेना कें कनेको सर्दियो भेलैक वा ओकरा माँथो टा दुखेलैक कि दादीक स्नेह बाढ़िक रूप मे उमड़ि आएल। ओ कटगैनीक छनका ओकरा पिऔलनि और हुर-हुरक पात कें पीसि ओकरा माँथ पर लेपलनि।

कालीक आचरण ठीक एहने छनि। ओ अपन धीया-पुता कें ओही दादी सन बुझैत अछि जे मनुष्यक आचरण, भावना और विवेकक निदेशन करैत अछि।

एहि तरहें सोचि रामानन्दक ध्यान सरस्वतीक सौम्य, शान्त, शुभ्र एवं स्निग्ध मुखमण्डल पर पड़ल जे ओकरा अधेर वयसक प्रौढ़ा रमणी सन प्रतिभाषित भेलीह। एहि तरहक नारी प्रधानतः विषय-वासनाक तृषा एवं चञ्चलता सँ रहित पति-अर्चना मे लीन तँ रहैत अछि किन्तु ओकर मन सतत् परिवारक संचालन, सन्तानक आचरणक निर्माण, ओकर शिक्षा-दीक्षाक प्रबन्ध तथा वर्तमानक आधार पर ओकर उज्ज्वल भविष्यक निर्माणक चिन्ता मे लीन रहैत अछि। एएह कारण थिक जे सरस्वतीक आचरण दृढ़, स्नेह संतुलित और विचार बड़ प्रौढ़ छनि।

सरस्वतीक विवेचनाक उपरान्त रामानन्दक ध्यान लक्ष्मीक चित्रक ऊपर पड़ल। स्वभाव सँ चञ्चला, राग-रभस एवं आमोद-प्रमोद मे लीन एवं समस्त वैभव सँ परिपूर्ण मुग्धा सन लक्ष्मी रामानन्दकें प्रतीत भेलीह जनिका वात्सल्य सँ बेसी अपन साज-शृङ्गारे प्रिय होइछ।

रामानन्द कें सुशीलाक आचरण, व्यवहार और स्वभाव साक्षात् सरस्वती सन प्रतीत भेल। ओकर सरलता, मृदुलता और स्निग्ध स्नेह की ओकर सौम्य रूप कें शान्त और शुभ्र नहि बनबैत अछि? सुशीलाक स्नेहयुक्त सान्त्वनाक वाणी रामानन्द कें दैविक एवं आकस्मिक प्रतीत भेल। ओ सुशीलाक चरणक धूरा लए अपन माथ मे लगौलक तथा तन्मयताएत बाजल—"धन्य छी हे जननी! अहीं सन-सन साध्वीक तेजक प्रताप सँ ई पृथ्वी थीर अछि।"

सुशीला रामानन्द कें परबोधि सुमन कें संग लए अपन गृह गेलीह तथा अपन पति सँ अहिल्याक चसकी, रामानन्दक उद्वेग तथा मेदिनीक उपरोंश सँ अवगत करओलि। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी कें यद्यपि एहि सँ कचोट भेलनि तथापि ओ अहिल्या कें बुझाए वास्तविक मार्ग पर अनबाक परामर्श देल। फलस्वरूप सुशीला अहिल्या कें अपन गृह बजाए स्नेहपूर्ण वाणी मे बजलीह—"हे कामोदरी! अहां प्रेमक पाँक मे कोना फँसि गेलहुँ? ई तँ मकड़ाक जाल थिक जे मच्छड़ कें तँ उलझा कए रखैत अछि किन्तु बगड़ाक फुदकिओ एकरा नष्ट कए दैछ। अतएव अपन गुणकृत विशेषानुराग कें चिन्ह अगुताए कए एना हास्यास्पद जनु बनाउ। हमरा तँ डर अछि जे कतहु पोढ़ाक रोग वानरक कपार पर ने पड़ए।"

सुशीलाक उपर्युक्त वाणी कें सुनि अहिल्या मदनातुरा भेला सँ कुलजा सन बिहुँसैत बजलीह—"हे बहिन! मधु और मदनक साहचर्य सँ जे आगि सामल से की कोनो साधारण आगि िक जे मात्र एक चुरुकी पानि सँ मिझाओत? जकरा

रति मे प्रीति छैक ओकर प्रेम कतहु दुर्वार भेलैक अछि ? प्रेम तँ पयोधि थिक जे एहि मे पैसल ओ मान-अपमान, नेम-टेम, सांसारिक विधि-निषेध आदि कें छोड़ि मलय समीर सन स्वच्छन्द, सुमनक सौरभ सन मुक्त, सागरक लहरि सन लहराएल और नदीक प्रवाह सन सतत प्रवाहित होइत अछि। ओकरा लोक-लाजक कोन डर ?"

अहिल्याक गर्वोक्ति कें सुशीला ओकर यौवनक मादक उन्माद एवं तारुण्यक दोष बूझि पुनः बजलीह—"हे सुन्दरि ! जावत फूल मे रस रहैछ तावतहि मधुप ओकरा समीप जाइछ। स्त्रीक यौवन और लावण्य तँ उषाकालक ओस सन क्षणिक थिक। कतए अहाँ सन कुलाङ्गना और कतए ओकरा सन अधम ! डबड़ाक बेंग की गंगाजलक तृषा करत और की बौना कल्प वृक्षक दुर्गी परहक फूल तोड़ि सकत ? हे अहिल्ये ! चाननक सुवास पर कतहु माँछी बैसल अछि ? जे वस्तु सूर्योदय भेला पर देखल जाइछ ओ सूर्यास्तक ऊपरान्त कथमपि नहि उपलब्ध होइछ किन्तु हाय रे असंयात्मा नारी जीवन ! ओकरा एतबोधरि अकिल नहि जे अपन जीवन कें गार्त सँ कोना बचावी ?

सुशीला कें उत्तर दैत अहिल्या बजलीह—"तँ की विधाता नारी के घिरनी सन घुमवाक हेतु, जीवन भरि पतिक पामौजी कए गुमसड़बाक हेतु और परिचारिका बनि ओकर सेवाटहल करवाक हेतु रचलनि अछि ? हे बहिन ! 'आब मार काट पिया तोरे आस'क बातक अन्त भए गेलैक। स्त्री और पुरुष दुहू कें अपन-अपन पृथक उद्देश्य छैक, लिप्सा छैक और अड़राइत अरमान छैक जकर पूर्ति करवाक हेतु समान अधिकारक आवश्यकता होइछ। यौवन और लावण्य तँ क्षणिक थिक किन्तु के अमर भए कें आएल अछि ? कूल और शील मिथ्या आडम्बर सँ नहि व्यवहार सँ आँकल जाइछ। हम अपन भावी जीवनक अन्तिम निर्णय कए लेलहुँ। लोकलाजक डर तँ ओकरा होइछ जे घर मे बन्द भए घिसिऔर काटैत अछि, पतिक मनक खेलौना बनि गुमान करैत अछि और पति अपन रागरभसक हेतु ओकरा मनक अनुसार सिंगार करैत अछि। धन्य थिक ओ बेबुझ नारी जे 'हाथ मे ने गोर मे आ टिकुली लिलार' मे बुझि अपना कें सौभाग्यशालिनी बुझैत अछि। हे बहिन ! अहुँ नारी छी। जीवनक अनुभूतिक, जगतक ज्ञान और नारीक अभिशापित जीवनक अवगति अहाँ कें अछि। की नारी कें कोनो महत्वाकांक्षा नहि ? की ओकरा अपना विषय मे निर्णय लेबाक कोनो टा अधिकार नहि ? इच्छाक प्रतिकूल ओकरा केवल जीवन मे पतिक प्रयोजन होइछ जकरा कोनो पुरुषनामधारी व्यक्ति पूर्ति करैछ। इएह तँ थिक समाज और लोक-मर्यादा।

लोक कनुआएल रहए, कादो उछालैत रहए और कठहँसी मे हँसैत रहए। एहि सँ ने तँ हमरा कोनो टा गम अछि आने ग्लानिए। ओकर करड़ब तँ ओहि कुकुर सन होइछ जे पूर्णचन्द्र कें देखि भूकैत अछि। हे देवी ! हमरा सुनल अछि जे उच्चश्रेणीक बालक वा कन्या जे निम्न जातिक बालक वा कन्या सँ विवाह करतैक ओकरा पारितोषिक देल जेतैक तथा ओकरा लोकनि कें उच्च शिक्षाक निमित्त विदेश पठाओल जेतैक। उच्च शिक्षाक हमरा तृषा एवं उत्कट अभिलाषा अछि। इएह कारण थिक हमर प्रणयक।''

अहिल्याक उत्कट लिप्सा कें जानि सुशीला खिन्न भए पुनि बजलीह-''ज्ञानक की कतहु कोनो सीमा भेलैक अछि ? ओ तँ अध्ययन और अनुभूति सँ प्राप्त होइछ ! मानल मधुर खेनहार कें स्वाद बदलबाक हेतु चटनीक आवश्यकता होइत छैक किन्तु तकर अर्थ ई कथमपि नहि जे ककरहु मान और अरमान कें ऐना धुनिऐक। की कखनहु अहाँ कें इहो खेआल भेल अछि जे स्वतः अँहीक सोणितक सृजल एहि छविमान प्रसून जकर भाग्यक अहीँ स्रष्टा छी कोन गति हेतैक ? हाय रे नारीक आचरण ! हास-बिलासपूर्ण दाम्पत्य सुख कें छोड़ि प्रेयसी आनक परिणिता भए चन्द्रमासन सुन्दर रहितहुँ कलंकक गह्वर एवं गंभीर आशंकाक स्थल बनैत अछि। हे अहिल्ये ! नर और नारी मे माँछ और पानिक सम्बन्ध रहैत छैक। ओकर आचरण सँ वृक्ष और बेली सन होइछ। बेली सुखाएलहुँ पर वृक्षक त्याग नहि करैत अछि। व्रत और शीलक ऊपर स्थित भए जीवन रूपी गाड़ीक ओ दुइ गोट पहिया थिक। अतएव असह्य दुख भार सँ आक्रान्त भए दुष्परिणामक आशंका अहाक एहि निष्कासन मे अछि। मधुमाँछी अर्क, पलाश, बेल आदि वृक्षक ओतए जाए संतोष प्राप्त करैत तँ अछि किन्तु अपन मधुछत्ता कें किन्नहु ने छोड़ैत अछि।

सुशीलाक नीतिनिपुण कथा कें सुनि अहिल्या उफनैत बजलीह—''हे बहिन ! ई सभ परतारब थिक। प्रेम कें की कोनो परिधि छैक। ओ तँ असीम एवं अथाह होइछ। प्रेमक पथिक कें दिन, घड़ी और राति मे की कोनो भिन्नता बुझि पड़ैत छैक। ओ तँ स्नेहक ताप मे कुन्दन सन तपि एवं विषाद सँ कुसित भए मरबे टा जनैत अछि। ओकरा नीक-बेजाए सोचबाक फलखति कतए; ओ तँ आँखि रहितहुँ आन्हर होइत अछि ओकरा गुण-दोष बुझबाक अवगति कतए ? ओ तँ केवल प्रेमक नेह कें जनैत अछि। हे देवी ! चन्द्रमा यद्यपि सकलंक किन्तु की ओकर प्रभा निर्मल और मेघ कारी किन्तु ओकर विद्युत छटा की उज्जर नहि होइछ ? प्रेम मे कतहु प्रपञ्च भेलैक अछि। ओ पाथर सन कठोर होइछ जे फोड़लहुँ सँ नहि फूटैत अछि।''

अहिल्याक उन्मत्त वचन कें सुनि एवं ओकर दुराग्रह कें जानि सुशीला हिम्मत कें हारैत बजलीह—"ठीक थिक हे नारी ! तों धन्य छह। साँप केंचुआ कें छोड़ैत अछि विष कें नहि। तों जाहि विषक वृक्ष कें रोपैत छह ओहि मे विषक फूल फुलेतह, फड़ फड़तह और ओही वृक्षक छाह विष बनि तोड़ा तरसेतह, तोहर अङ्ग-प्रत्यङ्ग कें अपन ताप सँ दग्ध करतह और तों जवीन सँ निराश एवं निराश्रित भए अन्त मे जीवनहु कें गमेबह। हे देवी ! मरनिहार जँ गड़ा मे पैस बान्हि पोखड़ि मे कूदि पड़ए तँ बचौनिहार ओकरा की कए सकतैक तथा रोगी कें जँ वैद्यक कथा अनसोंहात लागैक तँ ओकरा मृत्यु सँ के बचौतैक ?

एवंक्रमें कहि सुशीला तँ ओतहि बैसल रहलीह और अहिल्या अपन मुँह तथा चरणक शोभा सँ चन्द्रमा, और कमल कें तिरस्कृत करैत अपन कटिक सुन्दर मणिमेखला सँ हृदय एवं मन कें बन्हने रूपक मद मे मातलि, यौवन पर इतराएत अपन अङ्ग-प्रत्यङ्ग कें दमकबैत त्रद्धिक फूल सन प्रफुल्लित प्रतीत होइत ओतए सँ बिहारि सन बाहर भए सोचए लागलि—"जल-जल कें नहि पीबैत अछि, वृक्ष अपन फल कें नहि खाएत अछि तथा माणिकक तेज सँ माणिकक लोप नहि होइछ; किन्तु हाय रे अधम नारी जीवन जे कुकुर सन कुकुरे पर भुकैत अछि तथा ओकरहि विनाशक कारण बनैत अछि।" एवंक्रमें सोचि ओ कमल लोचना नलिनी सन अपन नेत्र कें बन्द कए अपन दृढ़ स्नेह सँ बिकसित अमृतरूपी तारुण्य रस सँ सिञ्चित हृदय कें आगाँ कए अग्रसर तँ भेलि किन्तु ओकर भाग्य ओकरा कतए लए जाइत छलैक से ओकरो ने बुझल छलैक।

# चारिम

हँसी, खुशी, बैर और प्रीति चित्तक वृत्ति थिक। दोसर दिन भोर होयतहिँ कानोकान अहिल्या और मेदिनीक चर्चा समग्र प्रखण्ड मे पसरल जे ओ दुहु अपन प्रणय कें कानूनी रूप देबाक हेतु सुपौल चल गेल। ई कथा किछु गोटे कें तँ अनसोहाँत लगलैक किन्तु केओ-केओ एकरा हास्यास्पद बुझि कौतुहलक सामग्री बनाए अपन कुटिलताक बोध करबए लागल। प्रखण्ड-विकास पदाधिकारी भगवती वर्माक कान मे सेहो ई खबड़ि पहुँचल। वर्माजी अधेर बयसक प्रगतिवादी सज्जन छलाह जे स्वयं विधवाश्रमक एक गोट विधवाक संग विवाह कए अपन दाम्पत्य जीवन कें सफल बनौलनि। सुशीला हुनके धर्मपत्नी छलीह। वर्माजी जाति प्रथाक विरोधी, अन्तर्जातीय विवाहक प्रबल समर्थक तथा स्त्रीक स्वतंत्रता महान पक्षपाती होयतहुँ एहि परिणय कें सकलंक एवं कलुषित मनोवृत्तिक मनहूस चसकी बुझलनि जे समस्त मानवताक हेतु अभिशाप छल। ओ रामानन्द कें बजौलथिन तथा ओकरा सँ लिखित रूप मे एहि प्रसंगक एक गोट निवेदन लए दूर-भाष यंत्र सँ सुपौलक अनुमंडलाधिकारी एवं सहरसाक समाहर्त्ता के एहि विषय सँ अवगत कराए एहि प्रसंगक आदेशक याचना कयल। समाहर्त्ता एहि प्रसंग कें अनैतिक, उच्छृङ्खल, असंगत एवं अपराध बूझि अनुमण्डलाधिकारी कें ओहि दुहु कें बन्दी बनाए सहरसा पठेबाक आदेश तथा सेवा सँ मुक्त करबाक परामर्श देल।

लोक सोचैत अछि किछु और होइत छैक किछु आने। अहिल्या और मेदिनी आएल तँ सुपौल अपन अन्तःकरण मे नव आशा और उल्लास कें संयोगि कें ओकरा प्रणयक सूत्र सँ आबद्ध करबाक हेतु किन्तु आशा तँ प्रायः निराशे मे परिणत होइत अछि। चञ्चल भाग्य प्रक्षिप्त वज्रसन अहिल्या और मेदिनी पर खसलैक। नेत्रक चपल कोर, विलासक भार सँ मन्थर गति एवं मनोरम मुखमंडल सँ युक्त रमणी मूर्त्तिमती स्मृति सन श्रुतिक अर्थरूपी पथक अनुसरण करैत कोयली सन कुहकैत, हरिणीसन तकैत, हँसिनी सन ठुमकैत एवं बिजुली सन चमकैत जहिना

अपन प्रियतमक संग कचहरीक प्रांगण मे प्रवेश कयलक कि आरक्षी निरीक्षक ओकरा लोकनिक हाथ मे लोहाक बेड़ी पहिराए प्रारब्ध कें यथार्थ सिद्ध कयलक।

बन्दी भए अहिल्या और मेदिनी सहरसा पठाओल गेल। ओहि युगलप्रेमी कें देखबाक हेतु समाहर्त्ताक कचहरी मे लोक उमड़ि पड़ल।. एक दिशि तें यौवन-भार सँ अहिल्याक हृदय स्वतः पीड़ित तथा कटिमण्डल पातर भए गेल छल और दोसर दिशि बन्हनक ग्लानि और सन्ताप सँ सन्तप्त भए ओकर उदीयमान सूर्य सन मुँह पीयर भए गेल छलैक। दुहु हाथ कें बन्हला सँ ओकरा जाहि अङ्ग सँ वस्त्र ससरैत छलैक ओतए सँ स्वर्ण किरणक आभा प्रस्फुटित होइत छल, जेम्हर ओ तकैत छल ओम्हर नील कमलक वर्षा होमय लगैत छल तथा जकरा पर ओकर दीठि पड़ैक ओकरा करेज कें सालि दैक और ओकर कोड़ मे वासनाक हुक्क कें पैसाए दैक। ओकर नील वर्ण साड़ी मे सोनाक किनारी लागल, आङ्गी मे रतन-झालरि लागल आ तकरा मे झमकारि कें हीरा और मोती टाँकल छलैक। ओ जें कखनहु बिहुँसैत छल तें दामिनि दमकए लागैत। ओकर टिकुली आगिक अँगोरा जकाँ छिटकि कें लोकक करेज कें डाहैत छल और सात-सात हाथक कारी नागिन सन ओकर लट कतेको गोटाकें डसि ओकर प्राण कें अपन खोपा मे बान्हि चानक पाछाँक कारी पर्वतक शिखर जकाँ लगैत छल। ओकरा देखि प्रतीत होइक जे साक्षात चन्द्रमा या कामदेवक स्त्री रति कामक निरूपण तथा ओकर महिमा कें अक्षुण्ण रखबाक निमित्त धरातल पर अहिल्याक रूप मे अवतीर्ण भए नारीक अन्तःकरणक प्रक्षिप्त रहस्य तथा बाह्य् सौंदर्यक अभिव्यक्ति करैत अछि।

उमड़ल लोकक क्रोध ओकरा देखितहि दया मे और तिरस्कारक भावना स्नेह मे बदलि जाइक तथा आँखि यत्न कएलहुँ पर ओकरा अङ्ग-प्रत्यङ्गक ऊपर सँ हटबाक हेतु तत्पर नहि होइक। ओकरा सतृष्ण नयन सँ देखबाक लेल बूढ़ पुरानोक आँखि यद्यपि उठैत तँ छलैक किन्तु लाजवश आगू-पाछू करए लागैत छल। कमल सन ओकर आँखिक कौतुकपूर्ण निगाह जकरा पर पड़ैत छल ओकर प्रसन्नता फूटिकए एकदिशि तँ ओकरा शरीर सँ बाहर होइत छलैक और दोसर दिशि ओकर तीक्ष्ण नयन-बाण सँ आहत भए ओ मर्माहत भए जाइत छल।

ओकर केराक थीर सन छह-छह देह, मधुसन वर्ण, घोड़ीक आँखिसन नयन, दुपहरिया फूल सन रक्तिम गाल, पान सन पातर ठोर, गजगण्डसन उरोज, अधर पर आतुर मुस्की, विपुल नितम्ब पर ऊपर-नीचा होइत मणि-मेखला आ केशक लट-लट मे गूहल जगमग करैत मोती समाहर्त्ताक मन कें दलमलित कए दोमए लागल।

समहर्त्ता निर्णय देलथिन जे ओंकर पिताकें बजाए ओकरा जमानति पर मुक्त कए देल जाए। अतएव अहिल्याक पिताकें खबड़ि देल गेल।

अहिल्याक पिता कुलानन्द मिश्र सम्पत्तिशाली कुलीन ब्राह्मण छलाह जे बेटीक अभावल बाप भेला सँ व्यथित एवं कलुषित होयतहुँ सभटा अपमान और ग्लानि कें घोंटि उमड़ल भीड़क समक्ष अपन मुड़ी कें झुकाए अहिल्या कें जमानति पर छोड़ाए बापक स्नेहक परिचय देल।

अहिल्या हाजति सँ मुक्त भए अकानि सन अकुलाएत अन्यमनस्क अपन पिताक संग नैहर बिदाह भेलि और ओम्हर भरि राति हाजत मे बंद मेदिनी कें कहुखन अहिल्या और कहुखन अपन प्रेयसी एवं कन्या मन पड़लैक तथा ओ ओकरा लोकनि सँ भेंट करबाक हेतु यद्यपि बड़ उताहुल होइत छल किन्तु हाजतक फाटक ओकरा ओहि पर्वत सन प्रतीत भेलैक जे आकुल नदी कें समुद्र सँ भेंट करबा मे अवरोधक होइछ। प्रातःकाल मेदिनीक ससुर कें जखन जमायक बिपत्तिक प्रसंग मे खबड़ि लगलैक तँ सुपौल आबि अपन जमाय कें जमानति पर छोड़ौलक।

हाजत सँ बाहर आबि मेदिनी कचहरीक उपवन मे अन्यमनस्क बैसि अहिल्याक सिमिरिताइक प्रसंग मे सोचए लागल। प्रकृतिक कण-कण मे ओकरा अहिल्याक सौंदर्य छविक आभास भेटलैक। गुलाब मे ललोन मुँहक लसि, लाल कमल मे अरुणायल आँखि, तिलकोड़क फड़ मे अधर एवं दाड़िमक फड़ मे दाँतक पाँतिक भान भेलैक तथा प्रमादवश भावातिरेक मे बहि जखन ओ ओहि छिड़िआएल सौंदर्य कें एकत्र करबाक हेतु ओहि फूल सभ कें तोड़ए लागल कि ओ सभ स्वतः अदृश्य भए बाजल—'हे मानव ! एहि फूल सन अहूंक प्रेयसीक सौंदर्य क्षणिक अछि। रूप, यौवन और जीवन सभटा अहिना क्षण मात्रहि मे अदृश्य होएत। ई शरीर हाड़ आ माँसक बनल अछि। एकर अन्त अवश्यंभावी थिक। अतएव अपन प्रणयीक प्रत्याशा छोड़ि अपन पत्नीक ओतए जाऊ !"

फूलक एवंक्रमक उक्ति कें सूनि मेदिनी भ्रमान भए कें खसल। ओकरा अन्तःकरण मे नाना तरहक विचारक जन्म भेल तथा ओ ओहि विचार मे बहैत कहुखन तँ जीवन कें निरर्थक एवं क्षणभंगुर और कहुखन जगते कें मिथ्या बुझि जगतक वस्तु कें उपभोगक निमित्त मनुष्यक जीवन कें सार्थक बुझलक। सौंदर्य और यौवन तँ क्षणिक थिक किन्तु ओकर सारहि मे तँ जीवन रहैछ जकरा अपन

पृथक तथ्य, उद्देश्य और महत्त्व रहैछ। अतएव निवृत्ति कें ओ कुत्सित ग्लानि और निःश्रेयस मनोवृत्तिक फल बुझलक जकरा जीवन और ओकर रहस्य सँ कोनहु टा सम्बन्ध नहि रहैछ।

एहि तरहक विचारक प्रवाह मे मेदिनी बहितहिं छल कि एहि अभ्यन्तर ओकर ससुर ओतए आबि ओकरा सजग करौलक तथा मेदिनी अपना कें सेहो सम्हारलक। ओ यद्यपि अपन असफलता सँ खिन्न, हताश और निराश छल तथा विगत घटनाक ग्लानि सँ अपना कें अपमानित अनुभव करैत छल तथापि ओकरा मे धैर्य छलैक जे ओकरा फाटल अन्तःकरण और निराश मन कें संतुलित बनाए भविष्यक प्रतीक्षाक आशाक सूत्र सँ बान्हि ओकरा पयर कें ससुरक संग सासुर दिशि बढ़ौलक अतए ओकर पत्नी और पुत्री दर्शनक हेतु ललायित और उत्कण्ठित छल।

# पांचम

भग्न मनोरथक क्रोध समय पाबि स्वतः कम भए जाइछ तथा मनुष्य अपन असफलताक निमित्त अपन प्रारब्ध कें दोष दैत अछि। ठीक एहि तरहक हालत रामानन्दक छलैक। ओ अहिल्याक अवहेलना के अदृष्टक दोष बुझि अपना कें आश्वस्त कएलक तथा सभटा अपमान ओ ग्लानि कें बिसरि अपन जीवनक गाड़ी कें आगाँ बढ़ौलक। ओकरा अन्तःकरण मे ने तँ अहिल्याक प्रति कोनो आमेखे छलैक आ ने कोनो टा प्रतिशोधक भावने। ओ पूर्णतः ओकरा बिसरि गेल तथा मोकदमा मे कोनो पैरवी तक ने कएलक जाहि सँ ओ स्वतः किछु दिनक बाद खारिज भए गेल।

मोकदमा सँ मुक्त भेला पर अहिल्या अकरा ने तँ कोनो टा दुःखे छलैक आने कोनो पच्चातापे पुनः अपन यौवनक मद मे मत्त भए अड़राएल तथा आन्धी सन अनर्थ मचवए लागल। ओकरा उँच्च शिक्षाक तृषा छलैक तथा स्वच्छन्द और स्वतन्त्र जीपन-यापन करब ओकर उद्देश्य छल। अतएव ओ पटना विश्वविद्यालय मे एम० ए०क छात्राक रूप मे दाखिल भेल तथा मेदिनी राँचीक हिनू मोहल्ला मे स्वतंत्र रूपें चिकित्साक व्यवसाय करए लागल। ओकरा मे अपन व्यवसायक अपूर्व क्षमता और अनुभव छलैक जे किछुए दिन मे ओकरा धन, यश और नाम देलकैक तथा ओ राँचीक नीक चिकित्सक मानए जाए लागल। ओ ओतहि अपना लेल घर बनौलक और अपन परिवारक संग रहए लागल।

अहिल्याक पटनाक जीवन बड़ मार्मिक छल। ओकरा अध्ययन मे रूचि,अधर मे अमृत, मुँह मे माधूर्य, प्रेम मे रति तथा इच्छा मे कामना छलैक जे ओकरा छात्र, प्राध्यापक, मंत्री एवं आन-आन लोकनिक प्रिय बनाए सभहक आँखिक आँजन, अन्तः करणक असगैत अह्लाद तथा उछन्नर मनोवृत्तिक उन्मत्त उमेद बनौलक। ओकर चन्द्राननक भुवन मोहिनी श्री, कटिक अनुपम लास्यक लहरि तथा कण्ठक कोइलीसन कुहुकब लोकक सुकुमार अन्तःकरण कें बेधि बेसुध बनबैत छल। लोक ओकर अवयवक कोमलता हँसीक आभा तथा लज्जाशीलता पर मुग्ध भए ओकर

अलसाएल नेत्र, निर्बंध केश और तनक द्युति सँ आकर्षित भए मनक रूप केँ तत्पर प्रकट करए लागैत छल और ओ सहृदाएल कनखी सँ ओकरा सभहक दिशि ताकि ओकरा लोकनिक उपेक्षा तँ करैत छल तथापि लोक केँ प्रतीत होइक जे अवश्ये कोनो ने कोनो देव-रमणी ओकरा रूप मे कला और संस्कृति केँ धरातल पर निरूपण तथा पुरुष और प्रकृति मध्य आकाश और धरती सन सामंजस्य केँ स्थापनाक निमित्त उषाक लालिमा सन स्वर्ग सँ भूतल पर उतरलैक अछि। वस्तुतः लोक मरुक तरंगिणी सन ओकर स्नेहावलंबनक उत्सुक छल जकर विकास द्वेष, दंभ और दुख पर विजय पौला सँ होइछ। मेघक टुकड़ी सन अपन लघु जीवन केँ शीतल किरण सँ ठण्ढा बनेबाक निमित्त लोक कँ ओकर आवश्यकता छलैक जे ओकरा जीवन मे विद्युत सन तथा निराशा मे आशा सन अकस्मात प्रवेश कए जाइक और लोक ओकर बिनु कीनल दास भए जाइक। ओकर नारी सुलभ गुण, अनुरागक अह्लाद और मधुर वचन लोकप्रियताक कारण छल जे घटनाक जन-जीवन मे ओकरा बड़ विशिष्ट एवं प्रमुख बनौलक।

अहिल्या सांस्कृतिक जीवनक अनुपम रत्न छल तथा जखन ओ कोनहु सांस्कृतिक कार्यक्रम मे मंच पर उतरल कि दर्शकक नेत्र मे अपूर्व अनुराग, मन मे उल्लास और हृदय मे हर्षक हिलकोर उठए लगैक। ओकर नृत्य, गीत, भाव और भंगिमा सँ विमुग्ध भए लोक ओतए प्रशंसाक तयमाक पथार लगाए दैक जकरा हँसो-थवा मे ओकरा कनेकोटा हसारतिक अनुभव नहि होइक। ओकर प्रफुल्ल रूप मे जगतक समस्त पावन और सुखद वस्तुक समन्वय लोक केँ बुझि पड़ैक। ओकर सौंदर्य सरोवर मे पैसि लोक अपन ताप और अभिशाप केँ शान्त करए लगैत छल और जखन कखनहु ओ बिहुँसैत छलैक तँ पुण्य, प्रेम, वरदान, अमृत, सुख, आशा, अभिलाषा, कल्याण, मुक्ति, योग और साधना सन पवित्र ओकर महान आन्तरिक रूपक दिग्दर्शन होइत छलैक।

एक बेर ओ "भारती-मण्डन मिश्र" एकाँकी मे मण्डन मिश्रक खवासिनीक अभिनय करैत छल। कतेक विलक्षण छलैक ओकर तर्कक प्रणाली और स्त्री स्वभावक चतुराई। हास्यक रूप मे तँ ओ शंकराचार्य केँ मीमांसाक गूढ़ रहस्यक परिचय दए विस्मित तँ कएबे केलक संगहि शंकर ओकर तिल-फूल सन नाक, छह-छह कपोल, सात-सात हाथक परस्पर क्रीड़ा करैत नागिन सन कारी लट तथा टूटा सोनाक कटोरा सन औन्हल दुनू उरोज केँ देखलथिन तँ ओ अहंकारक साकार मूर्त्ति सन प्रतीत भए बिनु सुँघल फूल सन, बिनु वेधल रत्न सन तथा बिनु भोगल पुण्य सन बुझि पड़लनि जे हुनका नारीक स्नेह और सौंदर्यक कोमल महिमाक दिग्दर्शन करौलक। शंकर केँ ओकर लालिमाक संग लाजक समिश्रण मे निर्मल संसार, नखन मे निस्सीम व्योम तथा उरोरुह मे सुरसरिक पवित्र धारक भान भेलनि और ओ हुनका चिर रहस्य, गूढ़ प्रश्न तथा चिर जिज्ञासा सन अपरिचित एवं अनजान प्रतीत भए नारी

हृदयक उलझन मे तेना ने उलझौलक जे योग-जाप,नेम-टेम, आदि सँ दूर लए नाग-कन्या सन विष मे मातलि हुनक चित्त-वृत्त केँ घोंगाए कतहु अन्यत्र लए गेल। हुनका ओकरा मुँह सँ कमलक, नेत्र सँ कामदेवक तीक्ष्ण वाणक तथा कुच युगल सँ दुई गोट वन पडुकीक भान भेलनि जकरा ओ आलोक किरण नहि बुझि अपन जीवन आकाशमे मड़राएल एक गोट मेघ-पुंज एवं जीवनक परिहास हास रस रागिनी बुझलनि जे विरक्त योगीक अन्तर्ज्योति, भक्तक राधा, कविक चतुर नायिका, साधकक सलाम सायुज्य, स्वर्गक अप्सरा, स्वप्न लोकक परी, वनक लचकैत लता, वरुणलोकक मतिवती सरिता तथा मर्त्य लोकक व्रज नारीक रूप मे जन्म जन्मान्तर सँ मायाक विस्तार कए निर्विकार मनुष्यहुँ केँ अपन रूप पर विमुग्ध कए सविकार बनबैत अछि। एहि तरहेँ सोचि शंकर बड़ यत्न सँ अपना केँ सम्हारलनि। इएह कारण छल जे शंकराचार्य नारी सँ तेहेन ने भयातुर भेलाह जे ओ भारती सँ तर्क करबाक हेतु उद्यत ने होइत छलाह और जँ होयबो केलाह तँ उजबिजाएल अपन पराजय केँ स्वीकार कए नारीक अन्तःकरणक प्रक्षिप्त रहस्य जनबाक हेतु छद्म भेष मे अमरुकक साध्वी भार्याक ओतए जाए अपन सहज एवं स्वाभाविक ब्रह्मचर्य केँ अन्त कएलनि।

अहिल्याक दुर्लभ गुण, कमल सन रतनार एवं तरल लज्जायुक्त गर्वहासक सोझाँ मे नव यौवन सँ उल्लसित, मन्दगति, मृदुल नयन तथा मधुसिक्त आलाप सँ युक्त मेनकाक गर्भ गलल सन, लक्ष्मीक चंचलता लजाएल सन तथा उर्वशीक ललित लास्यक लहरि थीर भेल सन प्रतीत होइक तथा ओ अपन प्रकाशमान लावण्य, अनुपम शील, अलौकिक नम्रता और अर्थगर्भित नीतिक संग मन्द मुस्की एवं प्रफुल्ल नयन कमल सँ सभहक हृदय केँ हरैत अद्भुत ज्योति, सत्य, अनन्त सुख तथा अनादि प्रेमक दोहाए देमए लगैत छल। ओकरा हेतु सभहक घरक फाटक फुजले रहैत छलैक तथा ओ कथनहु कतहु स्वच्छन्द भए जाए सकैत छल, ककरहु किछु कहि सकैत छल तथा ककरहु अनुग्रह केँ सहजहि प्राप्त कए सकैत छल और ओ एहि अनुग्रहक निमित्त अपन तन, मन और जीवन सँ दोसरा केँ अनुरंजित कए अपन अंग-प्रत्यंग सँ ओकरा हृदय मे पुलक जगेबाक हेतु अनेरे अपसीआँत होइत अलगैत अपन अमल यौवन और जीवन केँ व्यर्थ गमबैत रहैत छल।

एवंक्रमे रभसैत, रभकैत और सरसैत एक दिन विद्यालय सँ अबैत काल मार्ग मे अहिल्याक चञ्चल आँखि रामानन्द पर पड़ल जे ओकरा देखि अपन आँखि केँ अन्यत्र फेरि ठाढ़ भए गेल छल। अहिल्याक नारी हृदय मे आवेश उमड़ि आएल। ओ ओकरा पीठ पर अपन कोमल हाथ केँ राखि बिहुँसैत बाजलि—"आहाँ तँ बुझने होयब जे हम मरि गेलौंह? चलू डेरा। अहि ठाम सँ समीपे छैक।" एवंक्रमे बाजि ओ रामानन्द केँ हाथ पकड़ि खींचैत अपन डेरा अनलक।

रामानन्द मुक एवं निस्तेज भए यद्यपि ओतए आएल किन्तु ओकरा ई सभ स्वप्न सन बुझना गेलैक। ओ अपन आँखि केँ मिड़ैत बाजबाक साहस तँ करैत छल किन्तु ओकरा मुँह मे बोली नहि छलैक। ओ अप्रतिभ सन कहुखन तँ अहिल्या केँ, कहुखन डेराक वस्तुजात केँ और कहुखन देवाल पर टाँगल चित्र केँ देखए लागैत छल। एहि अभ्यन्तर अहिल्या रामानन्दक हेतु चाय बनौलक तथा बड़ आह्लाद सँ ओकरा दैत बाजल —"ई सभ कर्मक दोष थिकैक हे नाथ ! नारीक रहस्य और निष्ठुरते मे तँ जीवनक सार प्रक्षिप्त रहैछ जकरा सँ पुरुषक अतृप्त प्यास, मनक आकुलता एवं दुखक जन्म होइछ। इएह रहस्य नारी केँ सतत् नवीन अपरिचित एवं उपभोगक पदार्थ बनबैत अछि जे कहुखन ओकरा अदम्य शक्ति स्वरूपा बनाए सिंह-सार्दुल सन पराक्रमीओं केँ अपन सुकुमार हाथे नचबाक क्षमता केँ दैत अछि और कहुखन अबला और अचला बनाए ओकरा एहेन असम्य बनबैत अछि जे मलय पवनहुँ सँ कँपैत अछि, चन्द्रमाक किरणों सँ दग्ध होइत अछि और गरदनिक गुमहारक भारहु ओकरा भारी लगैत छैक। अतएव नारी तँ सर्वदा निर्दोष और निष्कलंक रहलैक अछि।" अहिल्याक नारी चरित्रक समक्ष रामानन्दक पुरुषत्वक पराजय तथा पुरुषक पौरुष पर रमणीक दर्पपूर्ण प्रोत्साहनक विजय भेल।

अहिल्याक उक्ति केँ सूनि रामानन्दक नेत्र सँ नोरक धार बहए लागल तथा ओ ठोहि पारिकए कानए लागल। ओकरा समस्त दिशा मे अहिल्याक मुकुलित एवं कुसुमित छविक छटा पसरल प्रतीत भेलैक तथा भान भेलैक जे अहिल्याक चकित चितवन ओकरा दिशि तँ उठैत छलैक किन्तु लाज सँ ओ विद्युत सन प्रक्षिप्त भए जाइक और अहिल्या सेहो लाज सँ पाटलक लाल पुष्पदल सन तथा अरुण उषा सन बुझना गेलैक। रामानन्दक आचरण अहिल्याक केशपाश मे कुटिलता, अधर मे राग तथा नेत्र मे तरलताक वृद्धि कएलक। ओ अपन विजयक गर्व मे उन्मत्त तँ भेल किन्तु ओकर कोमल अन्तःकरण द्रवित भए आँखिक नोर बनि स्वच्छ गाल पर खसए लागल और ओ अपन आँचर सँ रामानन्दक नयनक नोर केँ पोछैत एवं निष्ठुर निःश्वासक झोंक सँ नाकक मोती केँ हिलबैत बाजलि—"छी ! छी ! पुरुष की एतेक अधीर भेल अछि ! ओकर छाती तँ ओहि पर्वत सन होइछ जे वर्षा, बिहारि, पाथर, बिजुली सभहक आघात केँ सहैत अछि।" एहि तरहेँ कहि ओ अपन रत्न जटित कंगणाक मधुर झंकार सँ रामानन्दक अन्तःकरण केँ झंकृत कए ओकर मनक वृत्ति केँ पतंग-सन उड़बैत अपन नैसर्गिक साधन, उत्फुल्ल यौवन, तरल विद्युत्प्रभासन जाज्वल्य-मान रूप एवं अलौकिक नम्रता सँ ओकरा विभोर करैत अपन सुकोमल हाथेँ एक मोट मधुर थापर सँ ओकरा गाल केँ थपथपाए हृदयक गुप्त सिनेह केँ जगौलक।

अहिल्याक रक्त अधर परहुक मधुर मुस्की, चमकैत मूँगाक मध्य मोती सन स्वच्छ बाँहि शिरिषक कुसुमो सँ अधिक सुकुमार रामानन्द केँ बूझि पड़लैक तथा विलासक वैभव मे विभोर भए ओ बाजल—"हे अहिल्ये ! अहाँक मनोज्ञ कान्ति, सौंदर्य एवं मदमत्त नयन अवसर-अनअवसरक बिना बिचारने यद्यपि हमर मनक बात केँ प्रकट करैत अछि तथा हम अपन मुँहक उगलल कओर केँ पुनि खाए अपना केँ कर्पुर सन अहाँक रूप-विभा मे लुप्त पबैत छी तथापि चित्त पुनि कहैत अछि मुग्धांगनाक आलिङ्गन एवं दुष्ट व्यक्तिक मैत्री दुहु समान होइछ जे अपन अन्तःकरण केँ दूर तथा रहस्य केँ गुप्त राखि सतत् सशंकित रहैत अछि। अतएव अहाँ मे हमर मन आसक्त तँ अछि किन्तु हमरा हृदय कँ चञ्चल पवन सँ प्रेरित काँट सन अहाँक मदन सन चञ्चल यौवन वस्त्रांचल सन विदीर्ण कए अन्तः-करण मे पुनि प्रेमक भंग-शंका केँ उत्पन्न करैत अछि।

मेघ-मालाक सान्द्र नीलिमा मे तड़ित लता सन क्षण-क्षणमे झिलमिला कए प्रक्षिप्त होइत अहिल्याक तारुणय विकास रामानन्दक उपर्युक्त वाणी सँ विजयानुभवक उल्लास मे पूर्णिमाक प्रदीप्त आभा सन वस्त्रांचल मध्य सँ अपन ज्योत्सना केँ प्रसारित करए लागल तथा ओ निःशंक भए बाजलि—"सागर मे लीन मेनहारि बूँद कोना तौलल जाए सकैछ ? अनल पक्षी सन मन निस्सीम गगन मे उड़ैत तँ अछि किन्तु ओ निर्मुक्त नहि भए पुनि अपन गृह अबैत अछि। एहि जगत मे के सतत सुखी रहल ? क्षीर-समुद्र सँ उत्पन्न अमृतमय चन्द्रमहुँ केँ तँ राहु डसैत अछि और ओकरहु मे तँ कलंकक 'कालिमा छैक। हे नाथ ! नारीक कामिनी एवं रमणीरूपक सौंदर्य ओकर यौवनक उन्माद थिक जे सर्वदा उन्मुक्त रहैछ। प्रेम पाश मे आबद्ध नारी चेतना-विहीन भए सुषुप्तिक स्थिति मे सन्निहित रहैछ। एहि अवस्था मे प्यासल अपन प्यास केँ, भूखल अपन भूख केँ तथा विवेकी अपन विवेक केँ बिसरि मात्र विषय-चिन्तन मे आसक्त भए जाइछ तथा आसक्त भेला सँ कामना, कामनाक विघात भेला सँ क्रोध, क्रोध सँ मोह, मोह सँ स्मृति विभ्रम, स्मृति-विभ्रम सँ बुद्धिनाश तथा बुद्धि-नाश सँ प्राणीक विनाश होइछ। अतएव एहि मे व्यक्तिविशेषक कोन दोष ? एहि मे तँ केवल प्रकृति आ॰ प्रारब्धेटा दोषी भए सकैछ। अतएव दिवस एवं निशाक ज्ञान तम सँ तथा अरुण राग रंजित उषाक विशेषता केँ कालिमा मयी साँझहि सँ तँ दिग्दर्शन होयत ! हे स्वामी ! पद्मनाल मे काँट, समुद्रक जल नोनछाह, पण्डितक निर्धनता तथा बुढ़ापा मे धनक तृष्णा आदि तँ केवल ब्रह्माक मतिभ्रमताक द्योतक थिक। माँछक उछलला सँ की कतहु समुद्र उमड़ल अछि ? कुमकुम समहक मन केँ प्रसन्न तँ करैत अछि किन्तु के ओकर कड़ुआहट केँ आँकलकैक अछि ? अतएव आब हमरो लोकनि अपन विषाद के त्यागि, अतीत केँ बिसरि, वर्त्तमानक चिंता सँ भवि-ष्यक सृजन मे संलग्न भए अपन जीवन केँ सार्थक करी।"

अहिल्याक उल्लसित यौवनक घनघोर संभोग, उत्कट रमण एवं उद्दाम रभस लालसाक समक्ष रामानन्दक सभटा तर्क, विवेक, संयम और धैर्य पराजित भए गेल तथा ओ अहिल्याक संग फूल मे गन्ध सन एवं दूध मे पीसन परस्पर मिलि अनिर्वचनीय आनन्द मे निमग्न भए ओकर रूप विभाक तरंग मे तरंगित होमए लागल तथा ओ दुहू निर्मल चन्द्र और सूर्य सन प्रतिभाषित भए जेना सूर्य चन्द्रमा कें देखि और चन्द्रमा सूर्य के देखि अनुरंजित होइछ तहिना ओ लोकनि एक-दोसरा कें देखि अनुरंजित भेल।

## छठम

प्रणय-भंग पुरुष ईर्ष्या और द्वेष सँ सन्तप्त, अवसाद सँ पीयर एवं लाज सँ काठ भए जाइछ। मेदिनीक हालत तेहने सन छलैक। अहिल्याक लोकप्रियता, ओकर विदग्ध मति, अबाध गति एवं अनन्त विभूति साँप सन मेदिनीक करेज पर ओंघराए लागल तथा ओ अपन आँत केँ ममोड़ैत विचारए लागल जे जकरा आननक चानक आभा, नेत्रक वारुणी, तथा त्वचाक सीपीक दीप्ति सँ इन्द्रसन पराक्रमी एवं कुबेरसन वैभवशाली धैर्यविहीन उन्मत्त भए जाइछ ओ कतहु ओकरा दिशि नजरि उठौतैक। ओ तँ केवल सुधा सन सुनल और चन्द्रकला सन देखल जाएत। तदर्थ अहिल्याक पुर्नमिलनक सुख नितान्त दुर्लभ एवं ओकर वियोगानिल मे दग्ध शरीरान्ते ओकरा सम्भव बुझि पड़लैक।

स्नेहातिरेकक कारणे जखन मेदिनी केँ अहिल्या मन पड़ैत छल तँ ओकर स्मृति ओकरा अन्तःकरण केँ सालैत छलैक तथा ओ ओकरा वियोग मे तेना ने जड़ए लागैत छल जे ओकरा कतहु शान्ति नहि भेटैक। ओ प्रायः ओकर वियोगक व्यथा सँ अकुलाइत अपन विकलता केँ प्रकट करैत आलाप करए लागैत छल जे अहिल्या नारी नहि निखिल भुवनक आभा और ओकर रूप स्रष्टाक मनक निष्कलुष कल्पना मात्र छलैक। लतासन कोमल जे सतत् लतरल रहैत छल, ज्योत्सना सन स्वच्छ जे तमोगुण केँ नाश कए मन मे सतत् सतोगुण केँ उत्पन्न करैत छल तथा हँसी सन अपन मधुर आलाप सँ चित्त केँ हँसबैत रहैत छल ओ निद्रा सन चेतना केँ हरि कतहु दूर चल गेल जकर केशपाशक कुटिलता, अधरक-राग, कुचक कठोरता एवं नेत्रक तरलता तँ क्षण मात्रहुक निमित्त नहि बिसरल जाइछ। किन्तु ओहि सभ सँ आब की भए सकत? एवंक्रमक उद्वेग सँ वृक्षक उपर लतरैत लता केँ, कहुखन विहुँसैत फूल केँ और कहुखन चन्द्रमाक स्वच्छ ज्योत्सना केँ पकड़बाक ओ प्रयास करैत छल जकरा लोक उन्माद बुझैत छलैक।

अखबार मे अहिल्याक प्रशंसाक समाचार पढ़ि तथा ओहि मे ओकर भुवन-मोहिनी चित्र कें देखि मेंदिनीक अन्तःकरण मे रसोद्रेक,आलिङ्गनक लालसा तथा चुम्बनक निमित्त सजीव सिहरन उत्पन्न होइक तथा ओकर हृदय ओहि रत्न सँ पूर्ण विकान्त, अगम गम्भीर सागरक अविश्रान्त एवं दुर्दम बाड़वानल सन भए उफनए लागैत छल जकर लहरि मे अहिल्याक प्रेम लहराइत, एवं उबडूब करैत प्रतीत होइक तथा ओ अपनो कें ओकर सौंदर्य मधुरिमाक महिमा सँ मण्डित तँ पबैत छल किन्तु हृदयक विभूतिक सत्य सँ ओकर मन वंचित छलैक। फलस्वरूप अहिल्या मे मेदिनी प्रेम, दया, सहृदयता, शील, क्षमा, परदुख-कातरता, तप, संयम और सहिष्णुता तँ देखलक मुदा त्याग और तत्परताक अभाव ओकरा प्रतीत भेलैक। ओ सरलताक प्रतिमूर्त्तिक सहज नीति, कोमल भाव तथा परम पावन प्रीतिक निमित्त उकबिजाए तँ लागल मुदा ओ अपन सघन विषाक्त कोप कें फोलि अपना केश कें मेघमाला सन पसारि मेदिनीक जीवनक प्रांगन मे नागिन सन नचैत छल जकर ओकरा भानो तक ने होयल छलैक तथा ओ सतत् ओकरहि चिन्ता मे निमग्न रहैत छल। अहिल्याक एम०ए०क परीक्षा-फल सँ अखबारक द्वारा अवगत भए ओ अपन हृदयक भावनाकें नहि रोकि सकल। धैर्यक समस्त बान्ह कें तोड़ि एवं संयमकें छोड़ि तार द्वारा ओ अहिल्या कें बधाई देबाक माध्यमे अपन हृदयक उद्गारकें प्रगट कए भविष्यक हेतु मार्गक उद्बोधन कएलक।

एवंकमे मेदिनीक प्रेम जकर आरम्भ ओहि वासना सँ भेल जे आहिल्या कें केवल अपन सम्पत्ति बनाए कें अपना हेतु प्रक्षिप्त राखए चाहैत छल पासा पलटला सँ ओकर रूप सेहो पलटल यथा मेदिनी ओही प्रेम मे पागल भए प्रेम-सरोवर मे उगए-डूबए लागल जकरा चहुदिशि नोरक नोनगर समुद्र लहराएत तथा आहक तूफान ओकरा आशा कें सकचूनर करैत छलैक।

मेदिनीक स्त्री फेकनी अपन पतिक उद्विग्नता सँ आकुल भए ओकर उपचारक उपाय तँ करैत छल किन्तु प्रेम-व्याधि कें प्रिय कें छोड़ि की कतहु कोनो आन दवाई भेलैक अछि ?कोमल और दृढ़ मन, सुन्दर विचार एव भद्र अभिलाषा सँ उत्पन्न प्रेमक थाह की कतहु भेटलैक अछि? ओ तँ अन्तःकरण कें दग्ध कए सोना बनाय प्रकृति मे प्रेम प्रसारित कए अचेतन मनहु मे चेतनता प्रदान करैत अछि। एहि प्रेमक वशी-भूत भए वीणाक नाद सँ मृग विस्मृत होइछ तथा फतिंगा अपन प्राण गमबैत अछि। एहि तरहक प्रेम आदान-प्रदानक वस्तु नहि भए नित्य सुन्दर, एकरस एवं एकांतिक होइछ। प्रेमीक मनोवृत्ति तेहेन ने तीव्र होइछ जे ओकर समग्र जीवन कें एक-

निष्ठताक सौंच मे ढ़लि जाइछ तथा आठो पहर ओ प्रेमक नशा मे मातल रहैछ। एहि अवस्था मे ओकरा अपन तथा आनक ज्ञान कोना रहतैक ?

अहिल्याक सौंदर्य मेदिनी कें प्रणय संदेश पठबैक तथा ओकर कान्ति और भावना मे ओकरा कलाक अभिव्यक्ति होइक जे ओकरा जीवन कें उद्वेलित कएलक तथा ओहि सौंदर्य और शीलक प्रतिमूर्त्तिक चरणमे ओ अपना कें समर्पण कए देलक। अतएव ओकरा ने तँ अपन स्त्री सँ आने अपन व्यवसाये सँ कोनो टा संबंध रहलैक।

प्रेमक प्रपञ्च सँ अनभिज्ञ फेकनीक नारी-हृदय मे पतिक प्रति प्रेम, सत्कार एवं सुखक कामना छलैक तथा अपन पतिक प्रसन्नताक हेतु ओ तन, मन, यौवन सभ किछु तँ अर्पण करैत छल किन्तु ओ अपन प्रियतमक समस्त अस्तित्व कें घेरि प्रसन्न, उद्दाम, तरंगित एवं अविरल मेघमाला सन बरसब नहि जनैत छल जे अनुरक्त हृदयक हेतु दोष मानल जाइछ।

मेदिनीक अन्यमनस्क एवं उद्विग्न व्यवहार सँ फेकनी मर्माहत भए गेल तथा ओ अपना पति कें उन्मत्त बुझए लागलि जे दीपक फतिंगा बनि दीपक प्रकाश कें अंगीकार करबाक हेतु उताहुल छल। ओ अपन साधना सँ ओहि गुलरिक फूलक कामना करैत छल जे गुलरिए मे प्रक्षिप्त रहैछ। ओ अपन पतिक शोक मे अपन आँखिक नोरसँ आकाश और धरती कें भरि स्वतः ओहिमे उबडुब करैत निसास छोड़ैत चातकी सन स्वाती मेघक पिपास मे मरैत तँ छल किन्तु मेदिनी तँ मालती कें तकैत छल जकर काँट ओकरा नजरि मे नहि अबैत छलैक तथा ओ स्वप्नक ओहि समृद्धिक खोज मे छल जे ओकरा गजिआ सँ बाहर छलैक। संसार मे पाषाण और लोहा कठोर मानल जाइछ किन्तु ओहो तँ समय पाबि द्रवित होइत अछि। गंगा-जल भने श्वेत प्रतीत होइक किन्तु यमुना जल की अपवित्र होइत अछि ? मुदा भ्रमर और पुरुष तँ द्राक्षा कें छोड़ि महुआक रसक लोलुप होइत अछि। ओकर आचरण तँ ओहि गजेन्द्र सन होइछ जकरा स्नान करौलाक उपरान्त अरगजा लगौलो सँ ओ धूरा कें उठाए अपना ऊपर फेकैत अछि।

एवंक्रमें सोचि फेकनी कें अपना पर खेद भेलैक जे स्वतः पतिक उन्मादक कारण छल तथा ओ मेदिनीक पल्लवित एवं पुष्पित कानन मे अहिल्या कें मालती और अपना कें नाग केसरि, ओकरा कमलिनी और अपना कें करील, ओकरा फूल और अपना कें फल तथा ओकरा रसाल और अपना कें अम बुझि सन्ताप सँ जरए लागलि। ओकरा प्रतीत भेलैक जे अहिल्याक ओ जीत केवल ओकरहि टा जीत सँ सम्बद्ध नहि भए समस्त जगतक शृंगारक जीत सँ सम्बद्ध अछि। ओ अपन मुँह सँ शशिक उज्ज्वलता कें, अपन कृष्ण केश सँ कारी नागिन कें, नयन सँ मृगक नेत्र कें, कंठ सँ कोइलीक वाणी कें, नासिका सँ तिलक फूल कें, दाँतक चमकि सँ दामिनी कें तथा अधरक अरुणता सँ समग्र रवि कें तँ जीतलक किन्तु कहिओ जँ राति होइत अछि

तँ कहिओ दिन । धूप और छाह तँ प्रियतमेक रंग थिक ! एहि तरहेँ सोचि ओ आकाश दिशि देखए लागलि तथा नक्षत्रक माला पहिरि चन्द्रमा ओकरा अहिल्याक रूप मे भान भेलैक जे धरती और आकाश कें अपन आभा सँ जगमगावैत अछि । ओ सतृष्ण नयन सँ अकाश मे सरस मेघ कें उमड़ैत आ घुमड़ैत देखि अह्लादित तँ भेल किन्तु अकस्मात बिजुलीक चमकब सँ आहत भए बेसम्हार भए गेल तथा ओकरा कनेको टा चेतना नहि रहलैक ।

होश मे ऐला पर फेकनी कें समस्त जगतक पदार्थ दुई भाग मे विभक्त बुझना गेलैक जकर उद्देश्य भिन्न-भिन्न होइछ । वस्तुतः सुन्दर वस्तु स्वभावतः प्रियताक दृष्टकोण मे तँ अन्तर रहैछ । जँ स्वार्थसिद्धि प्रियताक हेतु बनैछ तँ प्रिय वस्तुक सौंदर्य-बोध मोहग्रस्त होइछऔर जँ सौंदर्य प्रियताक हेतु बनैछ तँ स्वार्थसिद्धि सलग्न होइछ । एहि दुहु स्थितिक सौंदर्य मे प्रियता तँ वर्त्तमान रहैछ किन्तु उद्देश्य भिन्न रहैछ । एक कें तँ सौंदर्य-प्रेम और दोसरा कें स्वार्थ-प्रेम कहल जाइछ ।

# सातम

रति, तुष्टि एवं तृप्ति मनक विशेष वृत्ति थिक। रामानन्द एवं अहिल्याक पुर्नमिलनक उपरान्त अभिसार मे समय बीतए लागल तथा ओकरा लोकनिक गार्हस्थ्य जीवन में जे नव मोड़ एलैक ओ औरो अधिक दृढ़ एवं प्रगाढ़ बनैत गेल। जेना जल जल सँ तथा ज्योति-ज्यति सं मिलि तद्रूप भए जाइछ तहिना रामानन्द और अहिल्या एकरूप एवं एकाकार भए प्रज्ञा, प्रभा और विनोदशीलता सँ एक दोसरा के अनुरंजित करए लागल।

एवंक्रमे सहज आकर्षण, जन्मजात लावण्य, स्वाभाविक अंगक कान्ति, अंजन रंजित चपल नेत्र तथा उन्नत उरोजक प्रपञ्च मे पड़ि रामानन्द स्वतः अपना के बिसरि ओकरा अपन नेत्र रंजक एवं चित्तक आलय बुझए लागल। ओ अहिल्याक तारुण्य-बिकास के निर्निमेष भाव सँ तेना ने पीबए लागल जे ओ नित्य नवीनताक कारणे ओकर हृदयक भावना के सतत् उद्दीप्ते करैत छल। रामानन्द के अहिल्याक अधर रूप आलाप मे विद्युत-प्रभाक, केश कलाप में नाग-कन्याक नृत्यक तथा मुख-मण्डल मे चानक भ्रान्ति होइत छलैक। एहि तरहे अभिसार में ओ लोकनि एक दोसराक मन के अपना दिशि खींचैत एवं जीतैत आलाप-प्रलाप मे समय बीतवए लागल।

एहि अभ्यन्तर अहिल्याक एम०ए०क परीक्षा फल प्रकाशित भेल। अहिल्या प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलीह। ओकर सफलता सँ रामानन्द उत्फुल्ल भए भावनाक प्रवाह मे प्रवाहित होइत जीवनक मंगलमय कामना मे निमग्न भए भविष्यक प्रतीक्षा करए तें लागल किन्तु प्रतीक्षा प्रायः सफलताक रूप मे परिणत होइछ। रामानन्दक प्रतीक्षाक प्रतिफल सेहो निराशे मे परिणत भेल।

परीक्षा फल प्रकाशित होइतहिं अहिल्याक नियुक्ति स्थानीय बालिका विद्यालय मे शिक्षिकाक रूप मे भेल। अहिल्या एहि अनुग्रह के भगवानक कृपा बुझलक तथा अपना के ओ एहि हेतु भाग्यवती बुझलक। ओ अपन आचरण, अध्ययन एवं कार्यक क्षमता सँ विद्यालयक अधिकारी, छात्रा एवं अपन सहयोगी लोकनिक शीघ्रे प्रियपात्रा बनि सभहक अनुग्रह के प्राप्त कएलक।

रामानन्दक पुनर्मिलनक उपरान्ते सँ ओना तँ ओकर आचरण एवं जीवन मे पूर्ण परिवर्त्तन भेलैक किन्तु शिक्षिकाक नियुक्तिक पश्चात सँ तँ ओकरा मे तेहेन ने परिवर्त्तन भेलैक जे ओ राग-रभस केँ त्यागि अध्ययन और शोधकार्य मे अपन समय केँ बीतवए लागल। चञ्चलता केँ छोड़ि ओ विवेक, व्यवहार और सदाचार केँ अपनाए सफल गृहणीक रूप मे नारी-जीवन केँ सार्थक बनौलक। अहिल्या केँ पत्नी रूप मे पाबि रामानन्द गद्गदाएल छल तथा ओकरा अपना पर गुमान छलैक जकर समस्त स्नेह ओकरा पर उमड़ि एलैक तथा ओ ओकर लावण्य मे लवण बनि अपना केँ समाए देलक।

वस्तुतः अहिल्या रूप-जगतक मणि छल जकर केसरी-कटि, कुंभस्थल हृदय, मयूर ग्रीवा तथा ओहि मयूरक रिपु नाग, अलक, कमल मुँह, खञ्जन नेत्र, कीर नासिका, धनुष भौंह तथा द्वितीयाक चन्द्रमा ओकर ललाट छल। नाग अहिल्याक खोपी और चित्र ओकर दीप छल जकर प्रकाश मे रामानन्द अपना केँ आलोकित तँ करैत छल किन्तु जखन ओकरा दिनक अन्तहुक पता धरि नहि छलैक तँ ओकरा जीवनक अन्तक पता कोना होयतैक? ओकर मन तँ रामानन्दक ओतए छल और मनक डोर अहिल्याक हाथ मे छलैक जे सतत् ओकरा पकड़ि अपना दिशि खींचैत छल और रामानन्द कनेको एम्हर-ओम्हर बोलिओ तक ने सकैत छलैक।

रामानन्द केँ अहिल्याक सौरभक समता मे कमल और स्वरूपक समता मे आकाशक चन्द्रमा निकृष्ट प्रतीत होइक तथा ओ ओकरा मे तेहेन ने निमग्न छल जे अपन अस्तित्वहु तक केँ गमौलक।

एवंक्रमेँ रामानन्द और अहिल्या अपन हास-परिहास, क्रिया-कलाप तथा राग-रभस मे एक दोसरा केँ अनुरंजन करैत समय बीतवए लागल।

विद्यालय सँ पलखति पबितहि अहिल्या कतहु अन्यत्र नहि जाए सोझे डेरा आबए लागल तथा पारिवारिक समस्त कार्यक सम्पादन ओ स्वतः करए लागल। ओकरा एहि हेतु ने तँ कोनो गलानिए छलैक आ ने अपमाने। ओ अपना केँ एक नारी बुझैत छल जे पतिक मनक मधुर बह्नि एवं चेतनाक मधुमय प्रच्छन्न स्रोत होइछ। वस्तुतः ओ एहि दिव्य गुण केँ लए पुनि रामानन्दक अवसादपूर्ण जीवन मे अपन स्वच्छन्दता और स्वतन्त्रता केँ छोड़ि आएल तथा दुर्लभ सेवा और स्नेह सँ ओकर पाषाण सन कठोर अन्तःकरण मे कोमल और करुणाक भावनाक सृजन कएल। ओकर नारी-हृदय मध्य सृजन, पालन एवं संहारक समष्टि छलैक। ओकरा अन्तःकरण मे सुधा, आँचर मे दुध और नेत्र मे विकराल गरल सन्निहित छल जकरा प्रलय और सृजन पर समान अधिकार छलैक। ओकर यौवनक उच्छृंखलता एवं उन्माद सुमनक स्मरण मात्रहि सँ मातृत्वक स्वच्छ शुभ्र प्रफुल्लता मे, हर्ष करुणा मे तथा नेत्रक नोर स्निग्ध अमृत मे परिणत भए जाइत छलैक और ओ सुमन केँ सिनेह सँ दुलार करैत अपन मनक विषाद केँ हटेबाक

हेतु ओकरा संग नुका-चोरीक खेल खेलाए लगैत छल। दुइ वर्षक नेना सुमन मचलि अपन मायक कोर मे बँसि बाल-सुलभ क्रीड़ा सँ अहिल्याक आन्तरिक अवसाद आनन्द मे परिणत करैत कखनहु तँ अपन सम्पूर्ण अंग केँ ओकरा अंग मे सटाबैत छल और कखनहु अपन मुँह केँ ओकरा मुँह सँ तेना ने सटबैत छल जे कहैत होए जे अंग और मुँह ओकरहि अंग और मुखमण्डलक एक गोट छिटकल टुकड़ा थिकैक।

सुमनक संग खेलाइत अहिल्याक मातृ-हृदय आनन्दक प्रवाह मे प्रवाहित होमय लगैत छल तथा ओ कल्पना मे विभोर भए अपन पुत्रक निमित्त कखनहु तँ आकाशक चान केँ और कखनहु तारा केँ तोड़ि अनबाक कल्पना मे निमग्न भए जाइत छल। ओ अपन आँखिक तारा सुमन केँ शस्त्र-शास्त्र मे निष्णात एवं सम्पूर्ण अंग सँ पुष्ट एवं मन सँ विभासित पूर्ण किशोरक रूप मे देखबाक उत्कण्ठित छल जे मायक सरल और सहज स्वभाव होइछ।

एवंक्रमेँ चिर सिंचित आशा केँ लए अहिल्या सुमनक मधुमयी कल्पना मे डूबि ओहि दिवसक प्रतीक्षा करैत छल तथा अपन वात्सल्य केँ अपना हृदय मे सँयोगि केँ भावी मातृत्वक सरस गौरवक प्रतीक्षाक कल्पना मे सराबोर होइत उत्फुल्ल होमए लगैत छल।

अहिल्या और सुमनक क्रीड़ा एक दिशि तँ रामानन्द केँ अह्लादित छल और दोसर दिशि अपन मनोरथक पूर्त्ति मे विलम्ब भेला सँ ओकर आकुलता क्रोध मे परिणत भए अन्यमनस्कता केँ प्राप्त होमए लगैत छलैक तथा अहिल्याक चञ्चल नारी हृदय ओकरा खटकैक, ओकर उपेक्षा और उपहास करैक तथा ओकर उत्पीड़नक भावना केँ प्रदर्शन करैक जकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध ओकर रति-रण सँ छलैक। रामानन्दक वासनात्मक तृप्ति मे बाधा और विलम्ब द्वारा अहिल्या ओकरा उत्तेजित करैत रहैत छल जकरा सँ ओकरा आत्मतुष्टि होइक। ओकर एहि तरहक भावना प्रणयीक भावना छल जे कठोरता, पीड़न, भय एवं संघर्ष आदि सँ भरल रहैछ तथा ओकरा इच्छा होइत रहैत छलैक जे ओकर इच्छाक प्रतिकूलो रामानन्द ओकरा पर अधिकार करैक। एवंक्रमेँ ओहि कलहक परिणति उत्तेजना, बाधा, विलम्ब तथा अन्त मे समर्पण मे होइत रहैत छल।

अहिल्याक प्रणय कहुखन तँ अनग केँ पराजित करबाक भावना सँ प्रेरित, कहुखन अपन प्रियतम सँ सामान्य रति मे प्रतिशोधक भावनाक निमित्त और कहुखन मान-भंग भेला सँ रतिरणक रूप मे उद्यत होइत छल तथा एहि हेतु ओ शृंगारक सेना केँ सजाए सभ तरहेँ अपना केँ प्रस्तुत करैत छल। ओकरा हाथीक गति छलैक, आँचर मे ध्वजाक फहरानि छलैक, नेत्र मे समुद्रक हिलकोर छलैक तथा नासिका मे खड्गक रूप छलैक। अतएव रण मे ओकरा समक्ष ओकर पति कोना ठाढ़ भए सकितैक? किन्तु अहिल्याक उत्तेजना सँ उत्तेजित भए रामानन्द अमृत रस पीबाक हेतु ओकर अधर

केँ खण्डन, विरहाग्निक संहार तथा श्रृंगार केँ जीतबाक उपक्रम मे लीन तँ होमए लागैत छल किन्तु अहिल्या केँ अपरिमित शक्ति छलैक। ओकरा सुन्दर मन्द गजेन्द्रक चालि छलैक, आँचर ओकर ढाल छल, पोथ छत्र छल तथा कूजल केश राशि काम नृपतिक चमर छल। ओकर कुच-युगल दुइ मोट दुर्धर्ष योद्धा, वस्त्र कवच तथा लट तरुआरि छल। झांझ सेज एवं नूपुर सेनाक निशान छल। नेत्र ओकर कान तक खींचल बाण छल। भौंह ओकर धनुष, दाँत शक्ति तथा नह शूल छल। एतेक रास अवयव सँ युक्त एवं एहेन शक्ति सँ सम्पन्न नारीक समक्ष पुरुष कतेक काल धरि अपन धैर्य केँ चोरौने रहैत? अतएव अहिल्याक अनुराग एवं ओकर अन्तःकरणक रहस्य सतत् रामानन्द केँ अपरिचिते बनल रहल तथा ओ ओकर मन केँ अपन खोपीक पार्श्व मे बान्हि सतत् लटकौने तथाचित्त केँ अपन रूप पाश मे आबद्ध कएने रहैत छल जाहि सँ ओकरा ने तँ अपना प्रसंगक कोनो बातक अवगति छलैक आने जगतक बात सुनबाक हेतु ओकरा काने छलैक। ओकर ब्रह्माण्ड ओकर डेरा छलैक और ज्ञानक सीमा अहिल्या तक सीमित छल।

एवंक्रमेँ दुःख-सुख केँ उपभोगैत अहिल्या और रामानन्दक जीवन बीतए तँ लागल किन्तु अदृष्टहु तँ किछु थिक। आने दिन सन अहिल्या विद्यालय तँ गेल किन्तु पुनि ओ ओतए सँ आपस नहि आएल। ओकर असरा मे रामानन्द भरि राति जागल रहल तथा चिन्ता सँ कातर, स्नेह सँ आतुर और व्यथा सँ व्यथित भए शक्ति भरि ताकाहेरी तँ कएल किन्तु ओकर कोनहु टा सुराग नहि भेटलैक।

अहिल्याक अन्तर्धान रामानन्दक अन्तःकरण केँ झकझोड़ि ओकर आशाक महल ढाहि मन मे द्वन्द्व केँ उत्पन्न कएलक। ओकरा अंग मे यौवन, नेत्र मे उत्कण्ठा और मुखमण्डल पर विस्मित विषादक व्यथा अंकित छलैक। कतहु ओ मानसरोवरक हंसिनी महाकालक विपुल प्रसारक महाप्रवाण तँ नहि कएलक वा कोनहु चिरपरिचितक अन्तः-करण केँ अविदित उल्लास, विलास, मद एवं मधुरिमा सँ झंकृत कए अपन सोहाग केँ तँ नहि स्वर्णमय बनौलक? ओकर आचरण कतेक रहस्यमय छल? कहुखन सरल, कहुखन विनम्र, कहुखन कठोर और कहुखन कपटपूर्ण व्यवहार सँ सतत् आ रामानन्द केँ अगम और अनजाने तँ प्रतीत भेल जकर हृदयक किनारक पता ओकरा किन्नहु ने लागि सकलैक।

एहि तरहेँ उलझन मे पड़ि रामानन्द व्यथा, अवसाद और चिताक बोझ सँ दबि जखन ओकर निष्ठुरता एव विश्वासघात केँ स्मरण करए लगैत छल तँ प्रतीत होइक जे अहिल्या स्वप्न सन ओकरा आँखिक समक्ष ठाढ़ भए अपन आँखिक नोर, मधुर-मुस्की और अनुपम अनुराग सँ ओकरा अह्लादि स्नेह, और सान्त्वना सँ ओकर हृदयक पीड़ा केँ जेना हेरैत होए। रामानन्द केँ कखनहु तँ विश्वास होइक जे

ओ अवश्ये एहि धरातल पर ककरहु निमित्त धूप और ककरहु निमित्त छाह बनि ककरहु हृदय मे भयंकर आगि लगाए और ककरहु हृदय मे मधु वर्षा कए ककरहु तँ भैरव और ककरहु करुण विहागक राग सुनाए ककरहु जीवन केँ अनाथ और ककरहु जीवन केँ सनाथ करैत होयत।

रामानन्द लीला, विलास और लावण्यक लालसा मे विभोर भए अहिल्या केँ अशेष. ओकर अर्थ केँ असीम तथा ओकर इतिक चरण मे नत ओ ओकरा कला, गति और गीतिक रूप मे बुझलक जे स्नेह, सेवा तथा रक्षा भाव सँ प्रियाभाव केँ अभि-व्यक्त कएलक तखन कोना ओ अपन जीवनक सार केँ ककरहु अनका अर्पण करितैक जे ओकर ध्वस्त जीवन मे पुनि विद्युत सन आबि आशाक संचार केलकैक? किन्तु तखन ओकरा भेलैक की? जँ कोनो नर बाघ ओकरा नहि निगलि गेलैक वा पवनक झोंक मे ओ नहि उड़ि गेलैक तँ आखिर ओ गेलक कतए? अंत मे ओकरा विश्वास भेलैक जे समागमे मे तँ विरह रहैत अछि जकर आदि और अंत विरहे सँ होइछ। अतएव अवश्ये अहिल्या ओकरा क्षणिक सुख और अमर अवसाद सँ आवृत कए अपन आँखिक नोर सँ संकल्प कए अपन जीवन केँ ओकरा उसमरि सदाक हेतु अपर लोकक यात्रा कयलक। रामानन्द ओकर ओहि यौवन जल मे जे आगि छल जकरा मे पाथर जरि केँ चून भए जाइछ अपना अन्तःकरण केँ जराबए लागल तथा अहिल्याक विरह मे ओकरा हृदय मे जे कनक छल ओ कण-कण भए विघटित भए गेल जकरा पुनि विरहक पवन स्नेहक धूरा बूझि उड़ाकए ओकर ज्वाला सँ आकाश और पातालहु केँ तप्त कएलक।

यद्यपि अहिल्याक अचानक अदृश्य केँ लोक नाना प्रकारेँ आँकए लागल किन्तु अटकलबाजी सँ कतहु की यथार्थक पता चललैक अछि? रामानन्द केँ विश्वास भेलैक जे अहिल्या दुर्घटनाग्रस्त भए अपन जीवन केँ अंत कए अपर लोकक यात्रा कएलक तथा ओ ओकरा विराट और विश्वबंध रूप मे देखैत संध्याक छवि, गगनक नीलिमा, स्वर्ण राग एवं रक्त मेघ तथा वनरेखाक श्यामलता मे अहिल्याक अंगक विभिन्न कान्ति केँ देखि सम्मिलन और वियोग केँ प्रकृतिक अटल नियम बूझि अपना केँ शाश्वत कए ओकर चिर संचित स्नेह, सद्भावना और मधुमयी कल्पना केँ बिसरि दाम्पत्य जीवनक उलझन केँ सुलझेबाक निमित्त दोसर विवाह कए अपन दाम्पत्य जीवनक सुखक उपभोग ओहि भ्रमर सन करए लागल जे निशंक भए कली-कलीक रस पान करैत अछि।

# आठम

अहिल्याक प्रेमानिल मे दग्ध मेदिनी एक दिशि तँ अपन आकुलता कें प्रकट करबा मे असमर्थ छल और दोसर दिशि ओकर हृदय वियोगक आगि मे जड़ि अँगोरा भए गेल छलैक। ओकर हृदय ओहि दीप सन जड़ि भीतर सँ तँ कोयला भए गेल छलैक और बाहर सँ ओकर मुँह लाल वर्णाक लगैत छलैक। ओ अपार प्रेमक समुद्र मे खसि ओकर लहर मे लहराइत, विरहक भँमर मे पड़ि चक्कर काटए तथा अपार जलराशि मे ओकर प्राण उबडुब करए लागैत छल। ओकर प्रेमक सागर तेहेन ने विस्तृत एवं गंभीर छल जे ओकरा ने तँ ओर छलैक आ ने छोर। ओहि प्रेमक माया अपरम्पार छलैक। ओ ओकरा मन कें पवन सँ प्रेरित मेघमण्डल सन एम्हर-ओम्हर घुमबए लगैत छल तथा ओकरा दृढ़ विश्वास छलैक जे जेना धरती और आकाशक स्नेह वर्षाऋतु अएला पर जलदान सँ सिक्त होइछ तहिना ओकरो लोकनिक स्नेह समय पाबि अवश्य सिक्त होयतैक।

एवंक्रमें सोचि ओ अहिल्याक कोमल कुटिल कारी केश, द्वितीयाक चन्द्रमा सन ललाट, तिल फूल सन नाक, दुपहरिया फूल सन लाल अधर, हृदयक थारीक कुच कंचनक लड्डू एवं दनुफी फूल सन स्वेत शारीरिक कान्ति मे अपन मनक वृत्ति कें उलझाए ओकर रूप कें पीबाक निमित्त सतत् उन्मुखे रहैत छल। ओ ओकर स्नेह प्राप्त करबाक हेतु स्नेहलोक जेबाक उत्सुक तँ छल किन्तु जे लोक गगनहुँ सँ ऊँच छलैक ओतए कोना ओ जेतैक। अतएव ओ अपना कें धरती और आकाशक बीच मे पड़ल बुझि जे जाँतक दुइ मोट पलड़ा सन अपना बीचक वस्तु कें पीसैत अछि अपना कें अस्तित्वहीन बनबैत अपना माँथ कें आकाश, धड़ कें धरती, हृदय मे बसल अहिल्याक प्रेम कें समुद्र और नेत्र कें पक्षी बुझि दिव्य सौंदर्यक ज्योति कें ग्रहण कए धरातल सँ ऊपर उठबाक इच्छा मे लीन तँ होइत छल किन्तु ओ जकर नाथ छल ओकर नकेल तँ ओकरहि हाथ मे छलैक तथा ओ ओहि नकेल कें पकड़ने अपना दिशि खींचैत रहैत छल। अतएव ओ ओकरा सँ मुँह मोड़ि कोना अन्यत्र

जाइत ? इएह कारण छल जे मेदिनी अहिल्याक विरह मे उन्मत्त एवं ओकर विरहाग्नि मे जड़ैत ओ तपैत सूर्य सन राति-दिन आकाश-पाताल कें एक करैत रहैत छल।

काया और मायाक मोह-त्यागि मेदिनी अपना अन्तःकरण मे सत्य कें आरोपित कए नेत्रक डिबिया सँ अदृश्य प्रेम कें तकबाक हेतु विदाह तँ भेल किन्तु प्रेमक ध्रुव कें छूबाक हेतु प्राणहु तक गमाबए पड़ैत छैक। एवंक्रमें सोचि ओ मधुकर सन केतकीक काँट मे आबद्ध तथा फतिंगा सन दीपक ज्योति पर अपना ज्ञान कें अर्पण करबाक निमित्त उद्यत भए पटना कें प्रस्थान कएलक जतए ओकर आँखिक तारा ओकर आँखिक ज्योति हृदि कें प्रक्षिप्त छल।

वस्तुतः विरह दीपक बाती सन भीतर सँ जड़ि राख भए जाइछ और ऊपर सँ लाल प्रतीत होइछ। पलाश जड़ि कें जखन कोयला भए जाइछ तखने तँ फुलाइत अछि! प्रेमी मे कतबो गुण किएक ने रहौक किन्तु जावत ओकरा मे चून सन चूर्ण भए मेटेबाक भावना नहि होइछ तावत प्रेमक रंग नहि अबैछ।

पटनाक गली-कूची एवं सड़क पर भटकैत मेदिनी कें एक हप्ताह सँ बेसी भए गेलैक किन्तु ओकरा अहिल्याक कोनोटा पता नहि चललैक। ओ जखन कोनो सुन्दरि कें रिक्शा पर चढ़ल जाइत देखैत छल तँ भ्रमवश अहिल्या बुझि रिक्शाक पाछाँ दौड़ए लागैत छल तथा जँ ककरहु दूर सँ आइत देखैत छलैक तँ दौड़िकए ओकरा समीप अबैत छल। एहि हेतु प्रायः ओकरा लोक गंजन करैक तथा ओ अपमानो धरि सहैत छल। एहि तरहेँ मेदिनी निराश भए अपन जीवन के अन्त करबाक हेतु सोचितहि छल कि एक दिन ओ अहिल्या कें पटनाक गोलघरक समीप रिक्शा पर विद्यालय जाइत देखलक। ओ अपन हँसैत आँखि कें ओकरा ऊपर फेकलक तथा एक गोटाक आँखि दोसराक आँखि सँ तेना ने मिलल जे ओ चाँदनी और चन्द्रमा तथा गंगा और समुद्रक मिलन सन प्रतीत भेल। ओकरा अन्तःकरण मे आशाक संचार भेलैक तथा ओ ओहि सुकेशी कें देखि ओकर अधरक अमृतक अभिलाषा करए लागल।

मेदिनी रिक्शाक आगू मे ठाढ़ छल और अहिल्या रिक्शा पर बैसल। ओ दुहु कनखी सँ एक दोसरा कें देखैत छल किन्तु जखन आँखि-आँखि सँ मिलैत छलैक तथा एक दोसरा कें देखैत छलैक तँ लाज सँ आँखि स्वतः नीँचा भए जाइत छलैक। किछु कालक उपरान्त मौन कें भङ्ग करैत मेदिनी बाजल—"की आबहुँ चिह्नलहुँ? अहाँ तँ सुर-नर सभहुक मनोरञ्जन मे निमग्न भए विलास कें अपन विनोद बुझि कतोको मानवक चाह मे अपन आवास बनौने छी किन्तु अहाँक प्रेमपाश

मे आबद्ध हमरा सनक मनुष्यक कोन गति हेतैक ? हे अहिल्ये ! भंभरे तँ कमलक प्रीति कें जनैत अछि तथा प्रियाक वचसन कठोर हृदय मिलबाक आशे पर तँ अटकल रहैत अछि। अहाँ कें देखि हमरा अन्तःकरणक प्यास शान्त भए गेल तथा हमरा अहाँक ई अन्तिमे भेंट थिक।" एवंकमें कहि मेदिनी अपन दुहु हाथें अपन दुहु आँखिक नोर कें पोछए लागल और अहिल्या काठसन रिक्सा सँ उतरि ठाढ़े रहल जकरा मुँह मे ने तँ बोल छलैक आने आँखि मे नोर। ओकर आचरण तँ ओहि बौक सन छल जे अपन हृदयक व्यथा कें वाणीक द्वारा प्रकट करबहु मे असमर्थ रहैछ।

अहिल्या किछु काल ओतए अन्यमनस्क ठाढ़ रहलाक उपरान्त विद्यालय नहि जाए सोझे गोलघरक प्रांगण मे जाए एक मोट बेंच पर बैसल। मेदिनी सेहो ओहि बेंच पर ओकरहि लग बैसल तथा बाँम गाल परहुक तिलबा कें देखि तिलमिलाइत बाजल—"हे सुन्दरि ! जावत यौवन रहैछ तावतहि प्रियतमो रहैत अछि। पुरुष तँ ओहि सिंह सन होइछ जे एक कें मीड़ि दोसराक प्रतीक्षा करैत अछि। नारी केशक तँ ई हालत होइछ जे ओ भंभरा कें भगाए हँस (श्वेत) कें बसबैत अछि तथा कृष्ण केश सँ युक्त नारी कालिन्दी सरिता सन तावतहि विलासवती रहैछ जावत ओ श्वेत केश सँ युक्त भए सुसरिता बनि समुद्र सँ प्रसित नहि होइछ।

मेदिनीक विरह व्यथा सँ व्यथित एवं ओकर चिन्ता सँ कातर भए अहिल्या बजलीह—"हे नाथ ! मालतीक प्रेम मे उन्मत्त भ्रमर सन अपन बुद्धि और विवेक कें गमाए हमरा रूपक फतिंगा बनि अहाँ एतए धरि तँ एलहुँ किन्तु, कूपक बेंग कें की कतहु समुद्रक ज्ञान भेलैक अछि ? चान सन हमरा जखन यौवनक उदय भेल तखनहि राहु विरह बनि कें सेहो आएल। अतएव हमर यौवन घटि कए तेहेन ने क्षीण भए गेल अछि जे ककरहु सँ कहबोक इच्छा नहि होइछ जे एकरा कोन रोग ग्रासलकैक अछि। हाथीक टक्कर सँ जँ वृक्ष टूटैत छैक तँ ओकरा पर लतराएल लता की कतहु बचैत छैक ? कामिनीक आचरण तँ ओहि जल सन होइछ जे जेम्हर ढ़ाल देखैत अछि ओम्हरे ओ उन्मुख होइत अछि। जँ ओहि जलक मार्ग कें कोनहु बान्ह सँ रोकल जाइछ तँ जलक प्रवाह अवरुद्ध भेला सँ या तँ अपना निमित्त नव मार्गक निर्माण करैत अछि वा बान्हक ऊपर भए और प्रवाहित होइछ। हे स्वामी ! जकर मन जकरा मे रमल रहैछ ओकरा तँ ओकरेटाक टेक रहैत अछि। सोना और सोहागा जखन आगि पर चढ़ैत अछि तँ दुहु मिलि एकाकर भए जाइछ। भ्रमर जँ कमलक हेतु दग्ध होइछ तँ किएक नहि ओ कमलक रस और ओकर सुवासक पान करत ?"

एवंक्रमें कहि अहिल्या मेदिनीक स्नेह मे आतुर एवं ओकर प्रेम मे आन्हर भए लज्जा लाज और मान कें घोंटि अपन मादक सौंदर्य मे मत्त भए भ्रमर और फूलसन मेदिनीक संग पमौर करए लागल तथा विलास और विनोद मे तेना ने निमग्न भेल जे विरह जे ओकरा लोकनि कें दाहैत छल स्वतः होलिका बनि जड़िकए राख भए गेल। मेदिनी कें पाबि अहिल्याक अनुरक्त अन्तःकरण मे मदन अष्ट भाव सें गरजि उठल तथा ओ ओकर समस्त अङ्ग कें उल्लसित और उद्वेलित कएलक। अहिल्याक अंगक रंग एवं ओकर समस्त साज-श्रृंगार ध्वस्त भए गेल। ओकर केश फूजि गेलैक, कञ्चुकी मसकि गेलैक तथा हाथक चूड़ी फूटि गेलैक। एवंक्रमें काम क्रीड़ा मे निरत अहिल्या शशि सन शीतल और मेदिनी सूर्यसन तप्त भए एक दोसरा कें अपन रंग मे रंगि अनुराग सें अनुरक्त कएलक।

एहि तरहें राग-रभस मे निमग्न मेदिनी बाजल—"हे अहिल्ये ! ग्रीष्मक ताप सें सन्तप्त भए वृक्ष पुनि हरियर होइछ तथा जल सुखेला सें सरोवर कें जे हंस त्यागि अन्यत्र चल जाइछ ओ पुनि सरोवर कें जल सें पूर्ण भेला पर आपस अबैत अछि किन्तु तेलीक कोल्हूक बरद और कुम्हारक चक तें बामि भाग मे घुमैत अछि। नदी आबि कें तें समुद्र मे समाइत अछि किन्तु समुद्र चलि कें कतए समाओत ?

मेदिनीक जिज्ञासा भड़ल प्रश्नक उत्तर दैत अहिल्या बाजलि—"हे नाथ ! रत्न कतए तें रत्नाकर मे और कंचन कतए तें सुमेरु पर किन्तु विधाता जखन ओहि दुहुक भाग्य मे जुड़िबन्धन लिखि देल तें ओ कोनहु रूप मे अवश्य मिलबे टा करैछ। मुदा घोड़ा, नाव और रथ तें दहिन भाग मे हाँकल जाइछ। नारी तें बामि भागक अधिकारिणी थिक किन्तु निर्मल जल मे जें कारीख खसैत छैक तें ओ कारी भए जाइछ। जे कालिमा चन्द्रमा मे पड़ि ओकरा सें ओ कारी भेल ओहि कालिमा सें हमरा लोकनिक निर्मल प्रेम की कारी नहि होयत ? प्रेम तें पवित्र एवं निःष्कलंक होइछ जे सत्य पर आधारित रहैछ।

अहिल्याक कथा सें उद्विग्न होइत मेदिनी बाजल—"हे नारी ! अहाँ कारीखक गप करैत छी ? कारीख तें अहाँक दुनु नेत्र मे विराजि रहल अछि जकरा लोक काजर कहैछ। ई की श्रृंगारक वस्तु नहि थिक ? तिलबाक रूप मे कारी दाग सें अहाँक उज्जर गालक शोभा केहेन व्यापक भेल अछि ? जकरा कारी कहि अहाँ कालिमा बुझैत छिऐक वस्तुतः ओएह तें लावण्यक वृद्धि करैछ तथा यथार्थ वस्तुक अवलोकनो तें ओकरहि द्वारा होइछ। हे सुन्दरि ! आँखिक कारी पुतली जें नहि रहैत तें संसारक सौंदर्य के लोक कोना देखैत ? की ओ कारी पुतली हटेबाक वस्तु

थिकैक ? नारीक कारी मुद्रे मे तँ प्राणक सृजन और पालनक सामर्थ्य अछि जे कमलक ऊपर भँमरा सन प्रतीत होइछ। की ओकारा किओ हटा सकैछ ? रमनीक केशकलाप तथा नारीक भौंह मे जँ कारी उरेहल नहि रहैत तँ की नारी लावण्यवती किनहु होयत ? एहेन कोन वस्तु स्वच्छ और निर्मल अछि जतए कलंक रूप मे कारी सन्निहित नहि अछि ?''

मेदिनी प्रलापपूर्ण वाणी कें सूनि अहिल्या सकुचाएल बाजलि—"हे स्वामी ! क्रीड़ा कामकेलिक मनुहार थिक। जाहि नारी मे क्रीड़ाक भावना नहि रहैछ ओ सुनारी नहि थिक किन्तु जे प्यास समुद्रक जल सँ नहि बुझाएल ओ ओस सँ कहाँ तक बुझाए सकत तथा एक पाट मे दुई गोट नृपहु तँ नहि रहैछ ?

अहिल्याक उपर्युक्त कथा कें सूनि मेदिनी सगर्व बाजल—"हे नारी ! विविध व्यञ्जनक अभाव मे ओहि भोजन कें के नीक कहैत अछि ? जकर जीभ मीठ और खट्टा पदार्थक रस कें नहि चाखलक ओकरा मीठ और खट्टाक ज्ञान कोना हेतैक ? हे अहिल्ये ! एक चुरुक रस सँ कतहु मन भरलैक अछि ? भ्रमर अनेक फूलक सुवास लैत अछि और फूलो तँ अनेक भ्रमर कें अपन सुवास प्रदान करैत अछि किन्तु की ओ घृणित थिक ? काम तँ केलि थिक ओकरा प्रणय सँ कोन सम्बन्ध ?"

मेदिनीक तर्कपूर्ण उक्ति कें सुनि अहिल्या बाजलि—"हे नाथ ! जकरा प्रेम रहैत अछि ओकरा कतहु प्राण रहलैक अछि ? प्रिया तँ अपन प्राण प्रेमकरबाक पूर्वे प्रेमक वेदी पर उत्सर्गित अछि। ओकरा मृत्योक जखन डर नहि रहैछ तँ आर वस्तुक कथे कोन ? नारी तँ पुरुषक छाह थिक। ओ ओकरा बिना कोना रहत ? ओकर प्रेम सत पर निर्भर रहैत अछि जे ओकरा अन्तःकरण मे बल और नेत्र मे ज्योति दैत अछि। हे नाथ ! प्रेमक गति बड़ प्रबल होइछ जे दुख कें देखिए कें तँ मानवक अन्तःकरण मे सुप्रतिष्ठित भेल। तदर्थ जेना जलक प्रवाह बान्ह कें तोड़ि कादो, पाँक, सेँमार आदि कें ओतहि छोड़ि अपन मार्गक अनुसरण करैत अछि तहिना माया और ममता कें छोड़ि जेना जल-जल सँ तथा सूर्यक किरण-किरण सँ पृथक नहि भए तदाकार होइछ ओहिना हमरो लोकनि एक रूप, एकरस और एकरंग मे रंगि एकाकार भए जाए।

एवंक्रमें सोचि अहिल्या मेदिनीक संग सोझे बस पड़ाव कें प्रस्थान कएलक तथा राँचीक बस मे ओकरा संग रामानन्दक मान और मर्यादा कें कुचलि, सुमन कें मातृहीन बनाए सम्पूर्ण नारी जाति कें अविश्वास, विश्वासघात एवं कृतघ्नताक टीका लगाए राँची कें विदाह भेल।

# नवम

राँची आबि मेदिनी अहिल्या कें एक गोट होटल मे ठहराए अपन डेरा गेल जतए ओकर स्त्री प्रतीक्षा मे नितान्त व्यथित भए अपन नेत्र कें ओकरा ऐबाक बाट मे ओछाए नोर सँ ओकरा सिक्त कएलक। ओ मेदिनी कें देखितहि हुलसि आएल तथा ओकर आगत-स्वागत करए लागल। मेदिनी कें देखि ओकरा अपार आनन्द तँ होयबे कएल संगहि ओकर आचरण और व्यवहार मे परिवर्त्तन देखि विस्मय सेहो भेलैक।

भोजन-साजनक उपरान्त मेदिनो कें अपन चिकित्सालय मन पड़लैक जकरा ओ प्रायः छोड़िए देने छल। ओ ओकर पुनर्व्यवस्था मे निमग्न भए गेल तथा किछ दिन मे ओ अपन लुप्त मर्यादा कें पुनः प्राप्त कएलक। मेदिनी कें विश्वास छलैक जे दृढ़ स्नेह सँ विकसित एवं अमृत सन तारुण्य रस तथा यौवन रस सँ सिंचित तरुण जनक हृदय मे यद्यपि धन कमेबाक चिंता तँ नहि रहैछ किन्तु निर्धनक संभोगक कामना और असमर्थक क्रोध दुहु अकारण होइछ। तदर्थ ओकरा धनक तृष्णा प्रतीत भेलैक और ओ एहि हेतु पुनः अपन व्यवसाय मे संलग्न भए सुख और सौंदर्य दुहुक उपभोग करए लागल।

अहिल्या राँची आबि अपन हृदयक रस सँ मेदिनी कें सराबोर करैत अतीत कें बिसरि गेल। ओ ओकर मनक मधुर प्रतिमा बनि ओकरा नित्य सौंदर्यक मृदुल महिमा सँ अवगत करबैत अपन जीवन कें बीतबए लागल तथा ओकरा प्रतीत भेलैक जे निश्चये मेदिनी ओकर प्रेम मे अनुरक्त भए ओकर नेत्र-पुष्पक शोभापूर्ण अलि भेल जकरा ओ तेना ने अपन रूप पाश मे आबद्ध कएलक जे ओकर मन ओतहि ओझराए ओकर नैसर्गिक साधन, उत्फुल्ल यौवन, तरल विद्युत्प्रभा सन जाज्वल्यमान लावण्य एवं अलौकिक नम्रताक रसास्वादन करए लागल।

अहिल्याक योग्यता एवं अनुभव सँ प्रभावित भए एक गोट स्थानीय बालिका विद्यालय मे शिक्षिकाक स्थान पर ओकर नियुक्ति भेलैक। व्यवहार और

कार्यदक्षता सँ विद्यालयक सभ मोटा तँ प्रसन्न छल किन्तु ओकर मेदिनीक संगक प्रणय सभ मोटा कें अखड़ैत छलैक तथा एहि प्रसंग मे प्रायः टिका-टिप्पणियों तक भए जाइत छलैक। ओ होटल सँ हँटि एक डेरा किराया पर लए रहए लागलि। मेदिनी प्रायः ओकरा डेरा पर अबत जाइत छल तथा अहिल्या सेहो मेदिनीक ओतए जाइत अबैत छलैक। ओ दुहु मेघक बिजुली और जल सन सतत् अपना कें अनुभव करैत राग-अनुराग, प्रीति-आसक्ति आदिक द्वारा अपन प्रवृत्ति कें बदलैत अपन जीवन मे नवीनताक अनुभव करए लागल।

अहिल्याक सौंदर्य देखि मेदिनीक स्त्री फेकनी कें यद्यपि ईर्ष्या होइत छलैक किन्तु ओकर केराक कोसा सन उरोज, तिल फूल सन नाक, दाड़िम फूल सन गाल आ नील अपराजिताक फूल सन आँखि तथा ओकर अखाएल कारी केशक लट कें देखि ओहो ओकरा मे ओलराए जाइक और बड़ अह्लाद सँ ओ ओकरा सँ वार्ता करैत छल तथा ओकरा होइत छलैक जे अहिल्या कें ओकर पति स्वामि देलकैक अछि। अतएव फेकनीक नारी हृदय दया सँ द्रविभूत भए ओकरा असहाय ओ अबला बुझि स्नेह और करुणा सँ ओत-प्रोत तँ होइत छल किन्तु ओकर सरल नारी हृदय कें कोनहुटा ज्ञान नहि छलैक जे ओ असहाय-अबला नारी नहि नारीक रूप मे ओकरहि पर प्रहार करबाक कठोर वज्र छल जकरा पर ओकर पति मेदनी अपन समस्त स्नेह कें उझलि कुसुमक माला सन अहिल्या कें तेना ने अपन गरा मे सटौने छल जे बुझना जाइक जे चम्पाक वृक्ष कें पकड़ि ओकर डारि कें ओ झुकौने छल तथा कली कें बेधि भ्रमर सन ओ ओकर रस कें पान कए कौतुकपूर्ण केलि मे मानसरोवक हँस सन बिहरैत छल।

फेकनीक स्नेह और सद्‌भावनाक प्रति ऊपर सँ अहिल्या तँ ओकर कृतज्ञता प्रकट करैत छल किन्तु ओकरा अन्तःकरण मे ईर्ष्या और द्वेष बनि कें ओ ओकरा सतत् सालैत रहैत छलैक तथा मेदिनी कें ओ प्रायः ओकरा विरुद्ध मे उसकबैत रहैत छल। मेदिनी अहिल्या द्वारा प्रयुक्त विष सँ यद्यपि विषाक्त भए जाइत छल तथा स्त्री और पुरुष मध्य प्रायः मलीनता और कटुता उत्पन्न भए जाइत छलैक किन्तु फेकनी धैर्य, सहनशीलता और क्षमा सँ अपन टूटैत पारिवारिक सम्बन्धक कड़ी कें दृढ़ बनौने रहल। फेकनी मेदिनीक अन्तःकरणक अधिष्ठात्री तँ छल जे स्वच्छ और निर्मल रहितहुँ रक्त और विष सँ भरल, भयंकर एवं कृपण कायाक होयतहुँ अहिल्याक अतुल रूपराशि, अङ्ग-प्रत्यङ्गक पुलक, मुक्त वेणी, एवं प्रफुल्ल कमल नयन सँ दग्ध भए सतत् ओकरा अनुरंजित करैत छल और फेकनी दुग्धक माँछी सन

यद्यपि बाहर फेंकि देल गेल छल तथापि ओ ओहि चातकी सन छल जकर मन सतत् ओकरहि पर लागल रहैत छलैक।

फेकनी यद्यपि पतिक अवहेलना और उत्पीड़न सँ उत्पीड़ित होइत छल किन्तु ओकरा ओ नारी-जीवनक अभिशाप बुझि शील, सदाचार और पातिव्रत कें अपन धर्म बुझि अपमान और ग्लानि कें सहैत आन्तरिक तथ्य सँ अनभिज्ञ छल। ओकरा स्वप्नो मे नै विश्वास छलैक जे जकरा ओ स्नेह और करुणा देलैकक से ओकरा सन्ताप दए ओकरहि जीवन कें मेटेतैक। किन्तु हायरे नारीक आचरण! केहेन कलुषित थिक नारीक जीवन जे एक दोसराक सौभाग्य कें अपहरण कए प्रमुदित होइछ। अपन लावण्य एवं यौवनक जाल पसरि कौतूहल रूपें ओ पुरुषक आखेट करैत अछि जकर वाण शिकार कें तँ आनन्द प्रदान करैत अछि किन्तु कुलवधुक प्राण हरण करैत अछि।

अहिल्या और मेदिनीक प्रेम व्यापार फेकनी सँ प्रच्छन्न नहि रहि सकल। फेकनी कें जतेक अहिल्याक एहि उच्छृन्खल मनोवृत्ति पर व्यथा छलैक ओहि सँ बेसी ओकर ओछपन एवं कृतघ्नता सँ ओ दुखी छल। ओकरा सरल अन्तःकरण मे क्षोभ और सन्ताप तँ छलैक किन्तु दृढ़ विश्वास छलैक जे बबूरक गाछ मे आम किन्नहु ने फड़ैत छैक तथा कतहु विषक गाछ मे अमृतक फड़ फड़लैक अछि? स्त्री कें कुल, मान और मर्यादाक गेंठ मे बन्हि अपना हृदय मे मूक सन्ताप कें लए संस्कारक वशीभूत होमए पड़ैत छैक। ओकरा प्रेम मे तृप्ति रहैछ। ओ सात्विक और शुद्ध प्रेम होइछ जे क्षणिक तड़पब सँ रहित एवं स्निग्ध मधुर भावनाक दाह सँ पृथक रहैत अछि जकरा मे अभिलाषा उन्माद नहि भए सुस्थिरता रहैछ। रूप, यौवन और जीवन तँ क्षणिक थिक। तोड़ल फूल सन मुरझाएल रूप, विगलित यौवन तथा आमक चोकर सन कपोल ककरा और कतेक काल धरि आकर्षण प्रदान करतैक? एहि तरहें विचारि फेकनीक नारी हृदय अपन अन्तराल मे व्यथा और आँचर मे दूध लए अपन त्याग और धैर्य कें अवलम्बन बनाए अहिल्या और मेदिनीक समस्त प्रेमालाप कें देखैत ओ सुनैत रहल और अहिल्या जीवन मे उन्माद और नेत्र मे मद कें लए गोरवर्णक तर सँ रक्त वर्णक कान्ति कें छिटकबैत आमक फाँक सन-सन नेत्रक द्वारा झलकि कें मेदिनीक आन्तरिक भावना कें देखैत, अपन अधरक बिहुँसब सँ ओकरा उधसबैत, पायरक नुपूर एवं डाँड़क करधनीक झंकार सँ मन कें झनकबैत तथा अधर मे अपन अधर कें डालि निश्शंक भाव सँ प्रणयकेलि मे निमग्न होइत छल और फेकनीक स्थिति तँ प्रेमक विचार सँ ओहि नारी सन छल जे ने तँ प्रेयसीक रूप मे अपन हृदयक तापक शान्तिक निमित्त सहचरी होइछ आ ने

परिणीता रूप मे अपन पतिक रंजिका मात्र होइछ और ने सहधर्मिणी रूप मे पतिक अखण्ड प्रेमक अधिकारिणी होइछ तथा जकरा मे क्रमशः अतृप्ति, ईर्ष्या और शान्ति एवं विश्रांति रहैछ तथा जकर उद्देश्य क्रमशः आदान, प्रदान और आदान-प्रदान दुइ रहैछ, ओ ओहि नारीक प्रतीक छल जे अपन समटा स्नेह, सुख और ऐहेन्ता के अपन पतिकें अर्पण कए ओकर सहचरी बुझैत अछि और अहिल्या जे रूप, गुण, स्नेह तथा अनुराग सँ प्रेम कें क्रीड़ा आ विनोदक वस्तु बुझैत छलैक ओकर कृत्रिम ऐश्वर्यक दिशि धैर्य, विनय और लाज कें छोड़ि आकर्षित भेल।

मेदिनी और अहिल्याक एहि तरहक प्रेमालप यद्यपि मेदिनीक डेराक आन-आन गोटा कें नीक नहि लगैत छलैक तथा ओकर मित्र लोकनि एहि हेतु ओकर निन्दा सेहो करैत छलैक किन्तु तकर ओकरा कोनहुटा विचार नहि छलैक। अहिल्याक वैभव-छवि, यौवन एवं वासनाक आसवक निमित्त ओ तेना ने अधीर छल जे ओकरा ने तँ जगतक उपहासे वा ने निराशाक झोंके ओकरा उद्देश्य-पूर्ति मे बाधक भेलैक।

एवंक्रमें अहिल्या और मेदिनीक प्रेम पनपि कें मजबूत रूप मे परिणत भेल तथा ओ पल्लवित एवं पुष्पित होमय लागल तथा अहिल्या चिर संचित आशा कें लए नीड़क निर्माण करए लागलि। ओ नवागंतुकक मधुमयी कल्पना मे डूबैत अपन प्रतीक्षाक दिवसकें गणए लागल। ओ यद्यपि वात्सल्यक दुर्भर पीड़ा एवं कष्ट कें सहैत छल तथापि भावी जननीक सरस गौरवक प्रत्याशा ओकरा मुखमण्डल पर चमकि उठलैक तथा शीघ्रे अहिल्या पुत्रक माता बनि अपन अंक मे चान सन शिशु कें खेलाबैत मातृरूपक दिव्य सौंदर्य कें अभिव्यक्त करए लागलि जे सृजन, पालन, लालन-पोषण आदिक भाव तथा अपेक्षित त्याग, सेवा, ममता, माधुर्य आदि सँ नारीक महिमा कें असीम बनबैत अछि। वस्तुतः नारीए तँ ओ महासेतु थिक जकरा पर अदृश्य सँ चलि नव मनुज, नव प्राण दृश्य जगत मे अबैत अछि तथा नारीए ओ कोष्ट थिक जतए ईश्वर, देव, दानव और मनुष्य सभ प्रच्छन्न रूप मे आकार ग्रहण करैत अछि। केवल एहि गुणक हेतु तँ नारी वन्दनीय थिक।

अहिल्याक पुत्रोत्पत्तिक चर्चा सर्वत्र होमय लागल। विद्यालयक अधिकारी ओकरा अवैध सम्बन्ध कें जानि विद्यालयक सेवा सँ मुक्त कए देल तथा अहिल्या विद्यालयक सेवा सँ निवृत्त भए मेदिनीक घर चल तँ आएल किन्तु फेकनी कोना अपन सत्व कें अपनहि गमाबैत? ओ ओकरा देखितहि बिहारि भए गेल तथा अकथनीय विभूति सँ सम्पन्न, सौंदर्य और सुषमा सँ प्रकाशमान ओकर अन्तःकरण वज्र सन कठोर भए ज्वालामुखीक रूप मे परिवर्तित भए ओ एक गोट अद्भुत

अलौकिक शक्तिक रूप मे मेदिनी कें प्रतिभाषित भेल जकर प्रतिवाद ओहि अदम्य शक्तिक समक्ष निरर्थक छल ।

फेकनीक नेत्र मे निष्कंप ज्ञान, भाव मे नम्रता और मुखमण्डल पर प्रफुल्लता तँ छल किन्तु ओकरा अन्तःकरण मे सत्य तेना ने सुप्रतिष्ठित भए गेल छलैक जे ओकरा ओ महान बनाए अदम्य शक्तिशालिनीक रूप मे प्रस्तुत कएलक जकरा पतिक निष्ठुर उपेक्षो घरि आघात नहि कए सकल आ ने पतिक उपहास और जीवनक निराशाक झोंकि ओकरा लक्ष्य-भ्रष्ट कए सकलैक । ओ अपन पतिक अर्द्धांगिनी छल जे ने केवल प्रेम करवाक निमित्त होइछ वरन् अपन पतिक पथ प्रदर्शन, हृदयक हर्ष, उज्ज्वल स्फूर्ति और अभिलाषाक पूर्तिक निमित्त सेहो होइत अछि । ओ अपना पति कें विपत्तिक गर्त मे कोना खसए दैत ? छल, भय आ लोभ सँ कोना ओकरा पतित होमय दैत ? यद्यपि ओ त्यागक प्रतिमूर्त्ति छल तथा ने तँ ओ प्रेमक प्रतिदान चाहैत छल आ ने अपना कारणे अपन पति कें कष्टे देब ओकरा अभिष्ट छलैक किन्तु ओकरा अपन पतिक अनिष्ट कोनहु प्रकारें साह्य नहि छल । अतएव ओ अहिल्या कें अपन गृह मे कोना रहए दैत जकर ओ गृह लक्ष्मी छल । अर्धांगिनीक गरिमा ओकर कल्पना कें तेना ने परिष्कृत कएलक जे ओकरा कोमल नारी अन्तःकरण मे अहिल्याक निरीह एवं निष्कलंक नव-जात नेनाक प्रति ने तँ कोनहुटा मोह आने ममतेक उदय भेल । फेकनी ओहि नेना कें वासनापूर्ण कुत्सित मनोवृत्तिक कलंक बुझैत छल जकरा छाहो सँ ओकरा डर होइत छलैक । ओकरा विश्वास छलैक जे पापक पर्यवसान दुख मे और पुण्यक परिणति सुख मे होइछ यद्यपि ओ स्वभाव सँ मृदुल और सहानुभूति-शील छल किन्तु अपन कुल और गोत्रक वृद्धि ओकरा इष्ट छलैक । अतएव ओ ओहि नेना कें कोना स्नेह करितैक ?

मेदिनीक सोझा मे एक दिशि तँ दिव्यताक काल्पनिक गगन-चुम्बी शिखर छल जकरा ऊपर सँ कर्त्तव्य ओकरा आह्वान करैत छलैक और दोसर दिशि अनलपूर्ण शोणितक प्रलोभन और ओकर मध्य मे संसारक सम्बन्धक प्रस्तरीय भूतल जकरा पारकरब ओकरा हेतु दुष्कर छल । कहुखन ओम्हर और कहुखन संसारक प्रस्तरीय भूतल पर ओकर दृष्टि रुकि जाइक तथा ओ द्विविधा मे निमग्न भए जाइक ।

फेकनीक तिरस्कार सँ तिरस्कृत एवं अपमान सँ अपमानित भए अहिल्या ओकरा ओतए सँ विदाह भए गेल । मेदिनी सेहो ओकरहि संग घर सँ बाहर भेल तथा ओकरा पुनः एक छोट डेरा किराया पर लए ओहि मे रखि आनै दिन सन अपन कार्य मे निरत भेल । ओकरा अन्तःकरण कें एक दिशि फेकनीक विद्रोहमयी

प्रवृत्ति और दोसर दिशि अहिल्याक करुणात्मक असहाय आकृति झकझोड़ैत छल तथा ओ कहुखन तँ अहिल्याक जीवनक अभिशाप सँ अपना कें मुक्त राखि फेकनीक संग अपन दाम्पत्यक उपभोगक प्रसंग मे सोचए लागैत छल और कहुखन अहिल्याक त्याग और आत्मसमर्पण ओकरा विह्वल बनबैत छल। किन्तु अनुरक्त जकरा स्तुति करैछ ओकरहि विरक्त निन्दा करैत अछि। उत्कृष्ट सौंदर्य कें रहितहुँ निर्गन्ध भेला सँ चित्त कनेर कें नहि चाहैत अछि। यश, कीर्ति, प्रशंसा आदिक आवरणक नीचाँ मनुष्यक सु॰क लिप्सा प्रक्षिप्त रहैत अछि तथा आरम्भ मे जे उल्लास मनुष्य कें भेटैत छैक ओ पश्चात् ओहि रूप मे ओकरा नहि रहैत छैक। जगतक प्रत्येक कार्य स्वार्थ पूर्त्तिक हेतु होइछ। अपन अन्तःकरणक प्रेरणाक परितोषक निमित्त लोक प्रेम करैत अछि जे अन्तःकरणक वृत्त नहि आदान-प्रदानक व्यापार और मनक मनोरंजनक निमित्त होइछ। मेदिनीक अन्तःकरण मे सेहो परिवर्तन भेल। ओ अहिल्या जे ओकरा प्रपञ्च मे पड़ि अपन सोनाक महल कें डाहि ओकर संग एतए धरि आएल ओकर ओ खोजो धरि नहि करैत छलैक। ओकरा वस्त्रक अभाव छलैक, भोजनक अभाव छलैक तथा ओकर दुर्गति तेहेन ने भेल छलैक जे ओकर अबोध नेना कें दूधो तक •ने भेटैत छलैक किन्तु ओ निराश और हताश छल।

दुर्दिन मनुष्य कें की सभ ने करबैत छैक। अहिल्या कें मेदिनी सेहो उपेक्षा कए देल। फलस्वरूप ओकर हालत बड़ दयनीय भए गेलैक। क्षुधा सँ पीड़ित भए ओ अपन जीविकाक हेतु एक गोट डेरा मे दाइक कार्य करय तँ लागलि किन्तु ओकर दुर्भाग्य तँ अगेँ-अगेँ जाइत छलैक। डेराक मालकिनी कें ओकर रूप विभा पर ईर्ष्या भेलैक तथा ओ ओकरा अपन हेतु अहितकर बुझि ओतए तँ सेहो हटा देलकैक।

अपरिमित व्यथा सँ ओ तेहेन ने व्यथित छल जे ओकर हृदयक क्लेश ओकरा आँखिक नोर बनि सावनक वर्षाक नीर सन बहए लागल। ओकर शरीर परहक कुसुमी फाटल चीर वर्षाक अभाव मे फाटल भूमि सन प्रतीत भेलैक तथा ओकर केशक लट ओकरा माँथ पर चढ़ल भुजंग सन बुझि पड़ैक जे सिनेहक तेल बिना भए गेल छल। ओकर दुखक वृक्ष तेना ने बढ़ऽ लागल जे ओकर मूल पाताल मे और शाखा आकाश मे पसरल तथा ओकर छाह समस्त पृथ्वी कें आपूरित करए लागल।

अहिल्या विवश भए मेदिनीक ओतए पुनः गेल तथा घरक बाहरे मे ठाढ़ छल कि फेकनीक नजड़ि ओकरा पर पड़लैक। ओ हाथ मे बारहनि लए दौड़लि

और ओकरा पर बरसि पड़ल। मेदिनी अहिल्या के देखि सेहो उफान तोड़ए लागल तथा ओकरा मारि और उलहन सँ उपेक्षए लागल। अहिल्या काठ सन ठाढ़ भए मूक और बहिर भए सब किछु सुनैत और सहैत रहल। आसमर्द सुनि लोक उमड़ि नँ आएल किन्तु ककरा कोन गर्ज छलैक जे ओहि झकलति मे पड़ैत ? लोक तँ तमसगीर छल। तमाशा देखलक और अपन घर गेल।

घृणताक भार सँ दबल अहिल्या ओतए सँ तँ छिटकल किन्तु ओकर पावरक नीचा सँ धरती घसकि रहल छल और आँखिक सोझाँ मे अन्हार भए गेल छलैक। प्रकृत केवल ओकरा शरीरेटा के सुकुमार नहि बनाए वरन् ओकरा मायक आसन दए ओकरा हृदय मे समवदेना, आँखि मे आर्द्रता एवं स्वभाव मे कोमलता के सेहो देलकैक जे स्वतः ओकरहि विनाशक कारण तँ बनल किन्तु हाय रे पुरुषक आचरण ! ओ अपन मनोविनोदक निमित्त नारीत्व के नष्ट कए ओकरा संसारक विकृत प्राणी मानैत अछि। आन्धीसन नारीक नारीत्व मेघक छवि सन पुरुषक जीवन मे तँ उतरैत अछि किन्तु पुरुष ओकरा ध्वंस कए धूड़ा बनाए ओकर यौवन पक्षीक व्याध तथा यौवन कुरंगिनीक उत्पीड़क केसरी बनि अज्ञात दिशा मे अदृश्य भए जाइछ।

अहिल्या अपन नारीत्व के गमाए अपन नेना के छाती लगौलक तथा मेदिनीक निष्ठुरता सँ ओकर चित्त तेना ने विदीर्ण भेलैक जे ओकर सभटा धैर्य सन्ताप बनि ओकर नेत्रक नोर भए खसए लागल जाहि सँ ओकर हृदयक वस्त्र, अङ्कक कन्चुकी एवं ओकर आँचर भीजि गेलैक आ ओ अपन समस्त शृंगार के अपना मे समेटि ओतए सँ हजारीबाग आएल और जीवन-यापनक कोनो आन साधन नहि पाबि भीख माँगब प्रारम्भ तँ कएलक किन्तु ओकरा ललाटक विधाताक वज्र लेखिनी सँ लिखल अदृष्ट लेख तँ ओहिना छल। मनुष्यक अन्दर जे बर्बरताक अक्षय अंश रहैछ ओ तँ सतत् ओहने नारीके तकैत फिरैत अछि।

ओतहु ओकर साँझक मेघक रक्तिम वर्णक आभा सँ चौंधिआए किछु पुरुष ओकर नारीत्व के भ्रष्ट करबाक हेतु उद्यत तँ भेल किन्तु अहिल्या भयभीत हरिणी सन ओतए सँ पड़ाए पटनाक ओहि बस मे पुनः सत्वर चढ़ि पटना के प्रस्थान कएलक जकरा मे ओ चढ़ि कहिओ पटना सँ राँची आएल छल। ओहि समय ओ पूर्णिमाक शशि छल जे अमावस्याक अन्हार रजनी भए गेल। ओकर सघन केश आकाश सँ नक्षत्र के टूटि भूतल पर ओंघरएबा सन लगैक जे अस्ति छल ओएह नास्ति भेल तथा जे अस्तित्ववान छल सएह अस्तित्वहीन भए पुनः अपन स्नेह, समृद्धि और लुप्त वैभव के ताकए ओतहि प्रस्थान कएलक।

हजारीबाग सँ बस फूजल तथा सड़कक कातक गाम घर-आदि जेना द्रुतगति सँ सम्मुख आबि पाछाँ छुटैत छल तहिना अहिल्याक मन मे विचारक शृंखला सेहो उठैत छल। ओकरा अन्तःकरण मे प्यास तँ छलैक किन्तु भाग्य ओकरा मृग मरीचिका मे परिणत कएलकैक। ओ सतत् अपन सौंदर्यक हाट लगौलक। अपन हृदयक समस्तक कोमल भावना कें बकुचि, आत्मसमर्पणक समग्र इच्छा कें कुचलि, अपन रूपक क्रय-विक्रय कएलक और परिणाम मे ओकरा भेटलैक निराशा और ओकर रूपक अन्त।

ओकरा की उपलब्धि भेलैक वा ओकरा की क्षति भेलैक एकर विचार करबाक की ओकरा अवसरो भेटलैक? जीवनक एक विशेष अवस्था तक संसार ओकरा झूठ प्रशंसाक मदिरा सँ उन्मत्त करैत रहल तथा ओकर सौंदर्य दीप पर शलभ सन मँड़राइत तँ रहल किन्तु ओहि मद कें अन्त भेला पर तथा ओहि बाढ़ि कें घटला पर की किओ स्नेह और सद्भावनाक नेत्रो तक उठौलकैक? की ओकर तिरस्कृत स्त्रीत्व एवं रूपक लोभी द्वारा प्रशंसित रूप वैभवक भग्नावशेष ओकर सन्तप्त हृदय कें कोनहु प्रकारें सान्त्वना दए सकलैक? जे परिस्थिति ओकरा पारिवारिक जीवन सँ बहिष्कार कएलक, जे पुरुष ओकर अन्हार भविष्य के सोनाक सपना सँ झँपलक, जे व्यक्ति ओकर नूपुरक रुनझुन शब्दक संग अपन हृदयक राग कें मिलौलक तथा जे समाज ओकरा ओहि तरहें रूपक हाट लगेबाक लेल विवश एवं उत्साहित कएलकैक से की ओकर जीवनक भार कम करबाक हेतु समक्ष औतैक? ओ तँ सतत् अपन सुखक संगी पर विश्वास कएलकैक तथा ओकरा लोकनिक प्रत्येक जिज्ञासा मे वास्तविक सदिच्छा कें देखौलकैक। किन्तु की ओकर अनुभव कतहु भ्रामक तँ ने होयत? एवंक्रमक विचारक प्रवाह मे प्रवाहित होइत अहिल्या कहुखन तँ अपन कोरक नेना कें स्नेह सँ ताकए लगैक और कहुखन ओकरा अपन आँचर मे झाँपि अपना कें ओकर असीम वात्सल्यमयी जननी युक्ति रमणी सुलभ विशेषता कें बिसरबाक उपक्रम करए लगैत छल।

जेना-जेना बस आगाँ बढ़ल जाइत छलैक तहिना अहिल्याक अन्तःकरण मे उथल-पुथल होइत छल। समयक गति धनुष सँ छूटल तीरसन आगू रहैत छैक। जीवनक जाहि परिस्थिति कें लोक पाछाँ छोड़ैत अछि ओ पुनः आपस नहि होइछ। अतएव ओकर अनुरूप अपना कें बनाएब जीवन कें एक वृत्त मे घुमेबासन होइछ। एहि तरहें सोचि अहिल्या लगभग पन्द्रह वर्षक उपरान्त ओतहि आए रहल अछि जतए ओकरा जीवन, यौवन और यश तँ प्राप्त भेल किन्तु दुर्भाग्य ओकरा उपयोग

नहि करए दए ओकरा जीवन के नव युगक नव अभिशाप बनौलकैक जकर परिहारो तँ नवीने होयत।

विचारक प्रवाह मे निमग्न अहिल्याक बस बख्तियारपुर आयल। ओतए ओहि बस मे एक अधेर वयसक पुरुष चढ़ल। ओ बड़ ध्यान सँ अहिल्या दिसि ताकए लागल तथा किछु कालक उपरान्त ओ नितान्त नम्र भए बाजल—"अहिल्या बहिन! अहाँ एना खिन्न किएक लगैत छी। अहाँक पूर्णिमाक शशि सन रूप अमावस्याक अन्धकारमयी रजनी भए गेल अछि। अङ्गक कान्ति क्षीण और मलीन भेल अछि। नेत्र खाधि सन, कपोलक त्वचा सिकुरल, उन्नत मस्तक झुकल तथा नागिन सन केश रुक्ष लगैत अछि। अहाँ दए तँ सुनल दुर्घटना ग्रस्त भए अपन के अन्त कएलहुँ किन्तु भगवानक कृपा जे अहाँ के पुनः देखलहुँ।" अहिल्या सेहो ओहि पुरुष कें चीन्हि बाजल—"नरेश! दुर्घटना तँ अवश्य भेलैक किन्तु एकटा दुर्घटना तँ जीवन कें समस्त उलझन सँ मुक्त करैत अछि और दोसर जीवन के और अधिक उलझन मे दैत अछि। हमर दुर्घटना तेहने सन छल।

नरेश विश्वविद्यालयक चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी छल। अहिल्या जखन विश्वविद्यालय मे छात्रा छल तँ ओ ओकरहि विभाग मे काज करैत छलैक। ओना तँ ओ प्रत्येक छात्र, छात्रा एवं प्राध्यापक लोकनिक प्रियपात्र छल किन्तु ओकरा पर अहिल्या कें बड़ दया रहैत छलैक तथा ओहो ओकरा अपनहि बहिन सन बुझैत छल।

अहिल्याक आकृति कें देखि नरेश कें बड़ दुख भेलैक। ओकर विद्यालयीय जीवनक ठाठ-बाठ, ओरहब-पहिरब एवं यश-प्रतिष्ठा आदि कें मन पारि व्यथित भए ओ अहिल्या सँ पुछलक—"बहिन अहाँ कतए जेबैक और पटना मे अहाँ कतए रहबैक!" नरेशक जिज्ञासाक उत्तर दैत अहिल्या बाजलि— 'नरेश! जे महासागर मे पड़ि ओकर भंभर मे चक्कर काटैत अछि ओकरा की कतहु ओर-छोर भेटैत छैक। प्रारब्ध जतए लए जाएत ओतहि जाएब। एवंक्रमें कहि अहिल्याक आँखि मे नोर उमड़ि आएल। तथा ओकर अश्रु जल सँ ओकर अलक, आँचर तथा आँखिक आँजन भीजि कें बहए लागल।

अहिल्याक निराश उत्तर कें सूनि नरेश मर्माहत भए बाजल—"हे बहिन! भाय सँ तँ बहिन अपन दुखड़ा कें नहि छिपबैत अछि। की अहाँ हमरा अपन भाय नहि बुझैत छलहुँ तथा जखन हम कोनहु चिन्ता मे निमग्न रही तँ की अहाँ हमरा बहिनिक पावन स्नेह कें दए ओहि सँ हमरा मुक्त नहि कएलहुँ? हे बहिन! अहाँक देल गहना ओखन हमरा स्त्रीक अङ्ग पर अहाँक प्रीति कें स्मरण करबैत

अछि। अहाँ प्रायः बिसरि गेलिएक किन्तु हमरा तँ मने अछि जे कोना अहाँ हमरा विवाहक निमित्त समटा खर्चाकि ओगार करौने रहिऐक। अतएव अहाँ हमर अपन समस्त व्यथा कें कहू। भाई सँ बहिन कें कोन संकोच ?" किन्तु अहिल्याक परिस्थिति बड़ विचित्र सन छल। ओ जे कहिओ अपन अलबेली चंपक, कुंद, मुचुकुन्द, मौलश्री, पुष्पावती, जूही, चमेली तथा सुरस रसबेली आदि सखी सन मालतीक रूप मे बहराइत छल तँ लतैक जेना कि कमलिनी और कुमुदिनी प्रफुल्लित भए अपन सुवास, परिमल और आमोद सँ लोक कें जे विदग्ध कएलक से ओकरा स्वतः अपनहि दुर्दशाक हाल कोना कहतैक ? किन्तु भाय और बहिनिक जे व्यापक सम्बन्ध छल ! बहिन अपन कोनो मनक उरमा कें अपन भाय सँ अप्रकट नहि रखैत अछि।

अतएव नरेशक आग्रह एवं स्नेहपूर्ण वाणी अहिल्याक अन्तःकरण मे एक गोट मूक वेदना कें उत्पन्न कएलक तथा ओ ओहि सँ विरक्त भए बाजल—"नरेश ! सभ किछु मन अछि किन्तु ओहि सभ सँ की होयतैक ? अहाँ जँ ओहि सन्ताप सँ अवगते होएब-तँ की ओकर निवारण होएतैक ? ओ तँ ओहिना रहतैक संगहि लोक कें और हँसबाक एक गोट अवसर भेटतैक। अतएव हमर व्यथा कें हमरहि अन्तःकरण मे प्रक्षिप्त रहए दिऔक।"

अहिल्याक उपर्युक्त कथन सँ नितान्त दुखी भए नरेश बाजल— "हे बहिन ! अहाँ अमरा जनैत छी। हम चाहे मरि जाएब से नीक किन्तु अपना बहिनिक सन्ताप कें अपना भरि दूर करबाक प्रयास अवश्य करब ई हमर दृढ़ संकल्प थिक। हे बहिन ! एहेन के पापी भाय होयत जकरा हृदय मे बहिनिक स्नेह नहि होइक। अहाँ कहू अथवा नहि किन्तु अहाँ आब कतहु नहि हमरा जीबैत जाए सकैत छी। जावत अहाँक दुख-दूर नहि होयत, तावत अहाँ के अपन भायक ओतहि रहए पड़त। एक गोट भायक अपन बहिनि सँ साग्रह थिक।" नरेशक आवेशक वाणी कें सुनि अहिल्या व्यथा सँ व्यथित भए बाजलि—"हे भाय ! अहाँक ई बहिन पापीन थिक। एकर प्रपञ्चपूर्ण पापक कथा कें सूनि अपना हृदय कें खिन्न और कलुषित जनु बनाउ। ई गार्त मे खसल नरकक कोड़ा थिक जकर दुर्गतिए होयब उचित थिक।" एवंक्रमें कहि अहिल्या अपन आँचर सँ मुँह झाँपि कानए लागलि। नरेशक आँखिक नोर सेहो अविरल रूप मे प्रवाहित होमए लगलैक। किछु कालक उपरान्त नरेश मौन कें भङ्ग करैत बाजल—"हे बहिन ! तों अपना लेल भने किछ रहऽ हमर तँ तों बहिन छह। तों हमरा लेल तँ चन्द्रकला सन स्वच्छ, जल सन पवित्र एवं फूल सन कोमल छह। की कोनो भाय अपन बहिन कें कोनहु अवस्था मे अपराधिनी

बुझलक अछि ? भाइए-बहिनिक प्रेम मे तँ सत्य सन्निहित अछि। केवल ओकरहि प्रताप सँ आगि मे ताप, जल मे शीतलता और सूर्य एवं चन्द्र मे ज्योत्सना छैक। हे बहिन ! जगत मे केओ अमर नहि भेल अछि। केवल गुणे टा तँ शेष रहैत अछि। फूल सुखाए जाइछ किन्तु ओकर सुवास ओहिना रहैत छैक। संसार मे के यश कें नहि बेचलक, के ओकरा मोल नहि लेलक तथा के यशक व्यापार नहि केलक।"

नरेशक एवंक्रमक वचन कें सुनि अहिल्याक नेत्र सँ पुनः नोरक धार बहए लागल तथा ओ सिसकैत बाजलि—"भाई ! अहाँ धन्य छी। एहि अभागिनी कें किओ नोर पोछनिहार तँ छैक। एहि तरहें कहि ओ सकुचाइत अपन जीवनक करुण-कथा सँ नरेश कें अवगत कराए ओकरा पायर पर खसि पड़ल। नरेश अहिल्या कें उठाए अपन हाथ सँ आँखिक नोर कें पोछि बाजल—"हे बहिन ! स्त्री और पृथ्वी तँ पुरुषत्वक चेरी थिक; जे ओकरा जीतैत अछि ई ओकरहि होइछ। जकरा भुजा मे बल रहैछ ओकर मुट्ठी मजबूत रहैछ। ओकरा सँ ओकर स्त्री और भूमि कें केओ ने छीनि सकैत अछि। एहि मे ने तँ अहाँक आ ने ककरो आनेक दोष छैक। ई सभ टा अदृष्टक फल थिकैक। भावी कें के मेटौतैक ? किन्तु आब एहि सभ सँ की होयत ? पटना मे हमर डेरा अछि। ओतए अहाँक भाउज रहैत अछि। अहाँक नाम ओ जनैत अछि किन्तु ओकरा तँ आने गोटा सन ई बुझल छैक जे आब अहाँ एहि लोकक नहि परलोकक वासी छी। किन्तु अहाँ कें प्राप्त कए अहाँक भाउज बड़ उल्लसित होयत। अहाँ आब किन्नहु ने कतहु जाए। अपन भायक ओतए की बहिन नहि रहैत छैक ? ई हमर आग्रह थिक। हमरहु कोनो बहिन नहि छल। अहाँ के बहिनिक रूप मे पाबि हमहूँ अपन जीवन कें सनाथ करब।"

एवंक्रमें कहि नरेश अपन हृदयक विशालता सँ अपन कर्त्तव्यक भावना कें अधिक व्यापक बनाए भाय-बहिनिक पवित्र स्नेहक बन्हन के दृढ़ बनौलक और अहिल्या नरेशक प्रश्रयक छाता कें पाबि अपना कें कनेक कालक हेतु यद्यपि विषादक व्यथा सँ मुक्त तँ भेल किन्तु ओकर तृषा तँ ओहि प्यासल सन छल जकर प्यास कें समुद्रक जलराशि तँ तृप्त नहि कए सकल किन्तु ओसक जलकण ओकरा तृप्त करबाक प्रयास कए रहल छल।

# दसम

पटनाक बस पड़ाव पर बस सँ उतड़ि नरेश अहिल्याक नेना कें कोर मे लए ओकरा संग अपन डेरा पर आएल। डेरा अबितहि ओ अपना स्त्री कें सोर पाड़ैत बाजल—"हे, ननदि ऐलीह अछि। नरेशक स्त्री उपहास बुझि बजलीह—"कि तँ हम परिछनि करबनि! किन्तु जखने ओ हुलकी मारि देखलनि तँ अहिल्या कें सँग मे देखि लोटा मे पानि लए हुलसि कए आबि ओकर पायर धोए अरिआति कें घर लए गेल? नरेश अहिल्याक परिचय ओकरा सँ करौलक तथा नरेशक स्त्री महदाएल बाजल जे—"ई ओकर भाग्य थिकैक जे ओकरो ननदि भेटलैक अछि। आगत स्वागतक उपरान्त भोजन-साजन भेल तथा नरेशक स्त्री अहिल्याक नेना कें तेल-काजर लगाए दुलार-मलार करए लागलि।

एवंक्रमें अहिल्या नरेशक डेरा मे हर्ष सँ रहैत तँ छल तथा नरेश और ओकर स्त्री ओकरा पाबि बड़ उल्लसित तँ रहैत छल किन्तु अहिल्या जे सतत् खिन्न और अन्यमनस्के रहैत छल ओकरो लोकनि कें अपन व्यथा सँ व्यथित एवं चिन्ता सँ कातर कए हतोत्साह बनबैत छल। नरेशक स्त्री अहिल्या कें सतत् परबोधि ओकरा चिन्ता सँ मुक्त बनेबाक प्रयास तँ करैत छल किन्तु ओकर नारी हृदयक अभावक पूर्त्ति केवल सान्त्वना सँ कोना भए सकैत? ओकर हृदयक सन्ताप, भविष्यक जीवन और विशेष कें कोरक नेनाक प्रसंग मे सोचि ओ प्रायः उन्मत्त भए जाइत तँ छल किन्तु ओ करितैक की? एहि गुणधुन मे पड़ि ओ प्रायः पीड़ित भए जाइत छल। तदुपरान्त यद्यपि नरेश और ओकर स्त्री बड़ अह्लाद सँ ओकरा रखने छलैक किन्तु ओ सतत् ओकरा लोकनिक ओतए किएक रहतैक? एवंक्रमें विचारि अहिल्या किएक नहि अपना जीविकाक हेतु कोनो ओगार करैत। अतएव ओ नरेश और ओकरा स्त्री सँ परामर्श कए अपन पूर्वक प्रशंसक लोकनिक ओतए एहि हेतु जाएब नीक बुझलक। आखिर ओ जेवे कहिआ करैत? हित मित्र आदि तँ विपत्तिएक हेतु रहैत अछि। किएक ने ओ ओकरा लोकनिक एक बेर

परीक्षा लए अपन भाग्य कें अजमौत। एहि तरहें सोचि अहिल्या सर्वप्रथम अपन एक गोट प्रशंसकक ओतए गेल जे बड़ प्रभावशाली व्यक्ति छलाह। ओ अहिल्याक रूप, गुण और कला सँ प्रभावित भए ओकरा सोनाक तगमा देने रहथिन तथा हुनकर दरबाजा अहिल्याक हेतु सतत् फुजले रहैत छल। अहिल्या हुनका ओतए गेल तथा हुनकर नोकर ओकरा चीन्हि ओकर हाल-चाल, कुशल-क्षेम पुछए लागल। ओकरा अहिल्याक वर्त्तमान स्थिति पर खेद भेलैक तथा ओ अपन मालिक कें अहिल्याक ओतए ऐबाक तथा ओकर वर्त्तमान परिस्थितिक प्रसंग मे अवगत तँ करौलक किन्तु हृदय मे हृदय कें चिन्हैत छैक! रूपक प्यास कें हृदयक कोन प्रयोजन? ओ तँ अहिल्याक मदमस्त यौवन एवं रूपक स्वार्थी छल। ओकरा अहिल्या सँ कोन मोह छलैक? व्यर्थ ओकरा सँ भेंट कए अपन अमुल्य समय कें ओ किएक वितबैत? एकर अतिरिक्त अतीत सँ अपन वर्त्तमान कें उलझेबाक ओकरा आवश्यकते कोन छलैक जे ओकरा सँ गप करैत। एहि तरहें सोचि ओ ओकरा खिड़की सँ देखि आदेशपालक द्वारा ओतए सँ चलि जेबाक आदेश देल। अहिल्या कें तँ एहि हेतु ने तँ विषाद छलैक आ ने ओकरा कोनो टा चिन्ते छल। किएक तँ ओकर हृदय तँ आगि मे जड़ि कुन्दन भए गेल छलैक। जगतक प्रपञ्च मे पड़िए कें तँ ओकर ई दुर्गति भेलैक। ओकरा मान-अपमान आदिक कोन चिन्ता। उजड़ल उपवन मे जँ कोनो फूल फुलहितहुँ छैक तँ ओकरा देखनिहार के रहैछ?

ओहि व्यक्तिक ओतए सँ निराश ओ हताश भए ओ आपस आबि एक अन्य पैघ प्रशंसकक ओतए गेल। ओ अहिल्याक गुणक बड़ प्रशंसक छलाह। सांस्कृतिक कार्यक्रम मे जखन रंग-मञ्च पर ओ उतरैत छल तँ ओकर अभिनय सँ ओ बड़ प्रभावित होइत छलाह। हुनका द्वारा प्रदत्त ओकरा कए गोट प्रशंसापत्र सेहो छलैक। किन्तु ओ तँ ओहि अहिल्याक प्रशंसक छलाह जकरा रूप, यौवन और गुण छलैक। ऐहि सभ सँ हीन अहिल्या नारी नहि एक गोट अबला छल जे असहाय बनि हुनका कृपाक कांक्षी सँ ओतए तँ आएल किन्तु हुनका एतेक पलखति कतए जे ओ ओकरा सँ गप कए ओकर दुख-दर्द कें सुनए? हुनका तँ अपन राग और रभस सँ जँ अवकाश रहैत तखन ने ओ ककरहु सँ गप करितथि। हुनका लोकनि कें एतेक समय कतए छलनि जे कोनो असहाय अबलाक दुख सुनितथि? अहिल्या हुनका ओतए भोर सँ बारह बजे दिन धरि बैसल तँ रहल किन्तु ओकर ओतए प्रयोजने कथिक छलैक? एहि जगत मे ककरा अपन समस्या नहि छैक? ओ तँ सुखक संगी छलाह। दीन-हीन सँ हुनका कोन काज? मनोरञ्जनक निमित्त

जें अहिल्या एक मोट नारी छल तें रूप, यौवन और वैभव सँ ओ हीन छल। अतएव ओकरा ओ बजाए अपन समय कें किएक नष्ट करितथि ?

अहिल्या आशा सँ हुनकर विशाल भवनक एक कोन मे ठाढ़ि रहल तथा ओकरा विश्वास छलैक जे ओ अपन उदारता, परदुख-कातरता और ओकर पूर्वक सम्बन्ध कें मन पारि अवश्य ओकरा कृतार्थ करितथिन किन्तु कपार तें ओकर संगहि छलैक ! ओ अपन चमकैत मोटर पर चढ़ि बिदाह भेलाह और अहिल्या साहस कए गाड़ी लग ठाढ़ि भए गेल। अहिल्या कें देखितहिं ओ बरसि पड़लाह। ओ अहिल्या कें उन्नट कथा कहि ओकरा अन्तःकरण कें तें अघारवे कएलथिन संगहि अदृष्टक प्रबलताक बोध सेहो करौलथिन और अहिल्या अपन मुरी कें झुकाए हुनकर सभ टा गंजन कें सहैत रहल। ओ अकचकाए लागल जे लोक एना किएक बदलि जाइत छैक। किन्तु एहि मे हुनकर कोन अपराध ? केवल मूर्ख आ मुते तें अपन सिद्धान्त पर थीर रहैत अछि और एहु मे पैघ लोक ! लोक कोनो तरकीब सँ भने बाओल मे सँ तेल बाहर निकालि लिए, किओ प्यासल भने मृगमरीचिकाक जल सँ अपन प्यास कें शान्त कए लिए तथा किओ भने पृथ्वी पर भ्रमण करैत खढ़ियाक सींघ कें लए आनए किन्तु ओ कोनो पुरुषक चित्त कें किन्हु ने बदलि सकैछ।

ओतए सँ अहिल्या अपन कर्म पर खौंझाइत डेरा आएल तथा खटमारि कें बिछाओन पर पड़ि रहल। ओकरा अन्तःकरणक विषादक व्यथा और अधिक तीव्र भए गेलैक। ओ लोकक स्वार्थपूर्ण आचरण पर क्षुब्ध छल। जे कहिओ ओकरा आनन मे चानक आभा, नेत्र मे वारुणिक धार और अङ्ग मे बिजुलीक चकमक कें देखि चोन्हिआ गेल छल से ओकरा एना तिरस्कार करतैक तथा ओकर रूप, गुण आदि कें एहि तरहें बिसरतैक ? किन्तु मनुष्यक समस्त कार्यक आधार तें स्वार्थ थिकैक। ओकरा सँ ककरा कोन स्वार्थक पूर्ति होएतैक जे लोक ओकरा प्रति अपन स्नेह सद्भावना और करुणा कें उझिलैत ? ओ तें नरकक एक गन्द कीड़ा छल जकरा निमित्त दुःख, शोक, ग्लानि और उपहास छलैक। जें ओकर भाग्य नीक रहितैक तें एहेन हालते किएक रहितैक ! एहि तरहें सोचि अहिल्या कानए लागलि। ओकर करुण क्रन्दन कें सुनि नरेशक पत्नी दौड़लि तथा ओकरा आँखिक नोर कें अपन आँचरक कोर सँ पोछैत बाजए लागलि—"दाइ ! अहाँ एना किएक अधीर होइत छी ? अहाँ कें कथिक अभाव अछि ? सोन सन नेना भगवान कोर मे देने छथि। देखू तें कोना ई टुक-टुक तकैत अछि। एकर मुँह देखि कें संतोष करू। लोक की नैहर मे नहि रहैत अछि ? अहाँ कें की भाय

कोनो तकलीफ दैत छथि और जँ तकलीफ होइतहुँ अछि तँ ओक केँ कतहु नैहरक दुःख अखड़तैक अछि ! अहाँ केँ हमर सपत थिक। अहाँ कानू नहि।" एवंक्रमेँ अहिल्या केँ नरेशक स्त्री परिबोधि ओकर हाथ पकड़ि केँ खीचैत अपना संग भनसा घर लए गेल तथा भाउज ननदिक हास-परिहास द्वारा ओकर सन्ताप केँ हरि, ओकर मनक मलीनता केँ भगाए ओकर नारी-हृदयक कोमल पुलक केँ जगमगौलक और ओ प्रसन्न भए बाजलि—"ई मौगी बड़ छलकटि अछि जे भैया केँ मोहि ओकर मन केँ सतत् अपनहि अलक मे लटकौने रहैत अछि"। एवंक्रमेँ कहि अहिल्या अपन स्नेहक थापर सँ ओकर पुष्ट गाल केँ थपथपाबए लागल और नरेशक स्त्री अहिल्या केँ अपन जीव और प्राण सन प्रिय बुझलक।

नरेश और ओकर पत्नीक स्नेह, सद्भावना और विचार अहिल्या केँ अद्भुत तँ लगितहि छल संगहि ओकरा इहो प्रतीत भए रहल छलैक जे हृदय अभावग्रस्तक ओतए नुकाएल रहैत अछि जकरा सुख और सम्पत्ति सँ बैर छैक। गरीबक हित मे बहाएल एक बुँद नोर कोना सरिता बनि शोक और सन्ताप केँ बहेबाक निमित्त उमड़ि अबैत अछि एकर भान ओकरा तँ प्रत्यक्षे भेलैक। ओकरा विश्वास भेलैक जे कलियुगक कंगाल कल्कि अवतार थिक जकरा कोप मे सुख, सम्पत्ति, मिथ्या आडम्बर और प्रभुत्व एक ने एक दिन अवश्य बड़ि जाएत। एवंक्रमेँ सोचि ओ अपन एक गोट प्राध्यापकक ओतए गेल जे ओकर गुणक ग्राही छलाह।

प्राध्यापक महोदय पहिने तँ ओकरा नहि चीन्हलथिन किन्तु परिचय देला पर ओ ओकरा देखि विह्वल भए बजलाह—"तोँ एना किएक लगैत छह ? की करैत छह ?" आदि जिज्ञासापूर्ण प्रश्न केँ पुछि एवं वर्त्तमान परिस्थिति सँ अवगत भए ओकर व्यथा सँ व्याप्ति भए बजलाह—'हे बेटी तोँ चिन्ता जनु करह। भगवान बड़ पैघ छथि। देखह हुनकर की इच्छा छनि। हम विश्वास दैत छिऔह जे हम अपना शक्ति भरि तोरा निमित्त प्रयास करबह। फलाफल तँईश्वराधीनक वस्तु थिक। तोँ जाह पुनि अबिहए"। एवंक्रमेँ कहि प्राध्यापक अहिल्या केँ आश्वासन दए अपन काज मे निरत भेलाह तथा ओ अपना हृदय मे हर्ष, कृतज्ञताक भार और करुणा केँ लए डेरा आएल जतए नरेशक पत्नी ओकर प्रतीक्षा मे अधीर भए ऐबाक बाट तकैत छल।

अहिल्या केँ देखितहि नरेशक पत्नी अह्लादैत बाजलि—"की दाई। बड़ देरी भेलनि ? एना ई किएक भूखे-पियासे बौआएल फिड़ैत छथि ? ननदि और भाउज

मिलि कें अधहे पेट खाएब और सुख सँ रहब। ककरहु पामीजी कथिक ? एक तँ मरीवे मारि थिक और ताहु पर दोसराक पामीजी ! छोड़बु टण्ट-घण्ट। अपने घर मे दुख काटि कें रहब आ भूखले सुतब। एहि लेल लोकक खुशामद कथिक ? एवंक्रमें नरेशक स्त्री कहि अहिल्या कें भोजन परोसि कए देल और ओकरा मुखमण्डल पर मोती सन चमकैत घामक बुन्द कें ओ बियनिक बसात सँ भगेबाक चेष्टा करए तँ लागल किन्तु अहिल्या ओकरा हाथक बियनि कें जबरदस्ती छीनि फेकि देल तथा ओकरा संग हँसी-चौल करए लागलि। एवंक्रमें हँसी-ठठा करैत एवं अपन अत्यास सँ ओकरा अत्यासैत ननदि और भाउज दुहु मिलि एके थारी मे भोजन करैत परस्पर स्नेह कें बाँटए लागलि। एहि अभ्यन्तर नरेश आएल तथा अहिल्या कें स्नेहपूर्ण वाणी मे कहए लागल—"बहिन ! तोरा कोनो तकलीफ तँ नहि होइत छह ? तोहर भाउज तँ अल्हड़ छह। जँ कोनो अनटोटल कथा ओकरा मुँह सँ बजाए जाइक तँ तों ओकरा आतिख नहि मनियहक। नरेशक पत्नी अपन पतिक कथा पर आलापैत बाजलि—"तँ दाइक भाइए कोन सोहनगर आ पनिमक छथिन जे भाव पर नितरैतीह। जँ भाउज अपाटकि और अल्हड़ तँ भाय अकट्ठी और अपरोजक और जँ भाउज अकरी आ अकानि तँ भाव अकाश काँकोड़ और अगिलकण्ठ।

पति-पत्नीक उपर्युक्त हास-परिहासक वचन कें सुनि अहिल्या अपन भायक पक्ष लए बाजलि—"ऐं गै मौगी ! तोरा एतेक टा सपरतिभ जे तों हमरा भाय कें दुसबैए ? तों हाथी पर चढ़ि गौर पुजने छलैह जे तोरा हमरा भैया सँ विवाह भेलौह और तों इतराइत छैह।" अहिल्याक पक्षपातपूर्ण उक्ति कें सुनि नरेशक स्त्री बाजलि—"हँ ! हँ ! किएक नहि, आखिर बहिन तँ भायएक होइछ और भाउज तँ परक बेटी थिक। किन्तु दाइ कनेक अपन भायक मुँह और हमर तरुवाक मिलान तँ कए लेबु।" एवंक्रमें कहि ओ ओतए सँ हँसैत पड़ाएल और अहिल्या ओकरा पकड़बाक हेतु दौड़लि तथा घरक भीतर ओकरा पकड़ि दुहु रमणी परस्पर क्रीड़ा मे रत भए एक दोसराक हृदय सँ हृदय कें, बाँहि सँ बाँहि कें, कुच सँ कुच कें मिलाए, अधर सँ अधर कें खण्डन करए लागलि और नरेश बाहर हँसैत ठाढ़ भए अपन स्त्री कें दुसैत एवं दोहमति अपन बहिन कें परबोधए लागल।

# एगारहम

अहिल्याक अभगदशा के देखि प्राध्यापक के बड़ दुख भेलनि। ओ ओकर विगत समृद्धि, यश, प्रतिष्ठा, रूप, गुण और बुद्धिक तीव्रता के स्मरण कए विह्वल भए गेलाह तथा ओकरा कतहु नियुक्त करैबाक हेतु ओ यत्न करए तँ लगलाह किन्तु ओ अपन उदारता, लोकप्रियता और सज्जनताक लेल प्रसिद्ध छलाह जे आजुक जगत मे अभिशाप होइछ तेँ किओ हुनकर निवेदन पर ध्यानो तक नहि देलक तथा उनटे सभ हुनकर उपहास करए लागल किन्तु जलद जलदान की ककरहु कहला पर करैत अछि तथा वृक्ष की अपन छाह सूझि-बूझि कें दैतछैक। ओकर तँ स्वभावे एहेन होइछ। प्राध्यापकक उदारता, सज्जनता तथा अपन छात्रक प्रति स्वाभाविक ममता सर्वविदित छल तथा ओ ओकरा हेतु शक्ति भरि प्रयास करए लगलाह। अहिल्या पुनः जखन हुनका सँ भेंट कएलक तँ ओ प्रसन्न भए बजलाह—"हे बेटी ! तों तँ बड़ चरफरि छलह तखन तोरा किएक एतेक झंझट होइत छह ! तों तँ जनैत छह जे कोनों साधारण काजो आब बिनु लागे नहि होइत छैक तथा जकरा जेहेन लाग रहैछ ओकर काज ततेक शीघ्र सुतरैत छैक तथापि तोरा हेतु हम किछु प्रयास तँ कएल अछि। एक गोट विद्यालय मे शिक्षिकाक पद रिक्त छैक ! तों साक्षात्कारक हेतु जाह। हम तोरा प्रसंग मे विद्यालयक प्रधान शिक्षिका कें कहलिऐक अछि। हमरा विश्वास अछि ओ तोरा अवश्य सहायता करतीह।

अहिल्या कें प्राध्यापक एहि तरहें कहि अपना ओतए सँ विदाह कएलनि और ओ पुनः ओहि गुण-धुन मे निमग्न भए सोचए लगलाह लोकक भाग्य, भविष्य और आचरणक प्रसंग मे। एक दिन छल जखन ओकरो अपना पर गुमान छलैक। पटनाक कोन कथा समस्त प्रान्त मे ओकर पूछ छलैक। लोक ओकरा देखबाक लेल तरसैत छल और ओ दुर्लभ दर्शना अपना भाग्य पर ऐंठैत छल, अपन रूप और यौवन पर इतराइत छल और लोक ओकरा पर इर्ष्या करैत छल किन्तु आइ ओएह

तँ थिक। किओ ओकरा दिशि तकँओ वाला तँ नहि अछि ! ईएह थीक जीवन, यौवन और रूप जे तोड़ल फूल सन झमान भए जाइछ तथा भोरक ओस सन विलीन होइछ।

अहिल्या प्राध्यापकक आदेशानुसार ओहि विद्यालय मे साक्षात्कारक निमित्त गेल जतए ओ आइ सँ लगभग पन्दरह वर्ष पूर्व शिक्षिकाक रूप मे काज कएने छलि। प्रधान शिक्षिका ओकरा चिन्हि गेलैक तथा ओकरा अपन कार्यालय मे लए आए ओकर परिस्थिति सँ अवगत भए ओकरा प्रति अपन स्नेह कें देखौलक पो स्वतः प्रेमानिल मे दग्ध भए अपना प्रियतमक द्वारा उपेक्षित अपन जीवन कें वितवैत छल। ओकरा अन्तःकरण मे राग, मन मे पीड़ा और इच्छा मे कामना छलैक। अतएव ओ अहिल्याक नारी हृदयक रहस्य कें बूझि ओकरा प्रति ओ सहानुभूतिपूर्वक विचार करबाक अनुमोदन तँ देलकैक किन्तु भाग्य तँ सर्वोपरि होइछ। साक्षात्कारक आन-आन अधिकारी शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभवक अनुरूप ओकर रूप और यौवन कें नहि देखि ओकर नियुक्तिक विरोध कएलकैक तथा ओकरा बदला मे एक गोट मुग्धाक नियुक्ति भेल जकरा रूप और गुण छलैक।

अहिल्या, जकरा जीवन मे सतत् असफलते टा उपलब्ध भेलैक ओहि साक्षात्कार सँ बड़ मर्माहत भेल तथा ओ अपन जीवन सँ हताश भए विद्यालय सँ सोझे गोलघरक प्रांगण मे आबि ओही बेंच पर बैसल जकरा पर ओ पन्दरह वर्ष पूर्व मेदिनीकसंग बैसलछल। कोना मेदिनी ओकरा भेटलैक तथा कोना ओ ओकर प्रपंच मे पड़ि अपन हँसैत घर कें डाहि अपन प्रफुल्लित सुमन कें कोर सँ फेंकि ओ ओकरा संग राँची कें विदाह भेल। सभ किछु ओकरा समक्ष एकाएक कए ऐलैक। राँचीक जीवन, मेदिनीक प्रलाप और ओकरा द्वारा ओकर तिरस्कार आदि की ओकरा अपन आन्तरिक वस्तु छल ? एक दिशि नारीक जीवन और दोसर दिशि अदृष्टक दोष छलैक जे ओकरा कतहु कें नै रखलकैक ? की ओकर पति रामानन्द ओकरा किन्नहु अपनेतैक ? की सुमन किन्नहु ओकरा माँ कहि सम्बोधन करतैक ? ओ कतए ओकरा लोकनि कें राखलकैक जे आब ओकरा लोकनिक स्मरण ओकरा होइत छैक। सुनल जाइछ जे रामानन्द कें बुझना गेलैक जे ओ मरि गेल तदर्थ ओ ओकर क्रिया-कर्म कए दोसर विवाह कए लेलक और सुमन कें ओहि मायक जीवन आर मरन सँ कोन सम्बन्ध जे लालन-पालनक कोन कथा अभिशाप भए भरि जन्म ओकरा करेज कें सालैत रहतैक। एहि तरहें सोचि अहिल्या उन्मत्त भए उठल और गंगाकात कें विदाह तँ भेल किन्तु नेना मन पड़लैक और स्मरण भेलैक माय और

भाउजक नैसर्गिक स्नेह जकरा पावि ओ नेहाल भए गेल छल। अतएव ओ अछताए-पछताए डेरा कें विदाह भेल।

नरेशक स्त्री बड़ उत्सुकता सँ अहिल्याक बाट तकैत छल तथा जेना-जेना ओकरा सेवा मे विलम्ब होइत छलैक तहिना ओकरा हृदयक धरकन बढ़ैत छल। ओ अहिल्याक सेवाक आहट पावि सत्वर केवार लग दौड़ि आयलि तथा केवार कें फोलि बाजलि—"दाइ बड़ निर्दयी छथि। की ई नहि जनैत छथिन जे हिनका बेगैर हमरा एको रत्ती कल नहि पड़ैत अछि? तखन एतेक देरी किएल करैत छथिन?

नरेशक पत्नीक वाणी कें सूनि अहिल्या अन्यमनस्क भए उत्तर दैत बाजलि- "हम कतेक दिन धरि अहाँक पाहुन रहब? जीवनक प्रत्येक क्षण मे दुःख आ सुख अबैत छैक। हमरहु जीवन मे सुखक घड़ी आएल। भाय और भाउजक स्नेह हमरा प्राप्त भेल जकर हम कल्पनो ने कएने रहिऐक। किन्तु की ई दिन सतत् एहिना रहतैक वा एकर अन्तो हेतैक! दिनक पश्चात् राति और रातिक उपरान्त दिन तँ अबितहि छैक। मेघ की उपवन आ की ऊसर भूमि सर्वत्र जल तँ बरसबैत अछि किन्तु उपवन मे तँ लाल-लाल फूल फुलाएल अछि और ऊसर जमीन मे घास उगैत छैक। नरकेटि कें कतबो पटेला सँ की ओहि सँ चीन बहराएत?

अहिल्याक निराशापूर्ण वाणी कें सूनि नरेशक पत्नी अत्यन्त दुखी भए बाजलि "ऐ दाइ! राति रहौक वा दिन हमरा ताहि सँ की? हम हिनका कतहु ने जाए देबनि। हमरा एहि संसार मे दोसर अछिए के? बड़ सेहन्ता होइत छल जखन ककरहु ननदि अबैत छलैक। हम हिनका भाय कें दुषैत छलिएनि जे कतहु कोनो बहिन की नहि अछि। और ओ हमरा सतत् परबोधैत छलाह जे ओ हमरा ननदि कें अनताह। भगवानक इच्छा। हमर ननदि हमरा ओतए आबि कें हमरा जीवन कें सनाथ कएलनि। ऐ दाइ! लोकक ननदि उकट्ठी और उकठाहि होइत छैक जकरा सँ भाउज अकच्छ रहैत अछि किन्तु हमर ननदि तेहेन ने सहठुल और सहमिल्लु छथि जे अपन भाउज कें अपन स्नेहक वर्षा सँ सतत् भिजौने रहैत छथि। के अभागलि अपन एहेन ननदि सँ पृथक रहत? ई कहि ओकरा आँखि सँ नोर् बहए लागल। अहिल्या सेहो कानए तँ लागलि किन्तु ओकर अन्तःकरण कहैत छलैक जे कोमल कमलक डाँटक सूत सँ कतहु हाथी बान्हल गेल अछि? सिरीसक सुकुमार फूलक पत्र सँ कतहु हीरा छेदल गेल अछि तथा एक बूँद मधु सँ कतहु महासागर मधुर भेल अछि?

आलाप-प्रलाप मे जेना-जेना समय बीतैत गेल तहिना अहिल्या के चिन्ता औरो अधिक होमय लगलैक। ओकरा अपन भविष्य अन्हार बुझना गेलैक। ओ अपना जीवन मे कोन सुखक उपयोग नहि कएलक? ओ की नहि देखलक तथा ओकरा आब और की देखबाक बाँकी छैक? एहि तरहेँ विचार मे निमग्न भए ओकरा समक्ष ओकर जीवनक समस्त घटना कालचक्रसन सम्मुख आबि अपन स्मृति सँ ओकरा जमौलक। निर्मलीक इतराइत जीवन, उत्फुल्ल यौवन और पतंग सन उड़ैत अरमान ओकरा मन पड़लैक। कोना ओ निर्दोष रामानन्द के धोखा दए ओकरा संग विश्वासघात कएने छल तथा ओ ओहि नरकक कीड़ाक मोह-जाल मे फसि ओकर अरमान के चकुपि अपन जीवन के नव मोर देबाक निमित्त उद्यत भेल तँ ओकरा सुशीला कोना कहने छलीह आदि। सम्पूर्ण घटना क्रमशः ओकरा मन पड़लैक। कतेक मार्मिक, कठोर और सत्य छल सुशीलाक ओ वाणी—"तों जाहि विषक वृक्ष के रोपैत छह ओहि मे विषक फूल फुलेतह, फड़ फड़तह और ओही वृक्षक छाह विष बनि तोरा तरसेतह, तोहर अङ्ग-प्रत्यङ्ग के अपन ताप सँ दग्ध करतह और तों जीवन सँ निराश एवं निराश्रित भए अन्त मे अपन जीवनहु के गमेबह"—की सत्य प्रतीत होयत? ओहि वाणीक केवल अन्तिमे वाक्य टा तँ अपूर्ण अछि।

वस्तुतः ओकरा जीवन मे कोन सार बाँचल छलैक? ओकर नेना के के मान और सम्मान देतैक? ओकरा संसार बापक नाम पुछतैक तँ ओ की उत्तर देतैक? एहि तरहक उलझन मे पड़ि ओ विषाद सँ उत्पीड़ित छल। एहि अनन्तर नरेश ओतए आबि ओकरा सँ साक्षात्कारक प्रसंग मे पुछलक। अहिल्या जे पूर्ण हताश भए गेल छल नरेश सँ अपन असफलता के अवगत नहि कराए ओकरा बहटारि देल तथा अपन कार्यक्रमक प्रसंग मे अपन मन के दृढ़ बनावए लागल।

आहिल्या के ने तँ रामानन्दक, ने मेदिनीक आ ने सुमनक चिन्ता छलैक ने ओ ओकरा लोकनि के देखबाक उत्सुके छल। जँ ओकरा अतःकारण मे कनेको स्नेह ककरहु प्रति छल तँ ओ नरेश और ओकर पत्नीक प्रति छल जे ओकर जीवन में आशा बनि आएल और अपन स्नेह सरिताक प्रवाह मे ओकरा बहाए नीरस जीवन स सरसताक किनार मे अनलक किन्तु ओकरा लोकनिक हेतु ओ की कए सकतैक? ओकर ऋण सँ उऋण होअब की ओकरा सँ होयत? ओकर प्रेम तँ एकदिसाह अछि। ओकरा कोन अपेक्षा छैक ओकरा सँ? ई सभो सब प्रश्न स्वतः ओकरा

अन्तःकरण मे उठैत छल और स्वतः ओकर निराकरणो ओताहि भए जाइत तँ छलैक किन्तु ओकरा अपना पश्चाताप होमए लागल तथा ओ धन और करुणाक चिंता मे निरत रहि मरण सँ विमुख भेल। स्त्रीक मन जे विषय दिशि प्रभावित होइछ कठिन पदार्थ थिक जे मारनहु सँ ने मरैत अछि। ओकर आचरण तँ पक्षी सन होइत अछि जे काल-व्याध द्वारा बिछाओल जाल केँ नहि देखि केवल चारे टा केँ देखैत अछि। पक्षीक लेल तँ व्याध तखनहि प्राण लेनहार भेल जखन ओकरा अन्डा मे पाँखि भेलैक तथा ओकर नाम फरेबा (पक्षी) पड़ल। तृष्णाक संगहि ओकरा दुखदायी व्याधिओ प्राप्त भेलैक जे ओकरा मुक्तिए टा सुझैत छैक व्याध नहि। ओकरा लोभ छैक तँ ओ चारा दैत अछि, ओकरा सामर्थ्यक गर्व अछि तँ ओ ओकर मारए चाहैछ तथा ओ निश्चिन्त रहैछ तेँ ओ प्रक्षिप्त भए अबैछ। एहि मे व्याधक कोन दोष ? दोष तँ स्वतः ओकरे थिक।

एहि तरहेँ विचारक शृंखला मे निमग्न भए अहिल्या निन पड़ि फोंफ काढए लागलि तथा ओकर नेना ओकरा छाती सँ ओकरा आँचरक दूध पीबए लागल। सम्भवतः ओकरा आगाँक कार्यक्रमक किछु भान होय तेँ प्रायः ओ उचटि-उचटि केँ कानए लागैत छल और अहिल्या ओकर कानब, दुनियाक उपहास और उपेक्षा आदि केँ बिसरि स्वप्न लोक मे बिचरब लागलि जतए शीतलता, सुख, सम्मान आर जीवनक सार छलैक।

भोर भेल। अहिल्या आने दिन सन उठल। नित्यक्रिया सँ निवृत्त भए गंगा स्नान कएलक तथा जग-जननी कालीक पूजा कएलक। पूजा कए ओ नरेश और ओकर पत्नी केँ भगवतीक प्रसाद दए बाजलि—"भौजी हम भगवती सँ भातिज मँगलिऐक अछि और भगवती प्रसन्न भए हमरा बरदान देलनि अछि। लिअह प्रसाद।

नरेशक पत्नी केँ अहिल्याक ई बाणी साक्षात् भगवतिएक बाणी बूझि पड़लैक। ओ प्रसाद लए अहिल्याक पायर छूबि प्रणाम कएलक तथा ओकर नारीक हृदय मे मातृत्वक कोमल भावना सजग भए गेलैक। करुणा हर्षक संग मिलि ओकरा अधर केँ फड़काबए तथा अंग केँ रंजित करए लागल। ओकर सहनशीलता और त्यागक भावना नारीकशाश्वत और विराट रूप केँ और अधिक व्यापक बनौलक जकरा द्वारा नारी सृजन, पालन और कल्याणक अनुपम गुण सँ समन्वित होइछ। ओ भावी

जीवनक जननी बनबाक अहिल्याक आशीर्वाद एवं निःस्वार्थ प्रेम सँ ओतप्रोत तँ छल किन्तु अहिल्या ! ओकर मातृत्व, स्त्रीत्व और जीवन कोम्हर जेतैक तकर तँ ओकरा कनेको टा शंका नहि छलैक।

भानस-भात भेल। अहिल्या आने दिन सन भोजन कएलक तथा नरेश कें कहए लागलहि—भात ! बहिन तँ दुरखेलिन थिक जकरा भायक मोटरिक तँ आश रहैत छैक किन्तु ओकर सम्पत्ति मे ओकरा कोनहुटा अधिकार नहि रहैछ। तदुपरान्त भायक ओतए आजीवन बहिन कें रहब सेहो तँ ठीक नहि होइछ जे परक सम्पत्ति थिक। नैहर मे बेसी दिनै रहला सँ नारी कें कलंकक टीको लगैत छैक।

अहिल्याक उद्वेगक कथा कें सूनि नरेश व्यथित भए बाजल—"हे बहिन ! आइ अहाँ एना किएक बाजैत छिऐक ! की निर्धन कें भाय बनबाक अधिकार नहि छैक ? की बहिन-भायक सम्बन्धी मे सम्पत्तिक काज पड़ैत छैक ? हे बहिन ! जँ जगत मध्य भाय-बहिनक पवित्र-पावन निःस्वार्थ प्रेम नहि रहैत तँ जगत सँ सत्य लोप भए जाइत और सम्पूर्ण जगत मे अनाचारक साम्राज्य प्रसारित होइत। केवल एहि मे तँ सत्य, सौंदर्य और प्रेम विराजमान छैक और बाँकी सभटा तँ बढ़हक चार थिकैक जे कनेको वर्षा भेल कि चुवए लागल। अहाँ एना नहि बाजू। हमर भागिन जखन पैघ होयत, पढ़ि लिखि कें विद्वान होयत तँ ओ अपनहि अहाँ कें हमरा ओतए सँ लए जाएत।

नरेशक कथा अहिल्याक नारी—हृदयक कोमल भावना कें जगाए ओकरा अन्तःकरणकें झंकृत तँ कएलक किन्तु केहेन भोथर कलम सँ विधाता ओकर अदृष्टि कें लिखलथिन। हुनकर लिखल लेख कें के पलटतैक ? लोक सोचैत तँ किछु अछि और होयत छैक किछु आने। अहिल्यो तँ अपना भरि नीके सोचने छल किन्तु भेलैक की ? होयत छैक किछु आने। अहिल्यो तँ अपना भरि नीके सोचने छल किन्तु भेलैक की ? के जनैत अछि ओकर नेना कें की होयतैक ? समाज तँ ओकरा कलंकी बुझि निन्देक दृष्टियें देखतैक। जकरा बापोटाक ठर-ठेकान नहि छैक ओकरा जीविए कें की हेतैक ? ओ तँ नरकक कीड़ा भए नरक मे पड़ल रहतैक जकरा हेतु नरकक भोग तँ छैकेक। किओ ओकरा छोड़ि ओहि नरक मे छैक नरकक सन्ताप सहबाक लेल ? एहि तरहें ओ विचार मे लीन भए सोचितहि छल कि नरेशक पत्नी नेना कें तेल-काजर कए ओकरा ओतए नेने आएल। नेना बिहुसैत ओकरा कोर सँ मायक

कोर मे हुलसि आएल तथा अहिल्या के प्रतीत भेलैक जे ओ ओकरा कहैत होय जे गति मायक सएह गति तें बेटोक ।

दिन बीतल । भगवान भास्कर दिन भरि जगतक जाल, प्रपञ्च, स्वार्थ, मोह और लोभ के देखि हताश भए अपन समस्त प्रकाश के अपना मे समेटि समुद्र मे डूबवाक निमित्त उद्यत छलाह । अहिल्या के एहि सँ नीक घड़ी और अवसर दोसर कोन भेटतैक । नरेशक पत्नी घर सँ कतहु आन आँगन गेल छल । अहिल्या अपन सुतले नेना के कोर मे उठौलक आ द्रुत गति सँ घर सं बाहर भेल तथा दरभंगा कोठीक काली मंदिर मे पहुँचल । भगवती के प्रणाम कयलक । अपना अतीतक कर्मक हेतु ओ पश्चात्ताप कएलक और ओहि पापक प्रायश्चित करवाक हेतु माँ जाह्नवी सँ प्रार्थना कएलक ।

ओ अपन सकरुण नेत्र सँ जगतक लोक के, नील गगन के, अपन अतीत के और वर्त्तमान के एकबेरि वड़ स्नेह सँ निहारलक और अपन नेना के कोर मे लए गंगाक स्तुति करए लागल जे ओकरा जीवन मे गति देलकैक आइ ओ ओकरहि तें अपन जीवन सुपुर्द करत ।

नरेशक पत्नी घर आएल । अहिल्या और नेना के नहि देखि भावी दुख सँ दुखी भए ओ अपन पति के एहि प्रसंगक सूचना दए स्वयः दरभंगा कोठी के तें दौड़लि किन्तु जावत ओ ओतए पहुँचल तावतहि अहिल्या अपन नेनाक संगहि गंगा मे कूदि झम्प लए लेलक । सावन मासक उमड़ल गंगाक उफनैत जलधार ओकरा एक बेर ऊपर फेंकि नरेशक पत्नी के ओकर अन्तिम स्नेहक रूप मे दर्शन करौलक जे वियोगक क्लेश मे अपन छाती पीटि रहल छल । नरेश हताश भए से हो दौड़ल तें ओतए आएल किन्तु ओकर तें तावत मात्र स्मृतिएटा शेष छलैक । ओ कनैत अपन बहिन के ओतहि तिलाञ्जलि देलक तथा ओकर आत्माक शान्तिक हेतु श्रद्धापूर्वक श्राद्ध कए बहिनिक भार सँ मुक्त भेल ।